सुख की सरकार
हिमाचल सरकार

गिरिराज

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2024-2026
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/ बागबानी/विकास - 5, आस्था/संस्कृति/ विविध 6/7, साहित्य -8, महिला/बाल जगत /स्वास्थ्य -9, पहाड़ी पृष्ठ-10

वर्ष : 46 अंक : 48 शिमला, 28 अगस्त–3 सितम्बर 2024 | हर बुधवार को प्रकाशित | मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये | वार्षिक 250 रुपये | आजीवन 2500 रुपये

प्रदेश में लागू होगी मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों आयोजित प्रदेश मंत्रिमंडल की बैठक की अध्यक्षता की। मंत्रिमंडल ने 'मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना' लागू करने का निर्णय लिया। इस योजना का उद्देश्य विधवाओं, निराश्रित महिलाओं, तलाकशुदा महिलाओं और दिव्यांग अभिभावकों को अपने बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षा प्रदान करने में सहयोग प्रदान करना है। योजना के अंतर्गत पात्र बच्चों को 18 वर्ष की आयु तक शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रतिमाह एक हजार रुपये का अनुदान प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त योजना के तहत स्नातक, स्नातकोत्तर और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की फीस और छात्रावास व्यय के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू शिमला में मंत्रिमंडल की बैठक की अध्यक्षता करते हुए

बैठक में 'राजीव गांधी स्वरोजगार स्टार्ट-अप योजना-2023' के तहत ई-टैक्सियों की खरीद के लिए 10 प्रतिशत मार्जिन मनी जमा कराने और बैंक द्वारा ऋण की किश्त के वितरण के उपरान्त तीन माह के भीतर 50 प्रतिशत उपदान प्रदान करने को भी मंजूरी दी गई। इस योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए यूको बैंक को ऋण स्वीकृति के लिए नोडल बैंक नामित किया गया है और हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक व कांगड़ा केंद्रीय सहकारी बैंक को प्रैफर्ड बैंक के रूप में नामित किया गया है। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को 7.9 प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया जाएगा। मंत्रिमंडल ने शैक्षणिक वर्ष 2023-24 के दौरान नर्सरी, एलकेजी और यूकेजी में पहले से दाखिल बच्चों के लिए आयु में छः माह की छूट को स्वीकृति प्रदान की। इससे उन्हें पहली कक्षा तक अगली उच्च कक्षाओं में दाखिले की अनुमति मिल सकेगी।

मंत्रिमंडल ने इंस्पेक्टर, जेल अधिकारियों (जेल वॉर्डन से गैर-राजपत्रित रैंक के एक्जिक्यूटिव स्टाफ) और हिमाचल प्रदेश सचिवालय के सुरक्षा गार्डों के लिए हिमाचल पथ परिवहन निगम की बसों में रियायती यात्रा के मासिक शुल्क को 110 से बढ़ाकर 500 रुपये प्रतिमाह करने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने जिला कांगड़ा के डाडासीबा में एक नया उप-मंडल पुलिस कार्यालय व आलमपुर में पुलिस पोस्ट स्थापित करने तथा संसारपुर टैरेस व मोइन पुलिस पोस्ट को पुलिस स्टेशन में स्तरोन्नत करने का निर्णय लिया। मंत्रिमंडल ने इन कार्यालयों के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक पदों के सृजन को भी मंजूरी दी। बैठक में जिला कांगड़ा के देहरा में जल शक्ति विभाग का नया सर्कल खोलने तथा इसके सुचारू संचालन के लिए आवश्यक पद सृजित कर भरने को मंजूरी प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, जिला ऊना के हरोली विधानसभा क्षेत्र के खड्ड में जल शक्ति विभाग का एक नया उप-मण्डल और अनुभाग स्थापित कर आवश्यक पद सृजित कर भरे जाएंगे। जिला ऊना के हरोली क्षेत्र के खड्ड में हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग का एक नया उप-मण्डल खोलने तथा आवश्यक पद सृजित कर भरने को भी मंजूरी प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने शिमला के कोटखाई के गुम्मा क्षेत्र के उबादेश में अग्निशमन चौकी खोलने तथा आवश्यक पद सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की। मंत्रिमण्डल ने जिला सिरमौर (शेष पृष्ठ 11 पर)

मंत्रिमंडलीय निर्णय

- नर्सरी, एलकेजी व यूकेजी में दाखिल बच्चों के लिए आयु में छः माह की छूट
- खड्ड (हरोली) में बनेगा जल शक्ति व लोक निर्माण का उप-मंडल
- उबादेश (कोटखाई) के लिए अग्निशमन चौकी को स्वीकृति
- बिजली परियोजना निवेशकों को रॉयल्टी स्लैब में छूट

प्रत्येक वर्ग के कल्याण के लिए सरकार प्रतिबद्ध : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कहा कि प्रदेश सरकार ने एक नई पहल करते हुए 'मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना' शुरू की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस योजना के लिए सालाना 53.21 करोड़ रुपये की धनराशि आवंटित करेगी। उन्होंने कहा कि योजना का मुख्य उद्देश्य दो विशिष्ट आयु समूहों को सहायता प्रदान करना है। इस योजना के अंतर्गत पात्र महिलाओं और विकलांग माता-पिता को 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण सम्बंधी खर्चों को पूरा करने के लिए एक हजार रुपये का मासिक अनुदान प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि शैक्षणिक और वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण विधवा और परित्यक्त महिलाओं को बच्चों के पालन-पोषण में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस योजना का उद्देश्य पारिवारिक स्तर पर बाल संरक्षण को सुदृढ़ कर बाल शोषण, तस्करी, बाल विवाह और मादक पदार्थों के दुरुपयोग जैसे मुद्दों को रोकना है। उन्होंने कहा कि विकलांगता, बेरोजगारी और गरीबी के दृष्टिगत 'मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना' विकलांग माता-पिता के बच्चों की जरूरतों को भी पूरा करती है। सभी पात्र महिलाएं, बच्चे और व्यक्ति जिनकी पारिवारिक आय एक (शेष पृष्ठ 11 पर)

रियायती यात्रा सुविधा की बहाली के लिए मुख्यमंत्री का आभार

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू से गत दिनों हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा के प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस अधीक्षक संदीप भारद्वाज के नेतृत्व में भेंट की और उन्हें अपनी मांगों से अवगत करवाया। उन्होंने एचआरटीसी की बसों में रियायती यात्रा सुविधा बहाल करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि उनकी सभी जायज मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाएगा और वर्तमान प्रदेश सरकार पुलिस कर्मचारियों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने पुलिस कर्मचारियों की डाइट मनी 210 से बढ़ाकर 1000 रुपये की है, जिसमें पांच गुणा बढ़ोतरी की गई है जोकि राज्य के इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी वृद्धि है। उन्होंने कहा कि पुलिस अधिकारी और कर्मचारी सार्वजनिक सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपनी प्राथमिक जिम्मेदारियों के अलावा वे प्राकृतिक आपदा और संकट के समय में प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस यातायात प्रबंधन, यातायात कानूनों को लागू करने और दुर्घटना होने पर तुरंत मुस्तैदी से कार्य करने के लिए जिम्मेदार हैं और यह सभी तरह की सार्वजनिक सुरक्षा में योगदान देते हैं।

नादौन में 65 करोड़ की लागत से बनेगा खेल परिसर

हमीरपुर में 184 करोड़ की विकासात्मक परियोजनाएं समर्पित

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों जिला हमीरपुर में 184 करोड़ रुपये की लागत की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास किए। उन्होंने नादौन क्षेत्र के खरीड़ी में 65 करोड़ की लागत से बनने वाले अत्याधुनिक बहुद्देश्यीय खेल परिसर की आधारशिला रखी। इस आधुनिक परिसर में 8-लेन वाला स्विमिंग पुल, एक शूटिंग रेंज साथ ही कुश्ती, मुक्केबाजी, कबड्डी, योग, टेबलटेनिस और बैडमिंटन जैसे खेलों के लिए विशेष स्थान समर्पित होंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए राज्य के अन्य भागों में भी इस तरह के बहुद्देश्यीय खेल परिसरों का निर्माण कर रही है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने युवाओं को नशे से दूर रखने और स्वस्थ एवं सक्रिय जीवनशैली के लिए खेलों के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह खेल परिसर युवा प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाने के लिए प्रदेश सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक होगा। मुख्यमंत्री ने 4.50 करोड़ रुपये की लागत से धनपुर (बड़ा) और कृषि परिसर हमीरपुर में दो नए किसान प्रशिक्षण केन्द्रों की आधारशिला रखी। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र किसानों के कौशल विकास और आधुनिक कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूक करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में किसानों को लघु सिंचाई तकनीकों, फसल विविधिकरण और उन्नत सब्जी उत्पादन विधियों जैसे विषयों के बारे में जानकारी प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि इसके अलावा यह केन्द्र कृषि विकास संघों (केवीएस) और किसान उत्पादक समूहों (एफपीओएस) के गठन और सुदृढ़ीकरण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और उन्हें सतत व्यावसायिक इकाइयों में परिवर्तित करेगा। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने 35 करोड़ की लागत से भट्टा-सलौणी- दियोटसिद्ध, 49 करोड़ की लागत से रंगस-कांगू-धनेटा सड़क, 5.67 करोड़ की लागत से गेड़ियां-बड़ैत्तर और 16 करोड़ रुपये की लागत से पनियाला-कश्मीर व धनेटा-बड़सर सड़क में सुदृढ़ीकरण कार्य की आधारशिला रखी। उन्होंने कहा कि इन सड़कों के सुदृढ़ीकरण से क्षेत्र के लोगों को बेहतर परिवहन सुविधाएं सुनिश्चित होंगी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र बड़ा में 1.31 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले उत्कृष्टता केन्द्र का शुभारम्भ किया। इस सुविधा से हमीरपुर जिला व साथ लगते क्षेत्र के किसानों को उच्च गुणवत्तायुक्त सब्जियों के पौधे मिलेंगे। उन्होंने कहा कि प्रगतिशील किसानों के लिए 1400 हेक्टेयर कृषि क्षेत्र में वार्षिक 3.50 लाख पौधों का उत्पादन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ग्रामीण (शेष पृष्ठ 11 पर)

गरीबों को योजनाओं के लाभ सुनिश्चित करेगी सरकार

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने जोगिंद्रा सहकारी बैंक के 100 वर्ष पूर्ण होने पर सोलन में गत दिनों आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लिया और बैंक के नए 'लोगो' का अनावरण किया। उन्होंने 7.50 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित बैंक के नए भवन को जनता को समर्पित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जोगिंद्रा बैंक का टर्नओवर दो हजार करोड़ रुपये होने पर बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी और कहा कि किसी भी संस्था के कर्मचारी उसकी रीढ़ होते हैं। उन्होंने कहा कि बैंक का कुल एनपीए आठ प्रतिशत से घटकर तीन प्रतिशत रह गया है। उन्होंने जोगिंद्रा बैंक के कर्मचारियों की सराहना करते हुए कहा कि बैंक का डिपोजिट 1400 करोड़ हो गया है लेकिन बैंक की वन टाइम सेटलमेंट पॉलिसी में सुधार की आवश्यकता है। उन्होंने बेहतर काम करने वाली बैंक की शाखाओं को सम्मानित कर प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार इस वित्त वर्ष में प्रत्येक 100 रुपये में से वेतन पर 25 रुपये, पेंशन पर 17 रुपये, ब्याज पर 11 रुपये, कर्ज अदायगी पर नौ रुपये, स्वायत्त संस्थानों की ग्रांट पर 10 रुपये और बचे हुए 28 रुपये पूंजीगत व्यय और अन्य गतिविधियों पर खर्च किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश को मिलने वाला राजस्व घाटा अनुदान भी कम हुआ है। वर्ष 2021-22 में अनुदान के रूप में राज्य सरकार को 10 हजार करोड़ रुपये मिलते थे जबकि वर्ष 2025-26 में यह अनुदान घट कर तीन हजार करोड़ रुपये रह जाएगा, लेकिन इसके बावजूद वर्तमान राज्य सरकार का विजन हिमाचल प्रदेश को व्यवस्था परिवर्तन से आत्मनिर्भर बनाना है। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा, "राजनीतिक लाभ के लिए मैं सरकारी खजाने को लुटने नहीं दूंगा। साधन संपन्न लोगों को बिजली और पानी पर सब्सिडी नहीं दी जाएगी तथा सरकार द्वारा इसका युक्तिकरण किया जा रहा है, ताकि गरीब व्यक्ति को लाभ मिले। (शेष पृष्ठ 11 पर)

निर्माणाधीन अस्पताल भवन का निरीक्षण

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कंडाघाट में निर्माणाधीन अस्पताल के भवन और खेल मैदान का निरीक्षण किया। स्थानीय लोगों ने मुख्यमंत्री को बताया कि 50 बिस्तर वाले कंडाघाट अस्पताल का निर्माण 14 करोड़ रुपये की लागत से पूर्व सरकार के कार्यकाल में शुरू हुआ था, लेकिन पिछली सरकार के समय में इसके निर्माण कार्य को रोक दिया गया था। मुख्यमंत्री ने स्थानीय लोगों को आश्वासन दिया कि राज्य सरकार इस भवन का निर्माण कार्य पुनः आरम्भ करेगी जिसके लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए कि निर्माण कार्य का प्रस्ताव शीघ्र राज्य सरकार को भेजना सुनिश्चित (शेष पृष्ठ 11 पर)

प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र से होगा पर्यावरण संरक्षण

मंडी जिला के चौंतड़ा विकास खंड की सभी 42 ग्राम पंचायतों को जल्द ही प्लास्टिक कचरे की समस्या से निजात मिलेगी। सिंगल यूज प्लास्टिक कचरा निपटान के लिए विकास खंड की ग्राम पंचायत पस्सल में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र स्थापित किया गया है। इस संयंत्र के पूरी तरह क्रियाशील हो जाने से जहां विकास खंड की सभी ग्राम पंचायतों से प्राप्त होने वाले सिंगल यूज प्लास्टिक कचरे का वैज्ञानिक तरीके से निपटान किया जाएगा तो वहीं संबंधित ग्राम पंचायत की आय भी सृजित होगी। सबसे अहम बात यह है कि संयंत्र के चालू हो जाने से जहां लोगों को प्रतिदिन निकलने वाले सिंगल यूज प्लास्टिक कचरे से मुक्ति मिलेगी तो वहीं पर्यावरण व ग्रामीण परिवेश स्वच्छ व साफ-सुथरा बनेगा। संभवतः जिला मंडी में इस तरह का संयंत्र स्थापित करने वाला चौंतड़ा पहला विकास खंड है।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत लगभग 16 लाख रुपये की लागत से ग्राम पंचायत पस्सल में यह प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र स्थापित किया गया है। इस संयंत्र के माध्यम से सिंगल यूज प्लास्टिक कचरे का वैज्ञानिक तरीके से निपटारा किया जाएगा। इस संयंत्र में एकत्रित होने वाले सिंगल यूज प्लास्टिक निपटान को बेलिंग मशीन, प्लास्टिक श्रेडर मशीन, प्लास्टिक डस्ट रिमूवर मशीन के साथ-साथ पंचायतों से प्लास्टिक कचरा एकत्रीकरण को ई-रिक्शा की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। इस संयंत्र के माध्यम से प्लास्टिक कचरे की प्रोसेसिंग कर इसे दोबारा काम में लाने को सीमेंट व प्लास्टिक सामान निर्माण फैक्ट्रियों के साथ-साथ लोक निर्माण विभाग को सड़कों इत्यादि के निर्माण को उपलब्ध करवाया जाएगा। इससे न केवल ग्रामीणों को सिंगल यूज प्लास्टिक कचरे के निपटान में मदद मिलेगी बल्कि इस

कार्य से संबंधित ग्राम पंचायत की आय भी सृजित होगी। सिंगल यूज प्लास्टिक कचरा जहां ग्रामीण क्षेत्रों में इधर-उधर बिखरा पड़ा रहता है तो वहीं लोग जलाकर इसे नष्ट करने का भी प्रयास करते हैं। बिखरे प्लास्टिक कचरे के कारण गांव की नालियों इत्यादि के अवरुद्ध होने की समस्या से भी जूझना पड़ता है। प्लास्टिक कचरा न केवल हमारे नदी, नालों, तालाबों, कृषि भूमि इत्यादि को प्रदूषित कर रहा है बल्कि पेयजल स्रोत भी प्रभावित हो रहे हैं, जिसका सीधा असर लोगों के स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्लास्टिक कचरा एक बहुत बड़ी समस्या बनकर सामने आई है जिसके निष्पादन को उनकी पंचायत के माध्यम से यह प्रयास शुरू हुआ है। इसके अलावा महिलाओं व बच्चों के सेनेटरी पैड व नैपकिन निपटान को इंसीनेरेटर मशीन भी स्थापित की जा रही है। वर्तमान में चौंतड़ा विकास खंड की 17 ग्राम पंचायतों में सिंगल यूज प्लास्टिक कचरा एकत्रीकरण कार्य शुरू कर लगभग 62 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे को इक्कठा किया जा चुका है। कलेक्शन सेंटर से इसे ई-रिक्शा या अन्य वाहन के माध्यम से संयंत्र तक पहुंचाया जाएगा। अब ग्रामीणों द्वारा सिंगल यूज प्लास्टिक जिसमें दूध, दही, बिस्किट, चिप्स के पैकेट, पानी की बोतलों सहित विभिन्न खाद्य पदार्थों के रैपर इत्यादि को इधर-उधर फेंकने या जलाने के बजाय पंचायत प्रतिनिधियों, स्वच्छता वॉलंटियर, विभाग के फील्ड कर्मचारियों या फिर राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के तहत गठित स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को सौंपे ताकि इसका वैज्ञानिक तरीके से निपटारा किया जा सके।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत लगभग 16 लाख रुपये की लागत से ग्राम पंचायत पस्सल में यह प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र स्थापित किया गया है। इस संयंत्र के माध्यम से सिंगल यूज प्लास्टिक कचरे का वैज्ञानिक तरीके से निपटारा किया जाएगा।

✍ राजेश कुमार जसवाल

एचपी शिवा परियोजना

कंट्रोल एंड एटमॉसफेयर यूनिट से फल व सब्जियों को स्टोर करना होगा आसान

प्रदेश सरकार राज्य के निचले इलाकों में बागबानी को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है। हिमाचल प्रदेश उपोष्णकटिबंधीय बागबानी, सिंचाई एवं मूल्यवर्धन (एचपी शिवा) परियोजना के तहत बिलासपुर जिला में दो कंट्रोल एंड एटमॉसफेयर यूनिट (सीएयू) बनाए जाएंगे। कंट्रोल एंड एटमॉसफेयर यूनिट बनने से सब्जियों, नींबू प्रजाति के फलों, अमरूद, अनार व संतरा इत्यादि को नियंत्रित वातावरण में संग्रहित किया जा सकेगा।

बिलासपुर प्रदेश का ऐसा पहला जिला होगा जहां दो कंट्रोल एंड एटमॉसफेयर यूनिट बनेंगे। एचपी शिवा परियोजना के तहत बिलासपुर जिला में 2025 तक 230 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि पर नकदी फसलों को उगाने का कार्य पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में पचास मीट्रिक टन उत्पादन दर्ज किया गया है जबकि साल के अंत तक 200 से 250 मीट्रिक टन उत्पादन का अनुमान है जिससे चालीस लाख रुपये का कारोबार होगा। पिछले वर्ष जिले में 110 हेक्टेयर क्षेत्र में 1.10 लाख पौधे लगाए गए थे। जबकि इस बार सितंबर व अक्तूबर में ही लगभग सौ हेक्टेयर क्षेत्र में लीची, अनार व अमरूद के साठ हजार से ज्यादा पौधे लगाने का लक्ष्य तय

✍ हेमंत नेगी

किया गया है। चिन्हित एरिया में जमीन समतल करने के अलावा ड्रिप सिंचाई सुविधा व बाड़बंदी का कार्य भी किया जा रहा है। प्रदेश के सात जिलों में यह परियोजना चल रही है और सभी बगीचे वर्ष 2028 तक आम, अमरूद, संतरा और अनार से लकदक होंगे। उन्होंने बताया कि एचपी शिवा परियोजना के तहत प्रदेश भर में 6000 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि पर नकदी फसलों को उगाने के कार्य को वर्ष 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसमें पौधरोपण, सिंचाई सुविधा और बाड़बंदी का कार्य शामिल है।

परियोजना के तहत सात जिलों के किसानों को परम्परागत खेतीबाड़ी के अलावा नकदी फसलों के प्रति आकर्षित करना मुख्य उद्देश्य है ताकि उनकी आर्थिकी में व्यापक सुधार हो सके। परियोजना के तहत नींबू, संतरा, आम, लीची, अनार, प्लम, पिकनेट और जापानी फलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। परियोजना के बिलासपुर में तैनात जिला समन्वय अधिकारी डॉ. रमल अंगारिया के अनुसार बिलासपुर में 600 हेक्टेयर क्षेत्र चिन्हित करने का लक्ष्य है जबकि इससे अधिक 771 हेक्टेयर चिन्हित किया जा चुका है। अगले दो महीने में 82.36 बीघा में लीची, संतरा व अमरूद प्रजातियों के 62148 पौधे लगाए जाएंगे। घुमारवीं ब्लॉक में 56.86 बीघा भूमि में 44375 पौधे जबकि झंडूता ब्लॉक में 23.50 बीघा जमीन पर 17773 पौधे लगाए जाएंगे।

बागबानी विकास को नए आयाम दे रही एचपी शिवा परियोजना

जिला सिरमौर

✍ ममता नेगी

हिमाचल प्रदेश की आर्थिकी में बागबानी का बहुत बड़ा योगदान है। राज्य में लगभग 2.36 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बागबानी के अधीन है, जिस कारण हिमाचल प्रदेश ने देश-विदेश में फल राज्य के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाई है। बागबानी क्षेत्र को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए तथा प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों में बागबानी विकास के लिए हिमाचल प्रदेश उपोषणीय बागबानी सिंचाई एंव मूल्यवर्धन परियोजना (एच.पी. शिवा) का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। एच.पी.शिवा परियोजना के अंतर्गत अमरूद, लीची, नींबू व अनार का पायलट प्रोजेक्ट आधार पर उत्पादन किया जा रहा है। जिला सिरमौर में एच.पी.शिवा परियोजना के तहत अमरूद की खेती को बढ़ावा देने के लिए 18 कलस्टर बनाए गए हैं, जिनमें 209.25 हेक्टेयर क्षेत्र में अमरूद के पौधे लगाए जा रहे हैं। जिला सिरमौर में अब तक पायलट आधार पर 8.91 हेक्टेयर क्षेत्र में अमरूद के पौधे रोपित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त जिला सिरमौर में एच.पी. शिवा परियोजना के तहत अमरूद की खेती को बढ़ावा देने और सफल बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उठाऊ सिंचाई योजनाएं भी प्रस्तावित हैं। परियोजना के तहत रुण खड्ड, जलाल खड्ड, जुड्डा नाला, दोघाट खड्ड, खारा नाला, दैंस नदी में उठाऊ सिंचाई योजनाएं प्रस्तावित हैं, जिसका कार्य आगामी वर्ष तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। बागबानी के माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था को और अधिक बढ़ावा देने के लिए एच.पी.शिवा परियोजना को राज्य और जिला सिरमौर में सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है।

हरित ऊर्जा राज्य बनने की राह पर हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश देश का पहला हरित ऊर्जा राज्य बनने की ओर अग्रसर है। प्रदेश को हरित ऊर्जा राज्य के रूप में 31 मार्च, 2026 तक स्थापित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वर्तमान प्रदेश सरकार हरित ऊर्जा विकल्पों का समुचित दोहन सुनिश्चित कर रही है। सौर ऊर्जा पर्यावरण हितैषी और ऊर्जा का नवीकरणीय साधन है। इससे कार्बन उत्सर्जन में कमी और जीवाश्म ईंधन

✍ अरविंद ठाकुर

पर निर्भरता को कम किया जा सकता है। सौर ऊर्जा परियोजनाओं का रख-रखाव आसानी से किया जा सकता है और इनका जीवनकाल भी लम्बा होता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रदेश सरकार हरित उद्योगों को बढ़ावा प्रदान कर रही है। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन विश्व की सबसे बड़ी चुनौती है और प्रदेश सरकार हरित पहल के माध्यम से ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को कम करने की दिशा में कार्य रही है।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू सौर ऊर्जा के लिए केंद्र सरकार के समक्ष भी हिमाचल के हितों की पैरवी कर रहे हैं। वह केंद्र से स्पीति में मेगा सोलर पार्क के लिए भी सहायता का आग्रह कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि स्पीति में 1000 मेगावॉट हाइब्रिड सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन की क्षमता है जिसका ग्रीन कॉरिडोर ट्रांसमिशन के जरिए दोहन किया जा सकता है। वहीं सतलुज घाटी में सौर, पवन और जलविद्युत ऊर्जा की भी अपार संभावनाएं हैं।

परिवहन विभाग प्रदेश का पहला विभाग है जहां सिर्फ इलेक्ट्रिक वाहनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री भी अधिकारिक कार्यक्रमों के लिए इलेक्ट्रिक गाड़ियों में सफर कर रहे हैं।

राजीव गांधी स्टार्ट-अप योजना के तहत प्रदेश सरकार द्वारा निजी भूमि पर 100 से 500 किलोवॉट तक के सोलर पैनल लगाने के लिए 45 फीसदी उपदान दिया जा रहा है। वहीं राजीव गांधी स्टार्ट-अप योजना के तहत 40 प्रतिशत उपदान पर ई-टैक्सी चलाने के लिए 10 हजार परमिट दिए जा रहे हैं। प्रदेश को हरित ऊर्जा राज्य बनाने के लिए सरकार कारगर कदम उठा रही है। प्रदेश में छह ग्रीन कॉरिडोर स्थापित किए जा रहे हैं जहां इलेक्ट्रिक वाहनों के इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रदेश का पहला ग्रीन कॉरिडोर कीरतपुर-मनाली शुरू किया जा चुका है जबकि बाकी ग्रीन कॉरिडोर का कार्य भी प्रगति पर है। 300 किलोवॉट ग्रिड के सौर ऊर्जा संयंत्र से जोड़ा जाएगा।

यह संयंत्र प्रतिदिन 20 किलोग्राम ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादित करेगा और ग्रीन हाइड्रोजन बस में भरने के लिए 450 बार या इससे अधिक के दबाव

राजीव गांधी स्टार्ट-अप योजना के तहत प्रदेश सरकार द्वारा निजी भूमि पर 100 से 500 किलोवॉट तक के सोलर पैनल लगाने के लिए 45 फीसदी उपदान दिया जा रहा है।

चंबा में प्रदेश के प्रथम ग्रीन हाइड्रोजन आधारित मोबिलिटी स्टेशन का कार्य शुरू किया जा चुका है। यह स्टेशन ग्रीन हाइड्रोजन मोबिलिटी क्षेत्र में प्रदेश का मार्ग प्रशस्त करेगा। प्रदेश सरकार की इस महत्त्वाकांक्षी हरित पहल का निर्माण नेशनल हाइड्रो पॉवर कॉर्पोरेशन (एनएचपीसी) द्वारा 14 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से किया जाएगा और अगस्त, 2025 तक इस परियोजना के पूरा होने की उम्मीद है। यह परियोजना एनएचपीसी चमेरा-3 पावर स्टेशन के निकट स्थापित की जाएगी और ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसे से संग्रहित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त बस सुविधा के लिए एक हाइड्रोजन डिस्पेंसर यूनिट भी स्थापित किया जाएगा। इस परियोजना के शुरू होने से चंबा जिला में राजस्व और रोजगार सृजन के अवसर पैदा होंगे और प्रदेश के आर्थिक विकास में योगदान भी सुनिश्चित होगा।

प्रदेश सरकार ई-वाहनों के संचालनों को बढ़ावा प्रदान कर रही है और हिमाचल पथ परिवहन निगम की बसों को इलेक्ट्रॉनिक बसों के बेड़े में परिवर्तित किया जा रहा है। ई-बसों की खरीद से हरित ऊर्जा राज्य का सपना साकार होने जा रहा है। वर्तमान में निगम की 110 ई-बसें और 50 ई-टैक्सियां कार्यशील हैं। इलेक्ट्रिक बसों की खरीद के लिए 327 करोड़ रुपये प्रदान किए गए हैं और अतिरिक्त दो हजार टाइप-2 इलेक्ट्रिक बसों की खरीद प्रक्रियाधीन है।

ऊना जिला के पेखूबेला में हिमाचल प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा निर्मित 32 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना प्रदेश की जनता को समर्पित की जा चुकी है। यह परियोजना सालाना 6.61 करोड़ यूनिट विद्युत उत्पादन करेगी तथा प्रदेश सरकार को प्रतिवर्ष 2.90 रुपये प्रति यूनिट की दर से 19.17 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होगा। पेखूबेला सौर परियोजना से प्रतिवर्ष 2,532 टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी।

राज्य सरकार ने हिमाचल प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 500 मेगावाट सौर ऊर्जा स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। जिसकी प्राप्ति के लिए निगम ने 47 मेगावाट की तीन सोलर परियोजनाओं के निर्माण कार्य आबंटित किए हैं। हिमाचल प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा 72 मेगावॉट की सात सोलर परियोजनाओं के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं और 54 मेगावॉट की चार सौर ऊर्जा परियोजनाओं की डीपीआर तैयार की जा रही है। 77 मेगावॉट की 10 सौर ऊर्जा परियोजनाएं ऐसी हैं, जिनकी पूर्व व्यवहार्यता रिपोर्ट बनाई जा रही है। 50 मेगावॉट की सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए एफसीए अनुमति प्राप्त की जा रही है जबकि 200 मेगावाट की अन्य सौर ऊर्जा परियोजनाएं अन्वेषणाधीन चरण पर हैं। इन परियोजनाओं में 160 मेगावॉट की सौर परियोजनाएं ऊना जिले में, 110 मेगावॉट की सौर परियोजनाएं सोलन जिले में, 170 मेगावॉट की सौर परियोजनाएं कांगड़ा जिले में, 50 मेगावॉट की सौर परियोजनाएं मंडी जिले में और 10 मेगावॉट की सौर परियोजनाएं बिलासपुर जिले में स्थित हैं। प्रदेश सरकार नवाचार और नवोन्मेष पहल अपनाकर अपने ध्येय की ओर निरंतर आगे बढ़ रही है। प्रदेश हरित ऊर्जा के क्षेत्र में देशभर में मिसाल कायम करने जा रहा है। इससे पहले, प्रदेश प्लास्टिक मुक्त राज्य बनकर पर्यावरण हितैषी होने का संदेश देशभर में दे चुका है। राज्य सरकार के अथक प्रयासों से प्रदेश हर क्षेत्र में समृद्धि और खुशहाली की राह पर अग्रसर होगा।

मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के रोगियों को बेहतरीन सुविधा

मानवता की सेवा ही सच्ची सेवा है

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि मानवता की सेवा ही सच्ची सेवा है। राज्यपाल गत दिनों सोलन जिले के इंडियन एसोसिएशन ऑफ मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के मानव मंदिर कोठों स्थित केंद्र में मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से पीड़ित लोगों से संवाद कर रहे थे। राज्यपाल ने मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से पीड़ित लोगों के लिए किए जा रहे मानवीय कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस केंद्र में उपचार करवा रहे मरीजों के लिए अथक प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने खुशी जताई कि आईएएमडी द्वारा संचालित मानव मंदिर मस्कुलर डिस्ट्रॉफी और अन्य न्यूरोमस्कुलर डिसऑर्डर के मरीजों के जीवन को बदल रहा है। यह केंद्र एक ही छत के नीचे बेहतरीन आवासीय देखभाल, फिजियोथेरेपी, हाइड्रोथेरेपी, योग, प्राणायाम, ध्यान, मनोरंजन और अभिविन्यास, आनुवंशिक परीक्षण, मनोवैज्ञानिक परामर्श आदि प्रदान कर रहा है। आज देश-दुनिया से मरीज यहां उपचार करवाने आते हैं। इस अवसर पर राज्यपाल ने अपनी ऐच्छिक निधि से केंद्र को 50 हजार रुपये देने की घोषणा की। राज्यपाल ने कहा कि मानवता की सेवा करने वाले लोग वास्तविक नायक हैं और उनकी ये सेवाएं अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणादायक हैं। यह सभी का नैतिक कर्तव्य है कि परमात्मा की सेवा में लगे और विपत्ति में फंसे लोगों की सहायता करें। उन्होंने मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से ग्रसित लोगों के लिए सोलन में केन्द्र खोलने के लिए आईएएमडी की संरक्षक ऊमा बाल्दी के प्रयासों की सराहना की।

आईएएमडी केंद्र के लिए अंशदान का आह्वान

उन्होंने लोगो से इस नेक कार्य के लिए आगे आने और इस केंद्र के लिए उदारतापूर्वक अंशदान का आह्वान किया। राज्यपाल ने इस केंद्र के विभिन्न अनुभागों का दौरा किया और रोगियों को प्रदान की जा रही विभिन्न सुविधाओं का अवलोकन किया। उन्होंने केंद्र में स्थापित किए गए आधुनिक उपकरण सुविधा की सराहना की। उन्होंने मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से ग्रसित मरीजों से भी बातचीत की।

आईटी में बदलाव लाने में राजीव गांधी का अहम योगदान

सद्भावना दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों छोटा शिमला स्थित राजीव चौक पर पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न राजीव गांधी की जयन्ती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने हिमाचल प्रदेश सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को सद्भावना दिवस शपथ भी दिलाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वर्गीय राजीव गांधी को राष्ट्र आधुनिक भारत निर्माता के रूप में जानता है। प्रधानमंत्री के कार्यकाल के दौरान उन्होंने लोगों और समाज की सोच को बदलने के लिए अनेक दूरदर्शी निर्णय लिए। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय राजीव गांधी के प्रधानमंत्री के कार्यकाल के दौरान वह नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) के अध्यक्ष थे। एनएसयूआई की मांग पर राजीव गांधी ने युवाओं के मताधिकार के उपयोग की आयु को 21 से घटाकर 18 वर्ष की ताकि देश का युवा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। उनके कार्यकाल की यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राजीव गांधी के दूरदर्शी निर्णयों के फलस्वरूप आज भारत सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी देश बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने जब भारत की सुपर कम्प्यूटर की मांग को ठुकराया, तब उनके सशक्त नेतृत्व में देश में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए निर्णायक कदम उठाए। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में महिलाओं के अधिकारों की उन्होंने पुरजोर वकालत की और पंचायती राज संस्थाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी ने विधानसभा और संसद में महिलाओं के 33 प्रतिशत आरक्षण के लिए आवाज उठाई। इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, हिमाचल प्रदेश कांग्रेस समिति की अध्यक्ष प्रतिभा सिंह, मुख्य संसदीय सचिव मोहन लाल ब्राक्टा व संजय अवस्थी, हिमाचल प्रदेश भवन एवं सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष नरदेव कंवर, हिमुडा के उपाध्यक्ष यशवंत छाजटा, शिमला नगर निगम के महापौर सुरेंद्र चौहान, उप महापौर उमा कौशल, पार्षदगण, मुख्यमंत्री के ओएसडी रितेश कपरेट और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जंयती के अवसर पर श्रद्धांजलि देते हुए

राजीव गांधी ने महिलाओं को पंचायती राज संस्थाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण दिया

नेरी कॉलेज के हॉस्टल के लिए दो करोड़ की घोषणा

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों हमीरपुर जिले के औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी में विद्यार्थियों के साथ संवाद किया और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के सुझाव दिए। मुख्यमंत्री ने कॉलेज के बॉयज हॉस्टल के लिए दो करोड़ रुपये देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा, 'गांव के लोगों के हाथ में पैसा जाना चाहिए, इसीलिए वर्तमान कांग्रेस सरकार ने बजट में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कई प्रावधान किये हैं।' उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप नए पाठ्यक्रम शुरू किये जाने चाहिए और महाविद्यालय को बायो-इन्फॉर्मेमेटिक्स का पाठ्यक्रम शुरू करने पर विचार करना चाहिए। आने वाले समय में सरकार बागवानी क्षेत्र में विशेषज्ञों के पद भरेगी। राज्य सरकार ने 31 मार्च, 2026 तक हिमाचल प्रदेश को हरित ऊर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में सरकारी विभागों को इलेक्ट्रिक वाहन प्रदान किए जाएंगे। नालागढ़ में ऑयल इंडिया कम्पनी के सहयोग के साथ एक मेगावाट क्षमता का ग्रीन हाइड्रोजन प्लांट लगाया जा रहा है। जिला ऊना के पेखूबेला में 32 मेगावाट क्षमता की सौर बिजली परियोजना रिकॉर्ड चार महीने में बनकर तैयार की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार को खराब वित्तीय व्यवस्था पिछली सरकार से विरासत में मिली। उन्होंने कहा, 'हमने तय किया कि रूटीन की सरकार नहीं चल सकती, कर्ज कल्चर को बंद करना पड़ेगा। नहीं तो युवा पीढ़ी को क्या सौंप कर जाएंगे। खराब वित्तीय हालात के बावजूद हमने 1.36 लाख सरकारी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन दी। कई बार समाज के कल्याण के लिए मुश्किल फैसले करने पड़ते हैं। हम हिमाचल प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हमारी सरकार पूरी मेहनत कर रही है।'' ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़े बदलाव ला रही है, ताकि प्रदेश के लोगों को गुणात्मक सेवाएं मिल सकें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में भी कई क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। हर विधानसभा क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल खोले जा रहे हैं। प्रदेश के 850 शिक्षण संस्थानों को इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहां पर स्मार्ट क्लास रूम, ऑडियो-वीडियो विजुअल टीचिंग जैसी सुविधाएं होंगी। पांच से कम विद्यार्थियों की संख्या वाले स्कूलों को मर्ज किया जा रहा है तथा शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यकता के आधार पर भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध करवाई जा सके।

हर विधानसभा क्षेत्र में राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल खोले जा रहे हैं

निजी अस्पतालों में 30 नवंबर तक डायलिसिस सुविधा

प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य विभाग के प्रवक्ता ने गत दिनों बताया कि मुख्यमंत्री हिमाचल हेल्थकेयर योजना (हिमकेयर) में संशोधन किया गया है। योजना में संशोधन किए जाने से अब निजी अस्पताल मरीजों को एक सितम्बर से 30 नवम्बर, 2024 तक डायलिसिस सेवाएं प्रदान कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि योजना के अन्य प्रावधान में कोई बदलाव नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि व्यापक जनहित में यह फैसला लिया गया है ताकि गुर्दे की बीमारियों से ग्रसित मरीजों को डायलिसिस की निर्बाध सुविधा प्रदान की जा सके। उन्होंने कहा कि सरकार राज्य के नागरिकों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हरसम्भव कदम उठाये जा रहे हैं।

देहरा में नए कार्यालयों के लिए भूमि चिन्हित करने के निर्देश

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों कांगड़ा जिले के देहरा विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों के लिए भूमि का निरीक्षण किया। उन्होंने देहरा में नए खोले गए पुलिस अधीक्षक कार्यालय के साथ-साथ अन्य नए कार्यालय स्थापित करने के लिए जिला प्रशासन को जल्द से जल्द भूमि चिन्हित करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्माणाधीन फायर ऑफिस, एसडीएम ऑफिस, अस्पताल, सेरिकल्चर ऑफिस और बाल व बालिका राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाओं देहरा का दौरा भी किया तथा इनमें उचित सुधार लाने के निर्देश दिए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा शिक्षा क्षेत्र में कई सुधारात्मक कदम उठाए गए हैं। उन्होंने कहा कि देहरा कॉलेज का नया भवन बनाया जाएगा और देहरा में अधूरे भवनों के कार्य को पूरा करने के लिए सात करोड़ रुपए प्रदान किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वर्ष के अंत में देहरा उत्सव मनाया जाएगा जिससे क्षेत्र में पर्यटन और लोक संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि देहरा और ज्वालामुखी में बिजली की तारें भूमिगत की जाएंगी, जिसके लिए पर्याप्त धन राशि उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों के साथ क्षेत्र की विकासात्मक परियोजनाओं की समीक्षा की और अधूरी परियोजनाओं के कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि देहरा में केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर, अंतरराष्ट्रीय स्तर के चिड़ियाघर के निर्माण के साथ-साथ अन्य परियोजनाओं के दृष्टिगत क्षेत्र में बिजली की मांग निरंतर बढ़ रही है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड को देहरा में बिजली संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए एक सर्वे करने के निर्देश दिए।

भूमि ई-ऑक्शन लागू करने के निर्देश

हिमाचल प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम के निदेशक मंडल की बैठक की अध्यक्षता करते हुए उद्योग मंत्री श्री हर्षवर्धन चौहान ने गत दिनों शिमला में निर्देश दिए कि निगम के अंतर्गत औद्योगिक क्षेत्र बद्दी, औद्योगिक एस्टेट दावनी तथा राज्य भर में अन्य स्थानों पर भूखंडों की नीलामी के लिए ई-ऑक्शन पद्धति को लागू किया जाए। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य नीलामी प्रक्रिया में पारदर्शिता व दक्षता को बढ़ाना है। उद्योग मंत्री ने वित्त वर्ष 2023-24 में निगम के 10.25 करोड़ रुपये के शुद्ध लाभ पर संतोष व्यक्त किया जोकि निगम की निरंतर उन्नति और वित्तीय स्थिरता को दर्शाता है। निगम के प्रबंध निदेशक राजेश्वर गोयल ने बोर्ड को अवगत करवाया कि नई हिमरस बिल्डिंग का फेस लिफ्ट कार्य अत्याधुनिक डिजाइन के आधार पर किया जाएगा। उन्होंने अवगत करवाया कि निगम ने औद्योगिक एस्टेट दावनी में भूमि हस्तांतरण की सुविधा के लिए आवश्यक कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि नालागढ़ क्षेत्र में वाणिज्यिक और आवासीय दोनों प्रकार के भूखंड विकसित किए जाएंगे। बोर्ड द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 के वार्षिक लेखों को मंजूरी दी गई। बोर्ड ने निगम की वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए बिजनेस योजना और संसाधन पूर्वानुमान को भी मंजूरी दी।

फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना का कार्य तेजी से किया जाएगा

फतेहपुर विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर गत दिनों उपमुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि जिला कांगड़ा में निर्माणाधीन फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना का कार्य तेज गति से आगे बढ़ेगा। इसके निर्माण के लिए प्रदेश सरकार द्वारा 300 करोड़ रुपये की राशि खर्च की गई है। लगभग 646 करोड़ रुपये से बनने वाली इस परियोजना के निर्माण कार्य के मामले को लगातार केंद्र के समक्ष उठाया गया। निरंतर प्रयास के बाद इसके लिए केंद्र से भी बजट मंजूर हो गया है। श्री अग्निहोत्री ने कहा कि परियोजना में सिंचाई के साथ-साथ बिजली प्रोजेक्ट का निर्माण भी प्रस्तावित है। इससे जहां पांच हजार हेक्टेयर भूमि पर किसान खेती कर सकेंगे, वहीं बांध से बिजली भी तैयार होगी। परियोजना के तहत निर्मित हो रहे पावर हाउस से 1.88 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। उपमुख्यमंत्री ने शाहनहर सिंचाई परियोजना के क्षतिग्रस्त हिस्से के पुनर्निर्माण के लिए दस करोड़ रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि 247 करोड़ रुपये लागत की सुखाहर सिंचाई योजना की मंजूरी के लिए प्रयास तेज कर दिए गए हैं। साथ ही सिद्धाथा नहर से 45 गांवों की कुल 3150 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा मिलेगी। पोंग बांध 105 करोड़ की लागत से एक समानांतर पुल बनाया जाएगा। उपमुख्यमंत्री ने लगभग चार करोड़ 24 लाख रुपये की लागत से निर्मित जलशक्ति विभाग की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण किया। उन्होंने करीब एक करोड़ आठ लाख रुपये की लागत से निर्मित उठाऊ पेयजल योजना ढ्हर, बलडीयां, धनेटी, देहरियां तथा एक करोड़ 66 लाख रुपये की लागत से उठाऊ पेयजल योजना रैहन देहरी के संवर्धन कार्य का उद्घाटन किया। इसके पश्चात श्री मुकेश अग्निहोत्री ने एक करोड़ 50 लाख की लागत से हुए जल भवन रैहन के नवीकरण कार्य का भी उद्घाटन किया। मुकेश अग्निहोत्री ने फतेहपुर विधानसभा क्षेत्र में प्रस्तावित बस अड्डे की साईट का निरीक्षण कर अधिकारियों को जल्द इसका निर्माण कार्य शुरू करने के निर्देश दिए। फतेहपुर में भी एक बस स्टैंड निर्मित करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। इसके अलावा उन्होंने राजा का तालाब में बनने वाले तालाब के लिए 25 लाख रुपये देने की घोषणा की।

पोंग बांध पर 105 करोड़ से बनेगा समानांतर पुल

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

यदि आप किसी दूसरे के लिए दीपक जलाते हैं तो यह आप के रास्ते को भी रोशन करता है। -गौतम बुद्ध

मालिकाना हक

प्रभावी एवं लोक सुलभ निर्णयों से ही बेहतर शासन व प्रशासन प्रदान किया जा सकता है। लोगों की सुविधा और उन्हें त्वरित सेवा प्रदान करने के लिए वर्तमान प्रदेश सरकार ने सत्ता संभालते ही जनहित में कई ऐसे निर्णय लिए हैं, जो यह दर्शाता है कि उनकी सरकार का एकमात्र ध्येय जनकल्याण है। इसी उद्देश्य को समक्ष रखकर हाल ही में प्रदेश सरकार द्वारा स्वामित्व योजना के तहत आम लोगों को संपत्ति कार्ड का वितरण किया गया। इस कार्ड के अंतर्गत गांव के आबादी देह रकवा में भूमि का स्वामित्व कार्ड उन्हें उपलब्ध करवाना है। राजस्व विभाग की इस योजना में 11 तहसीलों के 10-10 पात्र परिवारों को संपत्ति कार्ड वितरित किए गए और 190 गांवों के 4230 से अधिक परिवारों को संपत्ति कार्ड प्रथम चरण के तहत प्रदान किए जाएंगे, जिससे बहुत से लोगों को सुविधा उपलब्ध होगी। अभी तक इस योजना के तहत प्रदेश के 15,196 गांवों में से 13,599 आबादी देह गांवों में ड्रोन से मार्किंग का कार्य पूरा कर लिया गया है। हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर जिला देश का पहला ऐसा जिला बना है जहां आबादी देह में परिवारों को जमीन का मालिकाना हक दिया गया है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग से जिला हमीरपुर सहित 6314 गांव के प्रथम स्तर के 16,588 नक्शे व दूसरे स्तर पर 774 गांवों के 1482 नक्शे प्राप्त हो चुके हैं। हमीरपुर में 355 आबादी देह गांवों के अंतिम स्तर में नक्शे प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें संपत्ति कार्ड जारी करने की प्रक्रिया आरंभ की गई है। यह योजना 24 अप्रैल 2020 को केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई थी। इस योजना के तहत ग्रामीण लोगों को शहरी क्षेत्र के लोगों जैसी सुविधाएं सुलभ हो, यह इस योजना का मूल उद्देश्य है। प्रायः यह भी देखने को मिलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जमीन किसी भी सरकारी आंकड़े में दर्ज नहीं होती है, जिसके कारण उन्हें बहुत सी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है लेकिन इस 'स्वामित्व योजना' के तहत गांव के उन लोगों को मालिकाना हक दिए जा रहे हैं। इस योजना की खास बात यह है कि इसके लिए गांव में रहने वाले लोगों को किसी तरह के आवेदन करने की जरूरत नहीं है। सरकार द्वारा जैसे-जैसे ग्रामीण भारत में सर्वे और मैपिंग का काम होता जाएगा, वैसे-वैसे ही लोगों को उनकी जमीन का प्रॉपर्टी कार्ड मिलता जाएगा। जब जमीन मालिक के नाम होगी तो बहुत से जमीन मालिक लाभान्वित होंगे। अब वह अपनी जमीन को खरीद व बेच भी पाएंगे। साथ ही बैंक से जमीन पर ऋण लेना भी उन्हें आसान हो जाएगा। प्रत्येक भू-स्वामी के लिए स्वामित्व/ प्रॉपर्टी कार्ड बनाए जाएंगे। इससे उन्हें भविष्य में संपत्ति के रूप में भी अपनी भूमि/संपत्ति का उपयोग करने के मामले में वित्तीय संस्थानों का एक आधिकारिक दस्तावेज पेश करने में मदद मिलेगी। लोकहित को सर्वोपरि रखते हुए और लोगों को उनकी समस्याओं का समाधान उनके घर द्वार पर ही उपलब्ध हो, के उद्देश्य से आगे बढ़ रही वर्तमान सरकार ने पहली बार प्रदेश में इंतकाल अदालतों का आयोजन किया। सरकार का यह अनूठा कदम जनता के लिए वरदान साबित हुआ। इन विशेष अदालतों का लाभ ऐसे लोगों को मिला जिनके राजस्व संबंधी मामले वर्षों से कार्यालय में लंबित पड़े थे। प्रदेश में बहुत से लोगों के म्यूटेशन डिमार्केशन तथा पार्टिशन के असंख्य मामले लंबित पड़े हैं। इनको ध्यान में रखते हुए और लोगों को शीघ्र न्याय दिलवाने के लिए सरकार ने भू-राजस्व कानून में संशोधन लाया है जिसके तहत अब राजस्व अधिकारियों को निशानदेही व बंदोबस्त सहित अन्य कार्यों को निर्धारित समय अवधि में पूरा करना होगा। प्रदेश सरकार द्वारा नया लैंड कोड जारी किया गया है। इस कोड के माध्यम से भूमि विवादों का सामाजिक समन्वय व पारिवारिक जुड़ाव के साथ सर्वसम्मत समाधान निकालने में सुविधा होगी। राज्य सरकार ने हिम भूमि ऐप भी तैयार की है जो पटवारी और कानूनगों के कार्य में मदद करेगी। इसके माध्यम से लोगों को भू-राजस्व व्यवस्था से संबंधित जानकारी प्राप्त करने में आसानी होगी। लोगों को अब जमाबंदी और ततीमा जैसे दस्तावेजों को लेने के लिए पटवारी और कानूनगो के कार्यालय नहीं जाना पड़ेगा। आने वाले समय में प्रदेश सरकार द्वारा इस तरह के कई प्रयास किए जाएंगे जिससे लोगों को उनकी समस्याओं का निदान हो सकेगा।

वैश्विक संकट बनती 'बाल भुखमरी'

✍ प्रभुनाथ शुक्ल

भूख वैश्विक समस्या बन गई है ग्लोबल स्तर पर इस समस्या पर कोई ठोस नीति नहीं बन पाई है। सुविधा संपन्न परिवार जहां भोजन की बर्बादी करता है वहीं गरीब परिवार भूखा सोने को मजबूर है। हालिया आई यूनिसेफ की 'चाइल्ड न्यूटीटन रिपोर्ट 2024' बेहद चौंकाती है

दुनिया के सामने रोटी, कपड़ा और मकान बदलते दौर में भी उतने बुनियादी और अहम मसले हैं जितने कल थे। आज जिस तरह के हालात हैं उनसे बाहर निकलने की फिलहाल कोई उम्मीद भी नहीं दिखती है। क्योंकि तीनों जरूरतें मानव समाज की मूलभूत आवश्यकता और जन्मसिद्ध अधिकार भी है। दुनिया में भुखमरी और संतुलित आहार आज भी सबसे प्रासंगिक विषय है। विज्ञान और संतुलित विकास का सामंजस्य हम नहीं बिठा पाए हैं। जिसकी वजह से इस तरह की चुनौतियां हमारे सामने हैं। हम चाँद और सूरज पर दुनिया बसाने का सपना संजो रहें हैं, लेकिन हमारी आने वाली पीढ़ी भूख से परेशान है और उसे सेहतमंद भोजन तक नहीं मिल पा रहा। ऐसे हालात में एक स्वस्थ दुनिया की परिकल्पना हमारे लिए संभव नहीं है।

हमारे सामने एक अहम सवाल यह भी है कि इस दुनिया में लोग अधिक खाकर मर रहे हैं और यहीं वे लोग भी हैं जो भूख मिटाने के लिए परेशान हैं। हमारे लिए यह कितनी विडंबना की बात है।

एक आंकड़े के अनुसार पूरी दुनिया में जितना भोजन हर साल बर्बाद होता है उससे दो अरब लोगों की भूख मिटायी जा सकती है। लगभग एक अरब 30 लाख करोड़ टन भोजन हर साल बर्बाद होता है। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 23 करोड़ टन दाल, 12 करोड़ टन फल और तकरीबन 21 करोड़ टन सब्जियां वितरण अव्यवस्था के कारण हर साल खराब हो जाती है। जबकि 40 फीसदी भोजन शादी-ब्याह में खराब हो जाता है।

भूख वैश्विक समस्या बन गईं है ग्लोबल स्तर पर इस समस्या पर कोई ठोस नीति नहीं बन पाई है। सुविधा संम्पन्न परिवार जहां भोजन की बर्बादी करता है वहीं गरीब परिवार भूखा सोने को मजबूर है।

हालिया आई यूनिसेफ की 'चाइल्ड न्यूट्रीशन रिपोर्ट 2024' बेहद चौंकाती है। दुनिया के 92 देशों पर बाल पोषण पर जो आंकड़े आए हैं वह हमें डराते हैं और सोचने के लिए विवश करते हैं। सबसे चिंतनीय स्थिति भारत की है। यहां 40 फीसदी बच्चे भूख और कुपोषण के शिकार हैं।

अब जरा सोचिए, जब भारत जैसे कृषि प्रधान देश की यह स्थिति है तो दुनिया के दूसरे देशों के हालात क्या होंगे। भारत को भुखमरी की उच्च श्रेणी में रखा गया है।

पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से भी कुपोषण के मामले में भारत की स्थिति खराब है। सोमालिया में जहां यह स्थिति 63 फीसदी है वहीं बेलारूस सिर्फ एक फीसदी पर है। दुनिया का हर चौथा बच्चा भूखा सोने को मजबूर है। जबकि दक्षिण एशिया में सबसे बदतर स्थिति अफगानिस्तान की है। भारत में 80 करोड़ लोगों को मुफ्त खाद्यान की सुविधा उपलब्ध होने के बाद भी यह चिंताजनक है।

दुनिया में कुपोषण की समस्या महामारी का रूप ले रही है। कुपोषण की मुख्य वजह आदमी की आर्थिक सामाजिक स्थिति के अलावा दूसरे कारण भी है। देश में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी इस समस्या को और बढ़ा रही है। आर्थिक विपन्नता की वजह से आम आदमी बच्चों को पौष्टिक आहार नहीं उपलब्ध करा पाता है। क्योंकि उसकी आय क्षमता ही उतनी नहीं रहती की वह बच्चों को संतुलित आहार उपलब्ध करा पाए। वह कठिन परिश्रम के बाद भी रोटी-दाल जुटा पाता है। कभी हालात ऐसे बनते हैं कि पूरे परिवार को भूखा सोना पड़ता है। दिहाड़ी मजदूरी कमाने वाला व्यक्ति सिर्फ रोटी-दाल की चिंता करता है। उसके सामने पहले पेट भरने की चुनौती होती है। वह पौष्टिक आहार की कल्पना भी नहीं कर सकता। इस हालत में आम आदमी दूध, मछली, मांस, अंडे, और विटामिन युक्त फल की व्यवस्था कहां से कर सकता है। आदमी पहले पेट भरने की व्यवस्था करता है इसके बाद वह आगे की सोचता है।

आर्थिक विपन्नता की वजह से मध्यवर्गीय एवं आम साधारण परिवारों के हालात इसी तरह है कि वह दिन-रात कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी किसी तरह परिवार और बच्चों की देखभाल कर रहा है फिर पौष्टिक आहार कहां से उपलब्ध कराएगा। क्योंकि उसकी आय क्षमता उतनी नहीं है। वह चाहता है जिंदगी किसी तरह चलती रहे। यूनिसेफ के आहार चार्ट के अनुसार कम से कम आठ प्रकार के आहार बच्चों को पौष्टिक भोजन के लिए चाहिए। अगर इस तरह की सुविधा नहीं उपलब्ध हो तो कम से कम पांच आहार तो मिलने ही चाहिए। लेकिन लोगों को पांच आहार भी मिलना मुश्किल है। जिसकी वजह से बच्चे भूखमरी और कुपोषण के शिकार हैं।

वैश्विक स्तर पर इस मुद्दे को लेकर धरातल पर काम करने की जरूरत है। दुनिया भर के बच्चों को स्वस्थ और पौष्टिक आहार दिलाने की हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है। हालांकि इस स्तर के हालात यूरोपियन देशों में नहीं देखे जाते। दक्षिण एशिया के देशों की हालत बेहद चिंतनीय है। इसके लिए वैश्विक स्तर पर एक संगठन का निर्माण होना चाहिए। भारत में भी इसके लिए विशेष आयोग गठित कर बच्चों के लिए पौष्टिक आहार की व्यवस्था होनी चाहिए। अगर आने वाली पीढ़ी शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार होगी तो हम एक उन्नतशील और प्रगतिवादी राष्ट्र का निर्माण कैसे कर सकते हैं। यह हमारे लिए चिंता एवं चुनौती का विषय है।

आपदाएं विकास के विकराल नमूने

✍ निशा कुमारी

बादल फटने, बाढ़ व भूस्खलन की घटनाओं पर हमें गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। समय रहते प्राकृतिक संसाधानों का अत्यधिक दोहन होने से रोकने की ज़रूरत है तभी हम भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य की नींव रख सकते हैं।

आखिर हम क्या कर रहे हैं? क्यों हमें इतना विकास चाहिए? क्यों धरती माँ की छाती को छलनी कर कंकरीट की दीवारें खड़ी की जा रही हैं? क्यों हम इतने महत्त्वाकांक्षी हो गए हैं कि आने वाली पीढ़ी को ही सब कुछ उपलब्ध करवाने की लालसा में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं? क्या हम भावी पीढ़ी को पंगु तो नहीं बना रहे है कि उसके सामने सब कुछ पका-पकाया मिल जाए और वो आराम से ऐश परस्ती से जीवन यापन करे। शायद इन सभी सवालों के जवाब हम सभी जानते हैं। लेकिन समझने को तैयार नहीं हैं।

विकास की अंधी दौड़ में क्यों विनाश को बुलावा देने की मनुष्य की फितरत सी हो गई है। स्वयं को सुविधा संपन्न बनाने की महत्त्वाकांक्षा में अंतहीन विकास करते जा रहे हैं और हमें यह तक पता नहीं है कि इस अथाह विकास प्रतिस्पर्धा में हम स्वयं विनाश को गले लगा रहे हैं। हालांकि प्रकृति से हुई छेड़छाड़ के लिए प्रकृति ने मानव को इसका माकूल जवाब भी दिया है। लेकिन मानव है कि विकास के पीछे इतना पागल है कि प्रकृति द्वारा आए दिन दिए जा रहे संकेतों को समझने को तैयार ही नहीं।

इन संकेतों को नजरअंदाज करना तथा मनुष्य की प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के कारण मौसम ने बेरूखी करना शुरु कर दिया है। गर्मी के मौसम में अप्रत्याशित गर्मी और बरसात में अप्रत्याशित बरसात, इसी बेरूखी का परिणाम है। ज्यों-ज्यों मानव ने तरक्की की उसे स्वयं को प्रकृति से ऊपर मानना शुरू कर दिया। स्वयं को सर्वोपरि मानने की मंशा जब मनुष्य के अंदर इस तरह व्याप्त हो जाती है तो फिर इस तरह के विनाशकारी परिणामों को हम सभी को भुगतने को तैयार रहना ही होगा।

देश व प्रदेश में समय-समय पर आयी आपदाएं इसके ठोस उदाहरण हैं। प्रदेश में हाल ही में हुई बादल फटने की घटनाएं हो या फिर आसमान से बरसती आग, मनुष्य इन सब घटनाओं के घटित होने के कुछ समय तक याद रखता है और फिर वापिस उसी राह पर लौट आता है। भीषण गर्मी में आसमान से बरसती आफत से प्रकृति ने मनुष्य को चेताने की कोशिश की कि पेड़ों को न काटा जाये। आवश्यक होने पर एक पेड़ काटे तो कम से कम 20 पेड़ लगाएं लेकिन मनुष्य ने जंगल के जंगल जला दिए।

अपने स्वार्थ के लिए धधकते जंगलों में उन पक्षियों व जीव-जन्तुओं को भी नहीं छोड़ा जो अपना आशियाना बनाकर इन जंगलों में रह रहे थे। आखिर स्वार्थ पूर्ति के लिए मनुष्य किस-किस की बलि लेगा। प्रकृति ने दोनों ही स्थितियों में मनुष्य को इसका दंड दिया है लेकिन मनुष्य इसे समझने को तैयार नहीं है।

हिमाचल प्रदेश में हाल ही में शिमला, मंडी, कुल्लू में आसमान से बरसती आफत और बादल फटने की घटनाओं में कितने लोगों ने अपनी जान गवां दी।

गत वर्ष भी बरसात ने हिमाचल में भीषण तांडव मचाया था। इस भीषण आपदा में 450 से अधिक लोग काल का ग्रास बने। प्रदेश को करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ। ताश के पत्तों की तरह मकान ढह गए, हजारों लोग बेघर हो गए। आपदा के बाद से कुल्लू-मनाली में होटल और होम स्टे पर बंद हो गए।

आपदा में कुल्लू में 565 घर पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए। ब्यास व पार्वती नदी में भयानक बाढ़ से मनाली, पारला भुंतर, मणिकर्ण व सैंज में भारी नुकसान हुआ। शिमला के समरहिल शिव बावड़ी हादसे में 20 लोगों को काल ने निगल लिया। सिरमौर जिला के पांवटा साहिब के सिरमौरी ताल में 9 अगस्त, 2023 की रात बादल फटने से एक परिवार के पांच सदस्यों की मलबे में दबकर मौत हो गई। हादसे में दादा, दादी, पोती, पोते और बहू की मौत हुई थी।

इन सभी मार्मिक घटनाओं को हम भी भूले भी नहीं थे कि प्रदेश में एक बार फिर ऐसी ही आपदाएं आ धमकी और रामपुर के समेज व कुल्लू के बागीपुल में भारी जान-माल का नुकसान हुआ। इन सभी घटनाओं के पीछे विकास का अवैज्ञानिक मॉडल है। ये आपदाएं विकास के विकराल नमूनों के रूप में आज हमारे सामने हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण इस वर्ष प्रदेश में पड़ी प्रचंड गर्मी के बीच ऊना का तापमान पहली बार अधिकतम तापमान 46 डिग्री तक पहुंच गया। शिमला सहित कांगड़ा और सोलन में पारा चढ़ने से 11 साल और धर्मशाला में 35 साल का रिकॉर्ड टूटा। बिलासपुर, हमीरपुर, कुल्लू, मंडी, ऊना, कांगड़ा, सिरमौर, सोलन और शिमला लू की चपेट में रहे। चंबा, लाहौल-स्पीति और किन्नौर में भी पारा बढ़ा है।

प्रकृति आज रौद्र रूप दिखाने को विवश हुई है। यह कहना उचित ही होगा कि यदि आज भी नहीं संभले तो आने वाले वर्षों में इससे भी भयानक स्थितियां पनप सकती हैं। बादल फटने, बाढ़ तथा भूस्खलन की घटनाओं पर हमें गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। समय रहते प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन रोकने की आवश्यकता है। तभी हम भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य की नींव रख सकते हैं।

कृषक मित्र

ड्रोन तकनीक का पशुपालन में योगदान

डॉ. कृष्णेन्द्र दिनेश
डॉ. दिनेश शर्मा

ड्रोन प्रौद्योगिकी में उपयोगकर्ताओं की बढ़ती रुचि ने इसके लिए उपयोग के नए क्षेत्र विकसित किए हैं। वर्तमान में वे कई क्षेत्रों जैसे चिकित्सा, सैन्य, पूर्वानुमान व निगरानी में व्यापक उपयोगों के साथ काम कर रहे हैं। कृषि एवं पशुपालन भी इससे अछूता नहीं रहा है। हाल के वर्षों में ड्रोन तकनीक पशु स्वास्थ्य और प्रबंधन में एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन गई है। पशुओं की स्वास्थ्य स्थिति की निगरानी, बीमारियों का शीघ्र उपचार, चरागाह क्षेत्रों की निगरानी, खोज, बचाव और पशु जनगणना जैसे विभिन्न क्षेत्रों में ड्रोन को उपयोगी माना गया है। हालांकि, ड्रोन प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग के लिए अभी भी कुछ चुनौतियों और सीमाओं को दूर करने की आवश्यकता है। पशुधन प्रबंधन अभी भी पारंपरिक कृषि प्रणालियों द्वारा संचालित किया जा रहा है और इसमें अभी भी नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने की जरूरत है। पशुपालन, आहार, स्वास्थ्य देखभाल, हरे चारे की उपलब्धता, अनाज इकट्ठा करना और बेचना इत्यादि कई कारकों पर निर्भर करता है। इन सभी गतिविधियों के साथ-साथ कर्मचारियों की निगरानी और काम-काज देखने में बहुत सारी ऊर्जा और समय खर्च होता है। समय की मांग है कि पशुधन पालन को कम श्रम गहन, कम समय लेने वाला और अधिक किफायती बनाया जाए। अपने असंख्य अनुप्रयोगों के साथ ड्रोन तकनीक इस अंतर को कम करने में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती है। इस अध्ययन में पशु स्वास्थ्य और प्रबंधन में ड्रोन तकनीक के उपयोग का विश्लेषण और प्रमुख उपयोगों पर चर्चा की गई है।

पशुधन प्रबंधन में प्रौद्योगिकी की आवश्यकता : पशुधन प्रबंधन एक समय लेने वाली प्रक्रिया है और इसके लिए उच्च निवेश की आवश्यकता होती है। निवेश पूंजी को कम करने और लाभ बढ़ाने के लिए नई तकनीकों का उपयोग किया जाता है। ये तकनीकें संपूर्ण प्रबंधन प्रक्रिया को आसान, समय बचाने वाली और लागतकुशल साबित बनाती हैं। इसका एक उदाहरण पशुधन प्रबंधन के लिए ड्रोन का उपयोग करना है।

पशुधन प्रबंधन में ड्रोन की भूमिका : ड्रोन दूर से नियंत्रित उड़ने वाली प्रणालियाँ हैं। ड्रोन के साथ, पशुपालक आसानी से झुंडों पर नजर रख सकते हैं और पशुधन प्रबंधन अधिक कुशलता से कर सकते हैं।

पशुधन निगरानी : पशुओं की प्रभावी निगरानी के लिए भी ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। ड्रोन किसानों को उनके पशुओं के स्वास्थ्य और स्थान के बारे में वास्तविक समय की जानकारी प्रदान कर सकते हैं। थर्मल सेंसर से लैस ड्रोन शरीर के तापमान में बदलाव का भी पता लगा सकते हैं एवं बीमार या घायल जानवरों की पहचान कर सकते हैं।

स्वास्थ्य की निगरानी करना

सैकड़ों जानवरों की मैन्युअल रूप से निगरानी करना चुनौतीपूर्ण है और उनकी स्वास्थ्य स्थितियों की निगरानी करना अधिक कठिन हो जाता है। हालांकि, आजकल ड्रोन का उपयोग पशुओं की स्वास्थ्य स्थितियों की निगरानी के लिए किया जाता है। कैमरों और थर्मल इमेजिंग स्कैनर से लैस, ये ड्रोन दूर से पशुओं की तस्वीरें लेने और तापमान, वजन, आकार और बाहरी बीमारियों जैसी महत्त्वपूर्ण स्वास्थ्य स्थितियों को मापने में सक्षम हैं। प्रारंभिक चरण में बीमारी का पता चलने पर समय पर दवा और टीकाकरण से जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है, जिससे पशुधन की हानि कम हो जाती है।

झुंड प्रबंधन : बड़ी संख्या में झुंड बनाए रखना और उन्हें भटकने से रोकना किसानों का एक कार्य है। इसे प्रबंधित करने के लिए अधिक मानव बल की आवश्यकता होती है। चरागाहों में झुंडों का प्रबंधन करने के लिए कैमरों वाले ड्रोन का उपयोग किया जाता है। ड्रोन झुंड में कुल पशुओं की संख्या की गिनती करने व रखरखाव में सहायक है। प्रत्येक जानवर पर नजर रखने से भटके हुए जानवरों को ढूंढने में ड्रोन मदद करता है। ड्रोन की आवाज पशुधन को सही दिशा में ले जाती है व पशुओं को भटकने से बचाती है। इससे समय और मानवीय प्रयासों की बचत होती है।

चरागाहों पर नजर रखना : प्रत्येक जानवर की सुरक्षा के लिए, चरागाह भूमि में और उसके आसपास जंगली जानवरों, जहरीले पौधों और बाड़ जैसे सभी संभावित खतरों को कम करना महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार पशुधन निगरानी में कृषि सुरक्षा बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। ड्रोन तकनीक का उपयोग चरागाहों पर नजर रखने के लिए किया जाता है। ड्रोन खेत पर संभावित खतरों की तस्वीरें स्कैन करते हैं और किसानों को खेत की सुरक्षा बनाए रखने और जंगली घास को रोकने में मदद करते हैं।

मवेशियों की गिनती एवं निगरानी : पशुधन की निगरानी के लिए ड्रोन का उपयोग धीरे-धीरे गति पकड़ रहा है। ड्रोन का उपयोग मवेशियों की संख्या गिनने के लिए किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति ड्रोन की मदद से दूर बैठे किसी भी स्थान का लाइव वीडियो देख सकता है।

प्राकृतिक आपदा में ड्रोन : जब प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़ इत्यादि में पशु फंस जाता है तो ड्रोन की मदद से उस तक आहार पहुंचाया जा सकता है। अभी हाल में हुई ताजा घटना में तमिलनाडु में कावेरी नदी के बीच सात कुतों का झुंड बाढ़ में फंस गया था व तीन दिनों से भूखा था और उन्हें बाढ़ से निकालने में समय लगना था। इसके लिए ड्रोन की मदद से कुतों तक भोजन साम्रगी पहुंचाई गई एवं उनकी जान बचाई गई।

पशु इलाज में ड्रोन : हिमाचल जैसे पर्वतीय क्षेत्र में ड्रोन का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। कई बार पशु चिकित्सक दल को दूर-दराज के क्षेत्रों में विशेषकर चरागाहों में जाकर पशुओं का ईलाज करना पढ़ता है और दवा पहुंचाने में समय लग जाता है। इसमें ड्रोन की मदद से तुरंत दवा अन्य उपकरण पहुंचा कर पशु का इलाज किया जा सकता है।

वैक्सीन पहुंचाने में ड्रोन का उपयोग : हिमाचल प्रदेश में विशेषकर भेड़-बकरियां दूर-दराज के क्षेत्रों में घास चरने के लिए चले जाते हैं और वहां सड़क की सुविधा भी नहीं होती है। पशुओं को समय पर वैक्सीन भी लगानी होती है ताकि उन्हें बीमारियों से बचाया जा सके। इसके लिए ड्रोन काफी कारगार है। इसके माध्यम से न सिर्फ पशु समूह को चिन्हित किया जा सकता है अपितु समय पर वैक्सीन भी उपलब्ध कराई जा सकती है। अरूणाचल प्रदेश में इस तरह की वैक्सीन पहुंचाने की सेवा भी शुरू हो चुकी है। हिमाचल प्रदेश के अधिकांश क्षेत्र पहाड़ी व दुर्गम हैं। यहां के किसान मुख्यतः पशुपालन पर निर्भर हैं। ड्रोन जैसी नई तकनीक प्रदेश में काफी कारगर साबित हो सकती है। यह तकनीक न सिर्फ पशु स्वास्थय के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सक्षम हो सकती है।

लोकप्रिय हो रही अरबी की बड़ियां

अरबी के तनों का उपयोग करके बड़ियों के रूप में पोषक खाद्य उत्पाद तैयार किया जाता है

कल्पना आर्य
कविता शर्मा

हिमाचल प्रदेश के निचले हिस्सों में कोलोकेसिया यानि अरबी बहुत प्रचलित है। अरबी एक ऐसी सब्जी है, जिसके जड़, पत्ते व तना तीनों ही हिस्से भोजन में शामिल किए जाते हैं। अरबी की पत्तियों का उपयोग सामान्य रूप से सब्जी के रूप में किया जाता है और विशेष रूप से लीफ रोल (पत्रोड़ा) नामक सबसे स्वादिष्ट हिमाचली स्नैक है। जबकि तने का उपयोग एक पोषित उत्पाद बड़िया बनाने के लिए माश यानि उड़द की दाल के साथ किया जाता है, अरबी के तनों का उपयोग करके बड़ियों के रूप में पोषक खाद्य उत्पाद तैयार किया जाता है उड़द दाल को रात भर या 4-5 घंटे भिगोकर पीस कर पेस्ट बना लेते है फिर इन तनों पर लम्बाई में समान रूप से उड़द दाल का पेस्ट लगा दिया जाता है, जिनको आधे सूखने पर छोटे टुकड़ों में काट दिया जाता हैं व विभिन्न व्यंजनों में भविष्य में उपयोग के लिए भंडारित रख लिया जाता है इन बड़ियों की प्रदेश में काफी लोकप्रियता है व डिमांड भी है क्योंकि ये पूरी तरह से जैविक है। दूसरे राज्यों में भी इनकी लोकप्रियता लोगों में जानकारी होने पर धीरे-धीरे बढ़ रही है।

मुख्य विशेषताएंः इसमें उपयोग न किए गए अरबी डंठल का उपयोग मूल्यवर्धक पौषटिक उत्पाद तैयार करने के लिए किया जाता है। विकसित उत्पाद एक बहुत ही सरल स्वदेशी तकनीक का उपयोग करके तैयार

किया गया और कम लागत वाला है जिसे आसानी से एक उद्यमी द्वारा अपनाया जा सकता है और बाजार में प्रचारित किया जा सकता है।

लाभ : सादी उड़द दाल को इसकी उच्च फाइटिक एसिड सामग्री के कारण अच्छा माना जाता है, जबकि तैयार किए गए नगेट्स (बड़ियां) किण्वन और प्रोबायोटिक फाइबर के कारण अधिक सुपाच्य होते हैं। बड़ियां रोजमर्रा के भोजन में स्वाद लाता है और इसे एक वर्ष तक संग्रहित किया जा सकता है। बड़िया बनाने की प्रौद्योगिकी को अब अनेक स्वयं सहायता समूहों द्वारा लघु उद्यम के रूप में अपनाया गया है जो उनकी आय का स्रोत बन रहा है। इससे स्थानीय उत्पादों का पारंपरिक मूल्य संवर्धन भी हो रहा है।

प्राकृतिक खेती किसानों के लिए लाभकारी

डॉ. संतोष कुमारी
अंकिता

प्राकृतिक खेती एक रसायन-मुक्त और पारंपरिक भारतीय कृषि पद्धति है। यह कृषि प्रणाली फसलों, पेड़ों और पशुधन को जैव विविधता के साथ एकीकृत करती है जो गाय के गोबर-मूत्र पर आधारित है। इस खेती के प्रमुख उद्देश्यों में प्राकृतिक वनस्पतियों व जीवों का संरक्षण, पोषक तत्त्वों के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देकर मिट्टी की उर्वरता बहाल करना, मिट्टी, हवा व पानी का कुशल उपयोग, कृषि उत्पादन लागत कम करना व किसानों की अर्थव्यवस्था में सुधार करना शामिल है।

बीजामृत : पांच किलो देसी गाय का गोबर लें और उसे एक सूती कपड़े में लपेट लें। बाल्टी में 20 लीटर पानी लें और कपड़े में लपेटा हुआ पांच किलो गोबर उसमें डुबो दें। इसे 12 से 16 घंटे के लिए छोड़ दें ताकि गोबर का अर्क पानी में आ जाए। एक लीटर पानी वाले दूसरे बर्तन में 50 ग्राम चूना लें। अब उपरोक्त दोनों तैयारियों को मिलाएं और इसमें 50 ग्राम राइजोस्फेरिक मिट्टी मिलाएं। इसमें पांच लीटर गौमूत्र मिलाएं और तैयार घोल को 8-12 घंटे के लिए छोड़ दें। फिर किसी भी फसल के बीज में बीजामृत मिलाएं। उन्हें हाथ से मिलाकर कोट करें।

इन्हें अच्छी तरह सुखा लें और बुआई के लिए इस्तेमाल करें। फलियां और अन्य पौधों के बीज जिनके बीज की परत पतली होती है, बीज रखने के लिए हमेशा बांस की टोकरी का उपयोग करें और उन्हें बीजामृत के घोल में डुबोएं और उपचारित बीजों को छाया में सूखने दें।

जीवामृत : एक एकड़ खेत के लिए एक बैरल में 200 लीटर पानी लें। पानी से भरे उपरोक्त बैरल में दस लीटर गोमूत्र, अधिमानतः देसी गाय का मूत्र डालें। उपरोक्त घोल में दस किलो गाय का गोबर, दो किलो गुड़ और दो किलो दाल का आटा, अधिमानतः बेसन, मिलाएं। उपरोक्त घोल में मुट्ठी भर राइजोस्फेरिक मिट्टी मिलाएं। उपरोक्त सभी सामग्रियों को लकड़ी की छड़ी का उपयोग करके दक्षिणावर्त दिशा में घुमाकर अच्छी तरह से हिलाएं। बैरल को जूट बैग से ढक कर रखें। इस घोल को छाया में किण्वन के लिए 48 घंटे तक स्थिर रखें। इस घोल को दिन में दो बार किसी मोटी लकड़ी की छड़ी से हिलाएं। जीवामृत की पोटली तैयार करके छाया में रख लें। जीवामृत को सीधे धूप या बारिश के संपर्क में न रखें। जीवामृत घोल का उपयोग इसकी तैयारी के 14 दिनों के भीतर करें। एक एकड़ भूमि में सिंचाई के समय 200 लीटर जीवामृत का प्रयोग करें। इस मिश्रण को किसानों को बुआई के 15 दिन बाद से हर 15 दिन में लगाना चाहिए।

प्राकृतिक खेती का उद्देश्य वनस्पतियों व जीवों का संरक्षण, पोषक तत्त्वों के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देकर मिट्टी की उर्वरता बहाल करना, कृषि उत्पादन लागत कम करना व किसानों की अर्थव्यवस्था में सुधार करना है।

घनजीवामृत : गाय का 100 किलो अच्छी तरह सूखा हुआ गोबर लें और इसे एक पतली परत के रूप में जमीन पर समान रूप से फैलाएं। पहले से तैयार जीवामृत (10 प्रतिशत गाय के सूखे गोबर की दर से) लगभग 10 लीटर को 100 किलो गोबर की पतली परत पर छिड़कें जो जमीन पर समान रूप से फैला हुआ है। छिड़के हुए जीवामृत को फावड़े की सहायता से गाय के सूखे गोबर में मिला दें। सूखने के बाद गाय के सूखे गोबर को मोटी लकड़ी की सहायता से पाउडर बना लें और जूट के थैलों में भरकर कमरे में रख दें। प्रति एकड़ 200 किलोग्राम घनजीवामृत का उपयोग खेत की तैयारी के समय या बीज बोने के समय छिड़काव करके करें। फूल आने पर दो फसल लाइनों के बीच की मिट्टी में 50 किलोग्राम घनजीवामृत डालें।

मल्चिंग : यह ऊपरी मिट्टी को पौधों की सामग्री जैसे पत्तियों, घास, टहनियों, फसल अवशेष और पुआल आदि से ढकने की प्रक्रिया है। प्राकृतिक खेती में मल्चिंग शब्द का तात्पर्य जैविक और बायोडिग्रेडेबल पौधे सामग्री के उपयोग से है। मल्चिंग के कई फायदे हैं जैसे गीली घास सामग्री का अपघटन मिट्टी में कार्बनिक की मात्रा को बढ़ाने में मदद करता है, मिट्टी के तापमान को कम करके मिट्टी में नमी का संरक्षण करता है, मिट्टी के कटाव को और खरपतवार की वृद्धि को भी रोकता है।

व्हापासा : इसका अर्थ है मिट्टी के दो कणों के बीच की खाली जगह में 50 प्रतिशत वायु और 50 प्रतिशत जलवाष्प का मिश्रण। यह मिट्टी का माइक्रोक्लाइमेट है जिस पर मिट्टी के जीव और जड़ें अपनी अधिकांश नमी और कुछ पोषक तत्वों के लिए निर्भर करती हैं। यह पानी की उपलब्धता बढ़ाता है, जल-उपयोग दक्षता बढ़ाता है और सूखे की स्थिति में फसल की वृद्धि में मदद करता है। व्हापासा निर्माण का मूल सिद्धांत यह है कि दिन के समय दोपहर 12 बजे बने किसी भी पौधे या वृक्ष की छाया परिधि से छह इंच बाहर सिंचाई की जानी चाहिए।

कीट व रोग प्रबंधन

नीमास्त्र : एक ड्रम में 200 लीटर पानी लें और उसमें दस लीटर गोमूत्र मिलाएं। फिर इसमें दो किलो देसी गाय का गोबर मिलाएं। इसके बाद, इसके छोटे तने या शाखाओं के साथ दस किलो कुचली हुई नीम की पत्तियां डालें। उपरोक्त सभी सामग्री को एक मोटी लकड़ी की छड़ी से दक्षिणावर्त दिशा में हिलाएं। ड्रम को बोरे से ढक दें। धूप व बारिश के संपर्क से बचने के लिए नीमास्त्र तैयार करें और छाया में रखें। इसे रोज सुबह व शाम एक मिनट घड़ी की सुई की दिशा में हिलाएं। 48 घंटों के बाद, घोल को छान लें व उपयोग के लिए स्टोर कर लें। नीमास्त्र बिना पानी मिलाये प्रयोग करें।

ब्रह्मास्त्र : एक बर्तन में 20 लीटर गौमूत्र लें। नीम, करंज, सीताफल, धतूरा, अरंडी, आम और लैंटाना में से किन्हीं पांच पत्तियों का पेस्ट मिलाएं। इस सामग्री को धीमी आंच पर उबालें और छाया में 48 घंटे तक ठंडा होने दें। एक मिनट के लिए दिन में दो बार सामग्री को दक्षिणावर्त दिशा में हिलाएं। 48 घंटे के बाद घोल को छान लें और भविष्य में उपयोग के लिए मिट्टी के बर्तन में रख दें। एक एकड़ खेत में खड़ी फसल पर छह लीटर ब्रह्मास्त्र को 200 लीटर पानी में घोलकर पूर्ण स्प्रे के रूप में उपयोग करें।

अग्निअस्त्र : किसी बर्तन में 20 लीटर गौमूत्र लें। इसमें दो किलो नीम की पत्तियों का पेस्ट, 500 ग्राम तंबाकू पाउडर, 500 ग्राम हरी मिर्च का पेस्ट, 250 ग्राम लहसुन का पेस्ट मिलाएं। इसे धीमी आंच पर उबालें और छाया में 48 घंटे तक ठंडा होने दें। इसे दिन में दो बार एक मिनट के लिए दक्षिणावर्त दिशा में हिलाएं। घोल को छान लें और उपयोग के लिए मिट्टी के बर्तन में रख दें। एक एकड़ खेत में खड़ी फसल पर छह लीटर अग्निआस्त्र को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रयोग करें।

मानवता

आपसी समझदारी और समर्थन भाव रखना ही इंसानियत

हम सब कुछ बन गए और एक इंसान नहीं बने, तो कुछ भी नहीं बने। अगर हम अपनी सारी क्षमताओं और उपलब्धियों को एक तरफ रख दें, लेकिन अपनी इंसानियत को नहीं संजोए, तो वास्तव में हमारी पूरी यात्रा अधूरी रह जाती है। किसी की परिस्थिति को समझने और उससे संबंधित होना इंसानियत की एक महत्त्वपूर्ण निशानी है। जब हम दूसरों की समस्याओं और चुनौतियों को समझने की कोशिश करते हैं, तो हम एक संवेदनशील और सहानुभूति से भरे हुए व्यक्ति बनते हैं, बल्कि हमें यह भी एहसास होता है कि हमारी अपनी समस्या कितनी छोटी हो सकती हैं। दूसरों की स्थिति और अनुभवों को समझना हमें अधिक सहानुभूतिशील और करुणामय बनाता है। यह हमें न केवल बेहतर इंसान बनाता है, बल्कि हमें समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा भी देता है। इंसानियत का सार वास्तव में यही है कि हम एक-दूसरे की परिस्थितियों, दुःखों और खुशियों को समझें और उनके प्रति संवेदनशीलता दिखाएं।

हमारे विकास और उपलब्धियों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि हम एक इंसान के रूप में क्या हैं। यह विचारशीलता, संवेदनशीलता, और एक-दूसरे के प्रति सम्मान और दया की भावना को समेटना है। जब हम अपनी इंसानियत को प्राथमिकता देते हैं, तो हम सच्चे मायनों में जीने लगते हैं और हमारे कार्यों में एक गहरी अर्थपूर्णता आ जाती है। इस दृष्टिकोण से सच्चे अमीर और सफल वही हैं जो अपने जीवन में पूर्णता और मानवता को महत्त्व देते हैं, न कि केवल बाहरी उपलब्धियों या स्वार्थ को। भावनाएं एक व्यक्ति की अंतरात्मा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती हैं, जो हमारे अनुभवों और संबंधों को गहराई प्रदान करती हैं। उनकी सच्ची समझ के लिए हमें अपनी संवेदनशीलता को जागृत करना पड़ता है और दूसरे के अंतर्मन को जानने का प्रयास करना पड़ता है। जब हम यह कर पाते हैं, तो हम न केवल अपने जीवन को समृद्ध करते हैं, बल्कि दूसरों के साथ भी एक गहरे स्तर पर जुड़ पाते हैं। अक्सर हम अपनी अपेक्षाओं और इच्छाओं को पूरा न होने पर निराश हो जाते हैं, जबकि हम यह नहीं सोचते कि कितने लोग हमारे कामों, हमारे व्यवहार, और हमारी क्षमताओं से उम्मीदें रखते हैं। जब हम अपनी समस्याओं और असफलताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि हमारे पास दूसरों के प्रति भी जिम्मेदारियां हैं। यह समझ कि हमसे कितने लोग उम्मीद रखते हैं और उनके प्रति हमारी जिम्मेदारी है, हमें अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार बना सकती है। यह समझ हमें न केवल व्यक्तिगत स्तर पर प्रभावित करती है, बल्कि सामूहिक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। समाज में सकारात्मक बदलाव और सुधार तब ही संभव है जब हम एक-दूसरे के साथ समझदारी और समर्थन के साथ पेश आते हैं। इंसानियत का मतलब है कि हम दूसरों की

> **सहयोग का मतलब सिर्फ साथ काम करना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की मदद करना और विचारों का आदान-प्रदान करना भी है। जब भलाई और मदद बिना किसी स्वार्थ, लालच या अपेक्षा से की जाती है, तो इसका प्रभाव और अधिक गहरा और वास्तविक होता है।**

✍ **मुनीष भाटिया**

भावनाओं और स्थिति को समझने का प्रयास करें, उनकी सहायता करें, और एक बेहतर समाज की दिशा में मिलकर काम करें।

यह मान लेना कि केवल हम ही किसी खास काम को सही तरीके से कर सकते हैं, वास्तव में एक भ्रम हो सकता है। आज के समय में इतने सारे विकल्प और संसाधन उपलब्ध हैं कि बहुत सारी समस्याओं के समाधान या काम करने के तरीके अलग हो सकते हैं। यह मान्यता कि 'हम ही सब कुछ कर सकते हैं।' कभी-कभी आत्म-सीमा की ओर इशारा करती है। हम सभी अपनी-अपनी जगह महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि अन्य लोग भी उन समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं, जिन्हें हम अभी तक नहीं सुलझा पाए हैं। यह दृष्टिकोण हमें और अधिक खुला और सहायक बनाता है और समस्याओं को सुलझाने में नए और प्रभावी तरीकों को अपनाने में मदद करता है। जब लोग मिलकर काम करते हैं और एक-दूसरे के दृष्टिकोण और भावनाओं की कद्र करते हैं, तो इससे न केवल काम की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि आपसी विश्वास और समझ भी बढ़ती है।

सहयोग का मतलब सिर्फ साथ काम करना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की मदद करना और विचारों का आदान-प्रदान करना भी है। जब भलाई और मदद बिना किसी स्वार्थ, लालच या अपेक्षा से की जाती है, तो इसका प्रभाव और अधिक गहरा और वास्तविक होता है। ऐसी भलाई न केवल दूसरों के दिल को छूती है, बल्कि हमें भी आत्मिक संतोष और खुशी देती है। स्वार्थ और लालच से मुक्त होकर की गई मदद में एक सहजता और ईमानदारी होती है, जो इसे और अधिक मूल्यवान बनाती है। इस तरह की भलाई से न तो किसी के प्रति एहसान जताने की ज़रूरत होती है और न ही किसी प्रकार की मनवाने की प्रवृत्ति होती है। यह मदद खुद में एक पुरस्कार होती है, और इससे दोनों पक्षों को सच्ची खुशी और संतोष प्राप्त होता है। जब हम बिना किसी अपेक्षा के किसी की मदद करते हैं, तो यह दिखाता है कि हम अपने मूल्यों और मानवता के प्रति सच्चे हैं। यह न केवल हमारे संबंधों को मजबूत करता है बल्कि हमें आत्मिक रूप से भी अमीर बनाता है। समरसता हमें यह सिखाती है कि हर व्यक्ति की भावनाएं और विचार महत्त्वपूर्ण हैं और हमें उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। यह हमारे जीवन में संतुलन और शांति लाता है और हमारे संबंधों को मजबूत और सार्थक बनाता है।

हमारी स्थिति और हमारी अपेक्षाओं की तुलना में, दूसरों की उम्मीदें भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। जब हम दूसरों की उम्मीदों और विश्वास को पूरा करने की कोशिश करते हैं, तो हम न केवल अपने रिश्तों को मजबूत करते हैं बल्कि एक जिम्मेदार और प्रभावशाली इंसान भी बनते हैं। किसी की परिस्थिति से रूबरू होना और उसके दर्द, संघर्ष या खुशी को समझना ही इंसानियत का मूल है। जब हम दूसरों की भावनाओं और परिस्थितियों को समझने का प्रयास नहीं करते, तो हम अपनी इंसानियत का एक महत्त्वपूर्ण पहलू खो देते हैं। एक सच्चे इंसान होने का मतलब है कि हम न केवल अपने अनुभवों के लिए संवेदनशील हों, बल्कि दूसरों की भावनाओं

चमत्कार के लिए विख्यात शिकारी देवी

वैसे तो हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन यहां अनेक पर्यटन स्थल ऐसे हैं, जो धार्मिक दृष्टि से भी सुप्रसिद्ध हैं। ऐसा ही प्रदेश के मंड़ी शहर के आस पास की सबसे ऊंची चोटियों पर स्थित शिकारी देवी का मंदिर है। इसे अपनी राजसी भव्यता के कारण मंड़ी का मुकुट भी कहा जाता है। शिकारी चोटी पर शिकारियों की देवी शिकारी माता का एक छत रहित मंदिर है। माना जाता है कि मंदिर की स्थापना पाण्ड़वों ने की थी। समुद्रतल से लगभग 3359 मीटर की ऊंचाई पर स्थित शिकारी देवी मंदिर को करसोग से लगभग 21 किलोमीटर अथवा आनी-नगान-श्वाड़-छतरी होकर जंजैहली से 16 किलोमीटर सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। छतरी से आगे सड़क खराब होने के कारण अपने वाहन से थोड़ी परेशानी अवश्य आ जाती है। मंड़ी शहर से लगभग 91 किलोमीटर दूर शिकारी देवी के रास्ते में घने जंगल, विशाल हरे-भरे चरागाह मन को मोह लेते हैं।

सर्दियों के दिनों में इस स्थान पर बहुत अधिक बर्फ पड़ती है, परन्तु देवी की मूर्ति के ऊपर बर्फ टिकती नहीं है। कहा जाता है कि मार्कण्ड़ेय ऋषि ने भी कई वर्षों तक यहां तपस्या की थी। यह देखा गया है कि इस तथ्य के बावजूद कि मंदिर की कोई छत नहीं है, फिर भी यहां सर्दियों में बर्फ नहीं जमती, जबकि मंदिर के आस-पास का पूरा क्षेत्र कई फुट बर्फ से ढका रहता है। मंदिर पहुंचने के लिए लगभग 550 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। स्थानीय किंवदंती है कि शिकारी माता का इतिहास द्वापर युग से जुड़ा है, जब महाभारत का युद्ध पाण्डवों व कौरवों के बीच लड़ा गया था। इस स्थान का उल्लेख मार्कण्डेय पुराण में भी मिलता है। शिकारी माता मूल रूप से आदिशक्ति है और पाण्डवों के सामने तब प्रकट हुई, जब वे दुर्योधन के साथ जुआ खेल रहे थे। देवी वहां एक साधारण महिला के रूप में चमत्कारिक रूप से प्रकट हुई थी और माता ने पाण्ड़वों को चेतावनी दी थी कि अगर वे जुआ खेलना जारी रखते हैं, तो वे सब कुछ खो देंगे और भिखारी बन जाएंगे। चूंकि देवी एक साधारण महिला के वेश में प्रकट हुई थी, इसलिए पाण्डवों ने उनकी परवाह नहीं की, बल्कि माता को वहां से चले जाने को कहा। देवी विफल होकर चली गई, परिणामस्वरूप पाण्डवों को 13 वर्ष तक वनवास हो गया। ऐसा भी कहा जाता है कि वनवास के दौरान पाण्डव शिकारी देवी क्षेत्र में रूके थे।

एक दिन पांडव शिकार के लिए जंगल में गए थे, जहां उन्हें एक सुन्दर हिरण दिखाई दिया। पांडवों ने कई घण्टों तक हिरण का पीछा किया, लेकिन वे इसका शिकार नहीं कर पाए और हिरण रहस्यमय तरीके से जंगल में गायब हो गया। रात के समय पाण्डवों ने शिकारी पहाड़ी पर एक महिला की आवाज सुनी, जो कह रही थी कि वह वही महिला है, जो एक साधारण महिला के रूप में आई थी और दुर्योधन के साथ जुआ खेलते समय उन्हें चेतावनी दी थी। अगर आप अपना राज्य वापिस पाना चाहते हो, इस जगह की खुदाई करो और लोगों की पूजा के लिए उसकी प्रतीकात्मक मूर्तिओं व पत्थरों की छवियों को खोजो, ताकि उनकी इच्छाएं पूरी हो सके। एकाएक पाण्डवों को अपनी मूर्खता का एहसास हुआ। उन्होंने देवी के निर्देश का पालन किया और खुदाई करते हुए नीचे पत्थर की मूर्तियां प्राप्त की। उन्होंने देवी की इच्छानुसार एक छत रहित मंदिर का निर्माण किया। इसी कारण देवी को शिकारी माता के रूप में जाना जाता है, क्योंकि देवी पाण्डवों को शिकार जाने के दौरान पहाड़ियों में प्रकट हुई थी। तत्पश्चात पाण्डवों ने खोया हुआ राज्य वापिस ले लिया। तब से देश के हजारों लोग शिकारी माता का आर्शीवाद लेने के लिए इस मंदिर में आते हैं। माता सबकी मनोकामना पूर्णकरती है। इस मंदिर में 3 पूजारी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यहां ठहरने के लिए सराय भी बनी है। पूजारी खेम राज ने बताया कि 15 नवम्बर से 15 मार्च तक मंदिर आधिकारिक रूप से बंद हो जाता है।

✍ **पन्ना लाल शर्मा**

पर्यावरण

वृक्ष पूजन की परम्परा में 'एक पेड़ माँ के नाम'

'शैली डालिए तू किहां बढणी इक तेरा पाप लगदा' अर्थात् वृक्ष की हरी टहनी को काटने से पाप लगता है। सूर्यास्त के बाद पौधे को नहीं छूना, यह पौधों के सोने का समय है, फूल पत्ती नहीं तोड़ना, यह हमारी संस्कृति रही है। देवभूमि हिमाचल में हर चौराहे पर चबूतरे के बीच में सजा पीपल और बड़ का पेड़ असंख्य लोगों को छाया देता है

✍ **हितेन्द्र शर्मा**

और दिन-रात ऑक्सीजन देकर सबके जीवन की रक्षा भी करता है। तभी तो लोग धार्मिक अनुष्ठानों की परंपरा में पीपल के पेड़ को पवित्र धागों से बांधते हैं। उसकी परिक्रमा करते हैं, जल चढ़ाते हैं हर रोज। यह हमारी परंपरा का एक हिस्सा रहा है और जीवन का एक नित्य कर्म भी। हिमाचल में अनेकों देवी देवताओं का निवास पेड़ों पर है। कहीं-कहीं पेड़ भी देवता के रूप में पूजे जाते हैं। असंख्य मंदिर, स्थानीय देवी-देवता, मूर्तियां पेड़ों के नीचे रखकर आस्था और श्रद्धा से पूजी जाती हैं।

अब बरसात आने पर हर वर्ष एक दो सप्ताह के लिए पौधारोपण किया जाता है। वन विभाग और विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा भी पौधारोपण किया जाता है। परंतु अगले वर्ष तक न फिर पौधे दिखते हैं, न हरियाली। हां, सैकड़ों वर्षों पुराने पेड़ मकानों, सड़कों और अन्य विकास परियोजनाओं के लिए काट लिए जाते हैं और नए पौधे लगते नहीं हैं।

इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है कि शिमला जैसे स्थान पर सैकड़ों वर्ष पुराने देवदार और बान के पेड़ मकान के लिए खतरा बता कर काट दिए गए हैं और उनके स्थान पर स्मार्ट सिटी के नाम पर सड़क के किनारों पर डंगों पर छोटे-छोटे गमलों में पौधे लगाए गए हैं, जिन पर करोड़ों रुपये खर्च किया गया है। स्मार्ट सिटी में कुछ पार्क भी बनाए गए वहां भी पौधरोपण हुआ लेकिन अब न पार्क दिखाई दे रहे हैं न पौधे।

इधर 'एक पेड़ माँ के नाम' यह नारा भी खूब चल निकला, कुछ लोग ईमानदारी से पौधरोपण भी कर रहे हैं। कई असंख्य चित्र तो ऐसे भी देखने में आ रहे हैं कि एक पौधा लगाने के लिए भारी भीड़ जमा हो जाती है। फोटो में पर्यावरण प्रेमी लोग ही दिखते हैं पौधा कहीं नजर नहीं आता। जबकि होना यह चाहिए कि जो पौधा हम लगाएं उसका संरक्षण भी हम करें। बराबर उसकी देखभाल की जाती रहे। अगर माँ के नाम पर पौधा लगाया गया है तो माँ की तरह उसकी सेवा भी होनी चाहिए। गर्मी, सर्दी, बरसात में उसकी पूरी तरह से देखभाल होती रहे तो वह पौधा कुछ वर्षों में विशाल पेड़ का आकार ले सकता है और पर्यावरण संतुलन के लिए नए जंगल उगाई जा सकते हैं। यह भी पौधरोपण के नाम पर दुर्भाग्य ही है कि ऐसे पौधे लगाए जा रहे हैं जो पर्यावरण और जलवायु की दृष्टि से अधिक उपयोगी नहीं हैं

पौधारोपण में तीन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए एक पौधा फल देने वाला हो, दूसरा उस पौधे से ईंधन मिल सके, तीसरा उसे पौधे की इमारती लकड़ी भी उपयोग में लाई जा सके। अन्यथा सड़कों के किनारे और जंगलों में छोटे-छोटे पौधे लगाकर पर्यावरण के साथ मजाक ही किया जा रहा है। इन पौधों से किसी का कुछ भला होने वाला नहीं है।

पीपल, बड़, आम, गिलोय, देवदार और बान के पेड़ ऑक्सीजन देते हैं। इसलिए पहले इन पौधों को घरों के समीप और वनों में लगाया जाता था। अतः ऑक्सीजन देने वाले पौधों को लगाया जाना चाहिए। इन पौधों से ही भूमि की कटाव से भी सुरक्षा होती है। भूमि को क्षरण से बचाया जा सकता है। चीड़ और सफेदा के पौधे पर्यावरण के लिए नुकसान देने वाले हैं। सफेदा के पौधे पानी को सुखाकर भूमि की नमी को कम कर देते हैं। चीड़ के पौधे पर्यावरण संतुलन को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं तथा गर्मी पैदा करते हैं।

पहले सड़कों के किनारे आम के वृक्ष लगाए जाते थे। फल भी, छाया भी और ईंधन की लकड़ी भी उनसे खूब मिलती थी। आज भी मैदानी इलाकों में सड़कों के दोनों किनारे आम के बड़े-बड़े वृक्ष दिखाई देते हैं, जिन्हें सड़कों को चौड़ा करने के लिए बेरहमी से काट दिया गया है और उनके स्थान पर गमले में छोटे-छोटे पौधे उगाए जा रहे हैं जो कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ है।

अगर हम इसी तरह से प्रकृति के साथ खिलवाड़ करते रहे, विकास और भवन निर्माण के नाम पर पेड़ों को काटते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब पहाड़ों में भी दिल्ली जैसे महानगरों की तरह ऑक्सीजन बार खोलने की नौबत आ जाएगी और 5-10 मिनट तक ऑक्सीजन लेने के लिए हजारों रुपए चुकाने होंगे। इसलिए सोचा जाना चाहिए कि हम किस ओर बढ़ रहे हैं! क्या प्रकृति का विनाश करके मनुष्य जी पाएगा? मानव संस्कृति जिंदा बच पाएगी! असंख्य पेड़ पौधों को काटने के साथ-साथ वन्य प्राणियों का जीवन समाप्त हो जाता है। पशुओं को चारा नहीं मिलता। पक्षियों को बैठने तथा घोंसला बनाने के लिए जगह नहीं मिलती और इन वर्षों में जहां पेड़-पौधों की असंख्य प्रजातियां खत्म हो गई हैं वहां पक्षियों की भी बहुत सारी प्रजातियां अब देखने को नहीं मिलती हैं। अब घर, गांव के आसपास सुबह के समय पक्षियों का कलरव नहीं सुनाई देता है।

अब केवल सड़कों पर दिन-रात दौड़ती गाड़ियों की आवाजें सुनाई देती हैं, जिससे पर्यावरण प्रदूषण होता है। प्रकृति का संतुलन नहीं बनता है। इसलिए अभी भी समय है कि मनुष्य को अपना जीवन बचाए रखने के लिए पेड़ पौधों को लगाना जरूरी है। खेत खलिहानों जंगलों निजी एवं सरकारी जमीनों में भी पौधारोपण किया जाना चाहिए ताकि मनुष्य और अन्य सभी प्राणियों के जीवन को बचाए रखने के लिए पर्याप्त और शुद्ध मात्रा में ऑक्सीजन मिल सके।

भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाली हैं माँ चिन्तपूर्णी

हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले में स्थित चिन्तपूर्णी देवी मंदिर एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। यह मंदिर सुंदर पहाड़ियों के बीच स्थित है और अपनी पवित्रता के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध है। हर साल यहां हजारों श्रद्धालु आते हैं, जो विश्वास करते हैं कि माँ चिन्तपूर्णी उनकी सभी परेशानियों को दूर कर देती हैं और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। मंदिर का शांत और मनमोहक वातावरण भक्तों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है, जो यहां आकर आध्यात्मिक शांति का अनुभव करते हैं। मंदिर के पुजारी मीठू कालिया का कहना है कि कई श्रद्धालु गहरी आस्था और भक्ति के कारण अपने घर से लेकर मंदिर तक नंगे पांव यात्रा करते हैं। उनका मानना है कि इस तरह की यात्रा से उन्हें माँ चिन्तपूर्णी की विशेष कृपा और शांति मिलती है। कई श्रद्धालु तो इतने समर्पित होते हैं कि वे अपने घर से लेकर मंदिर तक की पूरी दूरी लेट-लेटकर तय करते हैं। यह कठिन यात्रा उनकी अटूट श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक है। पुजारी जी बताते हैं कि श्रद्धालुओं का यह विश्वास है कि माँ चिन्तपूर्णी उनके हर कष्ट को दूर करेंगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। इसी आस्था के साथ वे कठिन से कठिन यात्रा भी पूरी कर लेते हैं।

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार ऐसा विश्वास किया जाता है कि सती चंडी की सभी दुष्टें पर विजय के उपरांत, उनके दो शिष्यों अजय और विजय ने सती से अपनी खून की प्यास बुझाने की प्रार्थना की थी। यह सुनकर सती चंडी ने अपना मस्तिष्क छिन्न कर लिया। इसलिए सती का नाम छिन्नमस्तिका पड़ा। मान्यता हैं कि अगर कोई भक्त देवी माता की सच्चे मन से प्रार्थना करता है तो चिन्तपूर्णी देवी उसके सभी कष्टों और विपत्तियों को हर लेती है। यह शक्ति स्थल भारतवर्ष के 51 शक्तिपीठों में से एक है। विष्णु को उनके शरीर को 51 भागों में काटना पड़ा, जो पृथ्वी पर गिरे और पवित्र स्थल बन गए। माँ छिन्नमस्तिका इस क्षेत्र में जलंधर दैत्य की आराधना से स्थापित हुई थीं। जलंधर दैत्य ने कठोर तपस्या करके त्रेता युग में छिन्नमस्तिका को चिंतपूर्णी में स्थापित किया था। उसके पश्चात मुगलों के अत्याचार व उनके द्वारा हिंदुओं के धार्मिक स्थलों को नष्ट कर देने से लोग इस शक्तिस्थल की महता को भूल गए। 1400वीं ई. में दुर्गा भक्त संत माईदास इस स्थान से गुजर रहे थे। तभी मां ने बाबा माईदास को साक्षात दर्शन देकर वहीं पर उनका मंदिर बनाकर आराधना करने के लिए कहा। बाबा माईदास ने निर्जन जंगल में माँ के कहे अनुसार जब एक पत्थर को उखाड़ा था तो उसके नीचे से पानी की धारा बह निकली। बाबा माईदास ने वहीं रहकर मां की पूजा-अर्चना शुरू कर दी। करीब 700 साल बाद भी बाबा माईदास के वंशज ही चिंतपूर्णी में पूर्व प्रचालित पूजा-अर्चना कर रहे हैं। कलियुग में तो मां का ध्यान करने मात्र से ही भक्तों की सारी चिंता दूर हो जाती है।

डॉ. नीलम शर्मा

भगवान शिव व पार्वती के तेज से उत्पन्न माँ छिन्नमस्तिका के समक्ष सच्चे मन से की गई मनोकामना पूरी होती है। जहां सदियों से माता श्री छिन्नमस्तिका देवी के चरण कमलों के पूजा करने के लिए भक्तों का तांता लगा रहता है। हम मनुष्यों की अनंत इच्छाएं होती हैं। इच्छाएं हमें चिंता और परेशानी की ओर ले जाती हैं। छिन्नमस्तिका माँ अपने भक्तों की सभी इच्छाएं पूरी करके उन्हें चिंताओं से मुक्त करती हैं। इसीलिए, उन्हें माता चिंतपूर्णी कहा जाता है।

किसी भी माँ की तरह, हमारी दिव्य माँ, माँ चिंतपूर्णी जी अपने बच्चों को पीड़ित नहीं देख सकती हैं। वह हमारे सभी दुखों को दूर करती हैं और हमें खुशियां प्रदान करती हैं। जो लोग माता चिंतपूर्णी के पास कामना लेकर आते हैं, वे खाली हाथ नहीं जाते। माता चिंतपूर्णी हर किसी पर अपना आशीर्वाद बरसाती हैं। चिंतपूर्णी मंदिर माता चिंतपूर्णी जी का निवास स्थान है। माता चिंतपूर्णी के दरबार में श्रद्धालु नंगे पांव आकर और लेट लेट कर माथा टेककर अपनी मनोकामनाएं पूरी होने की आस्था का प्रमाण प्रदान करते हैं।

श्रेष्ठ प्रदर्शन से मिलता है खिलाड़ियों को सम्मान

विश्व में प्रायः खेलों की अनेकों प्रतिस्पर्धाएं प्रतिवर्ष अलग-अलग नामों से आयोजित की जाती हैं। जिसमें ओलंपिक खेलों को खेलों के महाकुंभ का दर्जा दिया गया है। विश्व के प्रत्येक खिलाड़ी का सपना इन खेलों में भाग लेकर अपने तथा अपने राष्ट्र के लिए पदक जीतना रहता है। जुआन एंटोनियो समारांच अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के पूर्व अध्यक्ष के अनुसार,'खेल मित्रता है, खेल स्वास्थ्य है, खेल शिक्षा है, खेल जीवन है और खेल विश्व को एक साथ लाते हैं।' प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस 23 जून को मनाया जाता है। इस बार 2024 में इस दिवस की विषय, 'चलो चलें और जश्न मनाएं ('लेट्स मूव एंड सेलिब्रेट') था।' अंतरराष्ट्रीय खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का पदक तालिका में प्रदर्शन कोई ज्यादा उत्साहवर्धक नहीं रहा है। भारत का ओलंपिक खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हॉकी में रहा है जिसमें भारत ने 8 बार स्वर्ण पदक जीते हैं। पिछले टोक्यो ओलंपिक में हमारा 48वां स्थान था जबकि इस बार खिलाड़ियों के प्रशिक्षण एवं तैयारियों पर लगभग 500 करोड़ रुपये खर्च किये गए। पेरिस ओलंपिक में 117 सदस्यीय खिलाड़ियों की टीम वाले भारत ने केवल छह पदक जीते हैं, जिनमें एक रजत और पांच कांस्य शामिल हैं। वहीं मामूली वजन के चलते विनेश फोगाट स्वर्ण/रजत पदक से चूक गईं। संयुक्त राज्य अमेरिका 40 स्वर्ण, 44 रजत, 42 कांस्य पदकों और कुल 126 पदकों के साथ पहले स्थान पर रहा। अगले 34वें ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों का आयोजन 2028 में अमरीकी शहर लॉस एंजिल्स में होगा।

ओलंपिक खेलों का इतिहास काफी पुराना है लगभग 1200 वर्ष पूर्व प्राचीन ओलंपिक खेलों का आयोजन करवाया गया था। चूंकि यह खेल यूनान की राजधानी एथेंस के निकट ओलंपिया पर्वत के आसपास आयोजित किए गए थे। इसलिए 1896 में पुनः शुरू हुई इन खेलों का नाम भी ओलंपिक खेल रखा गया था। जिसमें उत्तरोत्तर बदलावों को लाकर इन खेलों को बेहद आकर्षक, रोमांचक एवं प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जाता रहा है। ओलम्पिक खेलों के जनक बेरोन पियरे डी कोबर्टीन के सुझाव पर 1913 में ओलम्पिक ध्वज का सृजन हुआ था और जून 1914 में इसका विधिवत उद्घाटन पेरिस में हुआ था। इस ध्वज को सर्वप्रथम 1920 के एंटवर्प ओलम्पिक में फहराया गया। ध्वज की पृष्ठभूमि सफेद है, सिल्क के बने ध्वज के मध्य में ओलम्पिक प्रतीक के रूप में पांच रंगीन एक दूसरे से मिले हुए छल्ले दर्शाये गए हैं जो विश्व के 5 महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही निष्पक्ष एवं भेदभाव से मुक्त स्पर्धा का प्रतीक भी हैं। नीला चक्र यूरोप, पीला चक्र

एशिया, काला चक्र अफ्रीका, हरा चक्र ऑस्ट्रेलिया और लाल चक्र उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका महाद्वीपों को दर्शाता है। सन् 1897 में फादर डिडोन द्वारा लेटिन भाषा में रचित

भारत का ओलंपिक खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हॉकी में रहा है, जिसमें भारत ने 8 बार स्वर्ण पदक जीते हैं। पिछले टोक्यो ओलंपिक में हमारा 48वां स्थान था जबकि इस बार खिलाड़ियों के प्रशिक्षण एवं तैयारियों पर लगभग 500 करोड़ रुपये खर्च किये गए।

'सिटियस, अल्टीयस, फोर्टियस' को ओलम्पिक के उद्देश्य के रूप में अपनाया गया था जिसका अर्थ है तेज, ऊंचा, बलवान। इसको पहली बार 1920 में ओलम्पिक के उद्देश्य के रूप में एंटवर्प (बेल्जियम) ओलम्पिक खेलों में प्रस्तुत किया गया था। इसी के साथ ओलम्पिक मशाल को जलाने की शुरुआत 1928 से एम्स्टर्डम ओलम्पिक से हुई थी। 1936 में बर्लिन ओलम्पिक में मशाल के वर्तमान स्वरूप को अपनाया गया था। उसी समय से मशाल को आयोजन स्थल तक लाने का प्रचलन भी शुरू हुआ। इस बार पेरिस ने तीसरी बार 1900, 1924 और 2024 में 33वें ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों की मेजबानी की है। पेरिस ओलंपिक में 32 खेलों की 48 विधाओं की स्पर्धाओं के लिए 329 पदक दांव पर रहे। जिसमें 206 देशों के लगभग 10500 खिलाड़ियों ने भाग लिया। वर्ष दर वर्ष भारत में खेलों के उन्नयन एवं खिलाड़ियों की नई पौध को तैयार करने के दावे किए जाते रहे हैं लेकिन स्कूली स्तर पर खिलाड़ियों की नर्सरी तैयार करने के दावे अभी भी फीके ही हैं। गांव, कस्बों में तो कोच, खेल परिसर, खेल मैदानों, जिम एवं अन्य सुविधाओं का नितांत अभाव है ही वही खेलों को एक कॅरियर चॉइस के रूप में अपनाने के लिए युवाओं को तैयार करने के लिए समयबद्ध तैयारी एवं खुले मन से धन आवंटन की दरकार भी है।

इस कटु सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आज बड़ी संख्या में युवा वर्ग नशीले पदार्थों के सेवन से अपनी शारीरिक एवं मानसिक सेहत से खिलवाड़ कर रहा है, जिससे उनके घरवाले एवं समाज अलग परेशान है। पुलिस नशीले पदार्थों के व्यापार में संलग्न लोगों पर पूरी तरह से नकेल कसने में कामयाब नहीं हो पा रही है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है कि केंद्र एवं राज्य सरकारें युवाओं की ऊर्जा को खेलों एवं अन्य साहसिक गतिविधियों में नियोजित करने के लिए मुक्त हस्त से बजट आबंटन कर पंचायत स्तर तक खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढ़ांचा तैयार करें और गांव से राष्ट्र स्तर तक योग्य प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पौध तैयार करने पर निवेश करें। जरूरत है खिलाड़ियों को अच्छे खेल प्रशिक्षक, बेहतरीन खेल सुविधाएं मिले, अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेल उपकरण, पौष्टिक खाना, सुरक्षित भविष्य की गारंटी और रहने-ठहरने का सुरक्षित परिवेश मिले तो हमारे खिलाड़ी भी किसी से उन्नीस साबित नहीं होंगे। खेलों को यदि रोजगार प्रदाता क्षेत्र के रूप में भी देखें तो 'स्पोर्ट्स फिजिकल एजुकेशन फिटनेस एंड लेजर स्किल्स काउंसिल' के अनुसार, भारत में खेलों को बढ़ावा देने से हमारे देश के भीतर खेल और शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में 43,71,675 से ज्यादा लोगों के लिए रोजगार के अवसर बन सकते हैं। इनमें स्पोर्ट्स साइंस एंड टेक्नोलॉजी, स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, स्पोर्ट्स कोचिंग, स्पोर्ट्स टीचिंग, स्पोर्ट्स इवेंट मैनेजमेंट और स्पोर्ट्स मैन्युफैक्चरिंग आदि क्षेत्रों में रोजगार के मौके बढ़ेंगे। इस लिहाज से देखें तो आने वाले वर्षों में खेलों में निवेश से नई उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं।

अनुज कुमार आचार्य

संस्कृति

भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग चंदरूआं

चंदरूआं सुरक्षा का सूचक है, चंदरूआं अभेद्यता का सूचक है, चंदरूआं अनिष्टता से बचाव का सूचक है, चंदरूआं सुख की घड़ी का हिस्सा भी है और चंदरूआं दुःख की घड़ी का हिस्सा भी। चंदरूआं कभी लाल रंग का हो जाता है कभी पीले रंग का और कभी सफेद रंग का होकर अनुष्ठान और आनुष्ठानिक की रक्षा में प्रस्तुत हो जाता है।

चंदरूआं शब्द आपने सुना ही होगा। चंदरूएं के नीचे बैठे भी होंगे, देवाधिदेव भी सुमिरत किए होंगे, हंसी ठिठोली भी की होगी, दान भी दिया होगा, प्राप्त भी किया होगा और दानी भी बने होंगे। चंदरूएं के आसपास आपने कई भाव जीए होंगे कई कल्पनाएं की होंगी, कई लोगों को याद किया होगा, कई नए लोग भी आपके जीवन में आए होंगे चंदरूएं की सुरक्षा

दुर्गेश नंदन

तले। चंदरूआं सुरक्षा का सूचक है, चंदरूआं अभेद्यता का सूचक है, चंदरूआं अनिष्टता से बचाव का सूचक है, चंदरूआं सुख की घड़ी का हिस्सा भी है और चंदरूआं दुख की घड़ी का हिस्सा भी। चंदरूआं कभी लाल रंग का हो जाता है कभी पीले रंग का और कभी सफेद रंग का होकर अनुष्ठान और आनुष्ठानिक की रक्षा में प्रस्तुत हो जाता है। आप कहेंगे चन्दरुआं है क्या ? चंदरूआं कपड़े गोटे डोरी से बना वह कपड़ा है जिसे हम शादी ब्याह, अनुष्ठान, जनेऊ सहित मृत्यु उपरांत किये जाने वाले संस्कारों में आंगन में जिस जगह हवन आदि किया जाता है वहां चार बांस फट्टियां लगाकर या वेदिका में बांधते हैं ताकि कोई कीट-पतंग या विघ्न आदि चल रहे यज्ञ में न पड़े।

चंदरूएं का इतिहास बहुत पुराना है, युगों-युगों पुराना। कहते हैं रामायण काल में जब महार्षि विश्वामित्र सहित अन्य ऋषियों के यज्ञ में राक्षसों द्वारा उत्पात मचाया जाने लगा तो विश्वामित्र राजा दशरथ के पास सहायता मांगने हेतु गये। ऋषियों ने राम लक्ष्मण की कीर्ति सुन रखी थी लेकिन दशरथ अनभिज्ञ थे, लेकिन जब ऋषियों ने दशरथ सहित, रानियों को समझाया तो राम लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ यज्ञ सुरक्षा हेतु वन की ओर चल दिए। कहते हैं वहां वन में चल रहे विश्वामित्र की यज्ञकुंड जिसमें राक्षस अवांछित वस्तुएं फैंक देते थे कि सुरक्षा के लिए राम-लक्ष्मण ने बाणों का चंदरूआं बांध दिया ताकि कोई ऐसी वस्तु यज्ञ में न गिरे जिससे यज्ञ में विघ्न हो। बाणों का चंदरूआं बांधने के बाद राम लक्ष्मण वहीं पास सुरक्षा के लिए खड़े हो गये, बाकी आप जानते हैं कि किस प्रकार राम लक्ष्मण ने ऋषि मुनियों की सहायता की और तदोपरांत उनसे ढेर सारे अस्त्र-शस्त्र, आशीर्वाद लेकर राजा जनक के दरबार जा पहुंचे जहां सीता स्वयंवर चल रहा था ।.

जिस तरह शादी, ब्याह, कारज आदि एक अनुष्ठानिक क्रिया उसी तरह प्रत्येक दिन एक अनुष्ठान है। हर मौसम अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान हेतु सूरज रोज निकलता है, चांद नित्य घूमता है, रात रोज आती है, पानी बहना. नहीं छोड़ता। ये क्रियाएं निरंतर रहें, प्राकृतिक अनुष्ठान चलते रहें, इसलिए मनुष्य ने स्वयं को अनुशासन में बांधा,अपने लिए.नियम बनाए। इन नियमों में उसने प्रकृति से लेना तय किया, प्रकृति से अर्जे की कि मैं तुम्हें यह दूंगा, तुम मुझे सदजीवन दो। प्रकृति ने जहां-जहां मनुष्य की सुनी उस स्थान के पत्थरों को चोटियों को, ताल-तलैय्यों, कुंडों, नदियों, समुद्रों को मनुष्य ने अपना इष्ट मान लिया और तय दिनों, समय पर वहां पूजा अर्चना करने लगा।

पूर्व में मनुष्य ने पहाड़ों, नदियों, बादलों आदि को लेकर ही नियम नहीं बनाए अपितु धरती को भी उसने चंदरूएं बांधे और हर चंदरूएं तले की धरती को एक नाम दिया जैसे बासी, कूल्ही, घरैथड़, नहरी आदि और उसी विशेषता अनुसार धरती का प्रयोग करने लगा।

लेकिन बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते आवास, बढ़ती व्यवसायिक गतिविधियों, जरूरतों, जोर, सिफारिश के कारण वो सब चंदरूएं जिनमें वर्जनाएं थीं, नियम थे, आशीर्वाद थे, निर्धारित तिथियां थी, सबको मनुष्य भूलने लगा और प्रकृति से छेड़खानी करने लगा। घरैथड़े, नहरीं, कूहलीं, खोलों, खड्डों के तट आवास बनने लगे हैं.और भी बहुत कुछ। कई वर्जनाएं टूटती हैं अब, खनन आदि समस्या तो है ही दूसरे समय और रास्ता खुलने से पहले यात्री झुंड पवित्र पहाड़ों पर पहुंच जाते हैं, ट्रैफिक अंधाधुंध और बहुत कुछ।

जोर एक तरफा नहीं दो तरफा लगता है पहाड़ पर जितना जोर से वजनी हथौड़ा मारेंगे, उतना जोर वापिस भी लौटता है। बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं, बढ़ती दुर्घटनाएं बार बार चेता रही हैं कि वर्जनाओं को मत लांघों, नियमों से मत छेड़छाड़ करो, पूर्वजों ने नियम बीस जमाते पढ़कर नहीं अपितु कठिनाइयों में तपकर, प्रवृत्ति को जीतकर प्रकृति के आगे झुककर, प्रकृति से सीखकर अर्जित किए थे, बनाए थे, आने वाली पीढ़ियों के लिए।

हम इन नियमों, वर्जनाओं का ख्याल रखें, प्रकृति का अंधाधुंध दोहन न करें, नदी को नदी रहने दें, पर्वत को पर्वत, दस पेड़ काटने से पहले बीस पेड़ लगाएं , ऐसे नियम आवश्यक हैं, ऐसे चंदरूएं आवश्यक हैं, बने भी हैं, उन सबकी अनुपालना जरूरी है और यह मात्र एक पक्ष का काम नहीं अपितु हर पक्ष का है।

कहानी

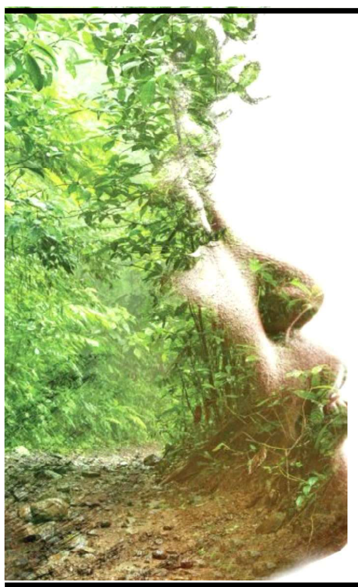

प्रकृति की पुकार

✍ **सुधा पराशर**

75 वर्षीय दीनानाथ अपनी पथराई हुई आंखों से आसमान की तरफ लगातार देखे जा रहा था। एक अजीब सा डर और बेचैनी उसका पीछा नहीं छोड़ रहे थे। आज राहत शिविर में आए हुए उसे 15 दिन हो गए थे। वह अभी तक समझ ही नहीं पा रहा था कि अचानक यह क्या हो गया ? सावन का महीना अपने चरम पर था। परेशान और उदास दीनू अचानक अपने अतीत में पहुंच गया। अपनी बचपन की यादों के झूले में हिचकोले खाने लगा। घर के आंगन में हर सावन को झूला बनाया जाता था। घर के सभी सदस्य उसमें झूला झूलते थे। दीनानाथ के दादाजी उसे प्यार से दीनू कहते थे। वह बरामदे में बैठे रहते थे। हर आने-जाने वाले को आवाज लगाते थे। मां पहले ही चाय चढ़ा देती थी। दीनू, उसकी बहन, उसके माता-पिता और दादाजी शिमला से लगभग थोड़ी दूरी पर एक गांव में रहते थे।

छोटा सा परिवार बहुत ही खुशहाल था। दीनू के पिताजी क्लर्क थे। दोनों बच्चे स्कूल पढ़ने के लिए स्कूल बस से शिमला आते थे। दीनू बचपन से ही बहुत कुशाग्र बुद्धि था। जिज्ञासु प्रकृति का होने के कारण बहुत प्रश्न किया करता था। एक दिन स्कूल से आते ही दीनू ने दादाजी से प्रश्न किया, दादाजी शिमला शहर इतना सुंदर क्यों है ? ऐसा लगता है कि वे मेरे साथ बातें कर रही हैं। बर्फ की सफेद चोटियां मुझे अपनी ओर आकर्षित करती हैं। मेरा तो यही मन करता है कि मैं स्कूल नहीं जाऊं, कहीं शांत बैठकर इन्हें निहारता रहूं। यह सुनकर दादाजी जोर से ठहाका मारकर हंसे, अरे लड़के तू भी न बड़ों की तरह बातें करता है। पर कुछ बात तो है मेरे शिमला में।

चल आज मैं तुझे शिमला के बारे में बताता हूं। यह मेरी जन्म भूमि है। मेरे पिताजी अक्सर कहा करते थे, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसे', अर्थात् जन्म देने वाली मां और जन्मभूमि दोनों स्वर्ग से भी बढ़कर होते हैं। मेरी जन्मभूमि तो अपने अंदर भरपूर प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक आकर्षण और जीती-जागती स्थानीय संस्कृति समेटे हुए हैं। हरे-भरे पेड़, बर्फ से ढकी चोटियां, बरबस ही हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण बर्फीले शांत पहाड़, हिमाच्छादित चोटियां अपने आंचल में धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर समेटे हुए हैं। दीनू, मेरी तो वैसे भी अब उम्र हो चली है। पर मेरे बच्चे, आप देखना कि आने वाली पीढ़ियां कहीं भी रहें, शिमला को कभी नहीं छोड़ पाएंगी। क्योंकि 'पहाड़ों की रानी' शिमला देवभूमि हिमाचल की शान है।

समय बीतता गया। दादा जी स्वर्ग सिधार गए। दीनू की बहन की शादी हो गई। दीनू का चयन बैंक अधिकारी के रूप में हो गया। उसकी पत्नी भी कॉलेज में प्रोफेसर थी। भगवान को मानने वाला दीनू हमेशा यही कहता है कि महादेव की अपार कृपा है। बदलते वक्त के साथ हर चीज में बदलाव हो रहा था। वृद्ध माता-पिता भी अपनी जीवन यात्रा संपूर्ण करके इस संसार से विदा ले गए। दीनू के दोनों बेटे उच्च पदों पर कार्यरत थे। दोनों बेटों की शादियां भी कर दी गईं। वह और उसकी पत्नी बहुत ही सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। बड़ा बेटा पुणे में अपने परिवार के साथ रहता था। बड़ी बहू ने कई बार कहा कि आप हमारे पास आकर रहो। लेकिन दीनू हमेशा यही कहता है कि जो बात मेरे शिमला में है वह कहीं नहीं। मैं तुम लोगों को जल्दी ही शिमला बुला लूंगा। इस बात पर पूरा परिवार जोर-जोर से हंसने लगता। कहते हैं कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है यह कोई नहीं बता सकता। जून का महीना था। दोनों बेटे-बहुएं अपने बच्चों के साथ शिमला आए हुए थे। कभी यहां घूम, कभी वहां इसी में सारा दिन निकल जाता।

दीनू हमेशा यही कहता है, मेरी बूढ़ी हड्डियों में अभी बहुत दम है। पूरा परिवार छुट्टियों का पूरा आनंद ले रहा था। देवभूमि में बारिशों के कहर से पूरा जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो रहा था। दीनू यही कहता कि अपने होशोहवास में मैंने कभी न तो ऐसी बारिशों का कहर देखा और न ही ऐसी तबाही। मोबाइल, टीवी, हर जगह से डरा देने वाले समाचार ही सुनाई देते थे। अजीब सा डर का माहौल बन चुका था। बच्चों ने पुणे वापस जाना था लेकिन जगह-जगह रास्ते बंद थे। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था।

उस दिन सुबह-सुबह कमरे में उसकी पत्नी आई, सुनो जी, बच्चे कह रहे हैं शिव मंदिर जाना है। भगवान भोलेनाथ से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु, यह तड़प, यह चीखें हमसे नहीं देखी जाती। देवभूमि की रक्षा करो। दीनू एकदम जोर से बोल पड़ा, कोई कहीं नहीं जाएगा। घर में भी पूजा-प्रार्थना हो जाती है। उसकी पत्नी, बहुओं के सामने उसकी ऐसी प्रतिक्रिया देखकर हैरान हो गई। बहुत ही विनम्रता से बोली ऐसा करते हैं , मैं और आप रहने देते हैं। बच्चों का मन है तो वह जा आएं। दीनू ने अनमने मन से सिर हिला दिया। कुछ समय पश्चात् दीनू की पत्नी खाना लेकर आई लेकिन उसने खाना खाने से भी मना कर दिया। बच्चे आ जाएं तो सभी मिलकर खाएंगे। अपना मोबाइल लेकर बैठे दीनू ने अचानक शिव मंदिर के आस-पास भू-स्खलन होने की खबर देखी। दीनू के ऊपर तो मानो पहाड़ गिर गया। वह पागलों की तरह व्यवहार करने लगा। जोर-जोर से चिल्लाने लगा, मैंने तो पहले ही मना किया था मत जाओ, मत जाओ। ओ मेरे बच्चे, मेरे बच्चे, हाय-हाय, मेरी देवभूमि को, मेरे छैल हिमाचल को, ओह मेरे शिमला को, किसकी नजर लग गई।

जैसे ही दीनू की पत्नी ने यह सब सुना तो वह बेहोश हो गई। दीनू इतना व्यथित और परेशान था कि घर से बाहर निकल कर जोर से चीखने लगा। अभी वह थोड़ी दूर ही पहुंचा था तो पीछे से जोर-जोर से कुछ गिरने की आवाजें आने लगीं। जैसे ही उसने पीछे मुड़कर देखा,उसका तीन मंजिला आलीशान घर, उसकी जीवनसंगिनी, उसकी आंखों के सामने देखते-देखते ही मिट्टी का ढेर हो गए। सामने खड़ी लोगों की भीड़, घर का मालिक दीनू कुछ नहीं कर पाया। वह तो मानो पत्थर हो गया। प्रत्यक्षदर्शी उसे वहां से पकड़ कर ले गए। उसका पड़ोसी रामनाथ उसे अपने घर लेकर आया। दीनू को कोई होश नहीं थी। धीरे-धीरे सभी बातें स्पष्ट होती चली गई। दीनानाथ का पूरा परिवार शिव मंदिर हादसे में दब गया। उसकी पत्नी, धन-दौलत आलीशान घर सब कुछ कुदरत के कहर की भेंट चढ़ गया। रामनाथ जिस क्षेत्र में रह रहा था वहां पर सभी लोगों को जल्दी से जल्दी अपने घर छोड़ देने को कहा गया था ताकि बचाव हो सके। बादल फटने, भू-स्खलन जैसी आपदाएं थमने का नाम ही नहीं ले रही थी।

किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी की देवभूमि में भी ऐसी स्थिति भी आएगी। वह रात बड़ी ही शून्य और उदास थी। सभी सोने वाले रो-रो कर थक चुके थे। दीनू अपने बिस्तर से उठकर बाहर आकर बैठ गया। वह आसमान की तरफ लगातार देखे जा रहा था। फिर अचानक उसने अपनी आंखें बंद कर ली। उस रात वह फूट- फूट कर रोया। उसे अपनी पत्नी, अपने बच्चे, एक-एक करके दिखाई दे रहे थे। उसने कभी नहीं सोचा था कि वह अपने परिवार से इस तरह अलग हो जाएगा। हे प्रभु, मुझे क्यों छोड़ दिया, मुझे भी साथ ही ले जाते। यह दुःख, यह पीड़ा, मेरे लिए असहनीय है। राहत शिविर भरा पड़ा था। अचानक दीनू को लगा कि यहां सोए लोग, उनकी आने वाली पीढ़ियां भी सुरक्षित नहीं है। यह सोचकर उसका पूरा शरीर कांपने लगा। उसे अपने दादाजी की कही सारी बातें एक-एक करके याद आने लगीं। लेकिन वर्तमान समय में मानव स्वार्थी हो गया है। विकास की आड़ में विनाश की तरफ आगे बढ़ रहा है। अंधाधुंध पेड़ों की कटाई से वन, जंगल खाली हो रहे हैं। चारों तरफ आसमान को छू रहीं ऊंची-ऊंची इमारतें बनाकर मानव प्रकृति को लगातार चुनौती दे रहा है। देवभूमि की भौगोलिक स्थिति का गहन अध्ययन करें तो, बर्फ से ढके शांत पहाड़, लहलहाते हरे-भरे वन, फल-फूलों से लदे वृक्ष आवश्यकता से अधिक दोहन सहन नहीं कर पाते हैं। दीनू लगातार होने वाली तबाही के लिए मानव को ही उत्तरदायी मान रहा था। यह स्वीकार्य है कि, रहने के लिए घर, सड़कें, व्यापार आदि हमारी जरूरतें हैं लेकिन स्वार्थ और लालच में इंसान ने पहाड़ खोद-खोदकर बड़े-बड़े घर बना दिए। बहुमंजिला होटलों का निर्माण कर दिया। तरक्की के नाम पर अवैध खनन, न जाने क्या-क्या नहीं किया जिसका परिणाम आज सभी को भुगतना पड़ रहा है। 'अति सर्वत्र वर्जयेत' की बात करें तो यह तबाही हम सबके लिए एक चेतावनी है। मेरी देवभूमि की पावन धरती इतना बोझ सहन नहीं कर पाएगी। विश्व स्तर पर प्राकृतिक सौंदर्य का आकर्षण मेरा हिमाचल, चीख-चीखकर संदेश दे रहा है कि मेरे अस्तित्व को लुप्त मत होने दो। आने वाली पीढ़ियों संभल जाओ। हिमाचल को यह सुंदरता, यह सादगी, यह भोलापन प्रकृति द्वारा आशीर्वाद के रूप में उपहार स्वरूप मिला है। बेशक हम चांद पर घर बनाने के सपने देख रहे हैं लेकिन वास्तविकता तो यह है कि जो प्रकृति ने हमें दिया है उसे सहेज कर रखना भी हमारा कर्त्तव्य है। अत्याधिक भूख और स्वार्थ हमें विनाश की तरफ ले जाता है। यह हम सबने बखूबी जान लिया है। दीनू सबको यही बताना चाह रहा था हमें हमारी गलतियों से सीखना होगा। अपने सुख के लिए प्रकृति का आवश्यकता से अधिक दोहन न करें। समय रहते अगर हम संभल जाए तो फिर कोई भी न तो बेघर होगा और न ही ऐसे दर्दनाक हादसे होंगे। आज दीनू कुछ हल्का महसूस कर रहा था। अपना परिवार तो वह नहीं बचा पाया लेकिन मानव अगर अपने स्वार्थ को छोड़कर, अपने समाज, अपने देश के लिए सोचे तो प्रकृति भी हमेशा उन्नति के द्वार खुले रखती है। ऐसा कहते-कहते दीनू एक तरफ को लुढ़क गया। अपने परिवार के सदस्यों की मौत अपनी आंखों के सामने देखने के बाद भी दीनू की सांसें शायद हमें अपने शब्दों से देवभूमि के 'मन की बात' सुनाने के लिए ही चल रही थीं।

मानव अगर अपने स्वार्थ को छोड़कर, अपने समाज, अपने देश के लिए सोचे तो प्रकृति भी हमेशा उन्नति के द्वार खुले रखती है। बेशक हम चांद पर घर बनाने के सपने देख रहे हैं लेकिन वास्तविकता तो यह है कि जो प्रकृति ने हमें दिया है उसे सहेज कर रखना भी हमारा कर्त्तव्य है।

कविता

शिव की ज्योत

चहक उठा परिवेश है सारा, मोहक सुबह यह प्यारी है।
शंकर के पूजन से मैंने, किस्मत खूब संवारी है॥

भोले नाम से मन मंदिर में, गूंज उठे जयकारे हैं।
व्याकुल मन भी पुलकित होए, शिवजी साथ हमारे हैं ॥

अरदास यह भोले हर पल तुमसे, हाथ हमारे थामे रखना।
भटकें न हम जीवन के पथ, राह आसान बनाए रखना॥

शीतल मन हो चांद सा अपना, क्रोध की ज्वाला दूर रहे।
नीलकण्ठ के नाम से मन में, अमृत रूपी धार बहे॥

संकट कभी जो आएं भोले, ध्यान में तेरा नाम रहे।
डोले न कहीं पग ये हमारे, सेवा में मन लगा रहे।

भक्ति में अनुरक्त रहें हम, कृपा खूब बरसाए रखना।
भटकें ना हम जीवन के पथ, राह आसान बनाए रखना॥

भोले तेरे नाम से मेरे, बनते बिगड़े काम सभी।
चाहे कितने दुःख हों फिर भी, भूलूं न शिव नाम कभी॥

आशीष प्रेम का सबको देना, मिल-जुलकर संसार रहे।
मिटे भाव हर द्वेष का मन से, हिंसा का न स्थान रहे॥

हृदय के भीतर जगमग करती, शिव की ज्योत जलाए रखना।
भटकें न हम जीवन के पथ, राह आसान बनाए रखना॥

✍ **शिवालिक अवस्थी**

सामान्य ज्ञान

ब्लू होल

सामान्य भाषा में यह समुद्र के नीचे स्थित एक तरह की वर्टिकल गुफा होती है जिसे ब्लू होल कहा जाता है। पानी के नीचे मौजूद ब्लू होल की अपनी एक जैव विविधता होती है, जिसमें कई तरह की वनस्पतियां और समुद्री जीव रहते हैं, यह समुद्री तल के नीचे पाई जाती हैं। यह तब बनती है जब समुद्र का पानी चट्टानों की दरारों से रिसकर चट्टानों के भीतर के घुलनशील खनिजों तक पहुंच जाता है, इन खनिजों के घुलने से उस जगह पर सिंकहोल बन जाता है। समय के साथ, ये काफी बड़े होते जाते हैं।

1. हिमाचल सरकार ने प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने के लिए 150 करोड़ की कौन-सी योजना आरंभ की है ?
2. सुन्नी (शिमला) में स्थापित जलविद्युत परियोजना की क्षमता कितनी है ?
3. प्रदेश के किस विभाग में पर्यावरण प्रभाग खोलना प्रस्तावित है ?
4. सन् 1913 में लाला हरदयाल ने अमरीका से किस समाचार पत्र को आरंभ किया था ?
5. सराहन का प्राचीन नाम क्या था ?
6. 'मिंजर' शब्द का क्या अर्थ है ?
7. जीवधारियों का अध्ययन विज्ञान की किस शाखा के अंतर्गत किया जाता है ?
8. गैस का दाब किस उपकरण के माध्यम से मापा जाता है ?
9. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी ?
10. भारत में प्रथम बार जनगणना कब हुई थी ?
11. भारत का राष्ट्रीय फल क्या है ?
12. बहुचर्चित हिन्दी फिल्म 'शोले' की पटकथा किन लेखकों ने लिखी थी ?
13. दूरदर्शन ने बधिरों के लिए पहला साप्ताहिक बुलेटिन कब आरम्भ किया था ?
14. 'पंटर' शब्द किस खेल से सम्बंधित है
15. 'हाउ टू बी हैप्पी' किस प्रख्यात लेखक की पुस्तक है ?
16. विश्व तंबाकू निषेध दिवस कब मनाया जाता है ?

प्रस्तुति : विवेक शर्मा

उत्तर- 1. हिम उन्नति 2. 382 मेगावॉट 3. शहरी विकास 4. गदर 5. शोणितपुर, 6. मक्की का फूल 7. जीव विज्ञान 8. मेनोमीटर 9. चंद्रगुप्त मौर्य, 10. सन् 1872, 11. आम 12. सलीम-जावेद 13. 15 अक्तूबर, 1987 14. फुटबॉल15. रस्किन बांड 16. 31 मई

लेख

पुस्तकों का महत्त्व

मानवीय जीवन में पुस्तकों की प्रमुख भूमिका है। किसी भी व्यक्ति की पर्सनैलिटी डेवलपमेंट यानी व्यक्तित्व के विकास और निखार के लिए पुस्तकों का बहुत बड़ा योगदान है। पुस्तकों से हमारा सम्बंध बचपन से ही शुरू हो जाता है और लम्बे अरसे तक चलता है। यूं कह लीजिए उम्र भर का साथ होता है।

अभी भी मुझे कोई अच्छी पुस्तक पढ़ने को मिल जाए तो लगता है तभी उठूं जब पुस्तक समाप्त हो जाए। जैसा कि मैंने कहा, हम सब का पुस्तकों से वास्ता बचपन से ही हो जाता है। फर्क बस इतना है कि हमारे समय में पहली पुस्तक 'कायदा' दी जाती थी पांच वर्ष की आयु में और अब पकड़ा दी जाती हैं ढेर सी किताबें तीन वर्ष की आयु में, प्ले-बुक्स के नाम पर। पेरेंट्स और टीचरज का प्रयत्न रहता है कि आपके मन में पुस्तकों के प्रति प्यार और आदर पैदा किया जाए। आप सब ने देखा होगा कि अगर किताब गिर जाए तो बताया जाता है कि किताब को उठाकर माथे को लगाओ यानी किताब का सम्मान करो।

बच्चा, क ख ग, ए बी सी तथा काउंटिंग से शुरू होकर सिलेबस की पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते काफी ज्ञान अर्जित करता है। सभी विषयों का अध्ययन कर उसके दिमाग में ज्ञान का भंडार इकट्ठा हो जाता है जो कि बाद वाली जिंदगी में काम आता है।

पाठ्यक्रम की पुस्तकें आपको सभी विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान करवा देती हैं, डिग्रियां दिला देती है और आजीविका कमाने के काबिल बना देती हैं। उसके बाद जिस विषय में भी आपको रुचि है जैसे फिलासफी, फिक्शन, शायरी, ड्रामा, नोवेल्स, स्टोरी बुक्स या फिर पॉलिटिक्स, रिलिजन इत्यादि विषयों पर आप अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। पुस्तकें सत्संग प्रदान करती है। हमें अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती हैं। पुस्तकें हर तरीके से आपका मार्गदर्शन करती हैं तथा आपका सच्चा साथी बनती हैं। आपका गहरे से गहरा साथी भी हो सकता है, कभी छोटी सी बात पर नाराज होकर आपको छोड़ जाए परंतु पुस्तकें कभी आपका साथ नहीं छोड़ती। इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं अगर कहा जाए कि पुस्तकें हमारे सुख-दुःख साझा करती हैं। अच्छी पुस्तकों का पढ़ना ऐसे ही है जैसे आप पिछली शताब्दियों के महानुभावों से बातचीत कर करें। प्रश्न यह पैदा होता है कि ऐसी पुस्तकें कहां से ली जाएं और इनका चयन कैसे किया जाए। प्रायः छोटे शहरों में तो जनरल बुक्स का कोई स्टोर होता नहीं। जब भी आप किसी बड़े शहर में जाएं आप अपने लिए पैंट शर्ट जींस या फिर सूट, स्कर्ट, साड़ी जो मर्जी हो खरीदें, उसके साथ दो किताबें अवश्य खरीदें।

जनरल स्टडीज का सबसे अच्छा समय है सोने से आधा घंटा पहले। आप अपना व्यक्तिगत काम, जॉब, बिजनेस, थोड़ी बहुत टीवी वाचिंग के उपरांत जब सब खत्म हो जाए तो सोने से आधा घंटा पूर्व अपनी मनपसंद पुस्तक के आठ दस पेज अवश्य पढ़ें। देखिए नतीजा, कितनी नॉलेज बढ़ती है, कितनी बढ़िया नींद आती है और कितने बढ़िया सपने। घटिया नॉवल बिलकुल नहीं पढ़ने चाहिएं। जब भी पढ़ें, जो भी पढ़ें, चाहे थोड़ा पढ़ें, सब स्तरीय पढ़ें। उस भाषा में पढ़ना शुरू करें जिसमें आपको महारत हो, निपुणता हो, दिलचस्पी हो। मुझे पुस्तकें पढ़ने की कैसे रुचि हुई, इसके पीछे एक स्टोरी है मैंने मैट्रिक के पेपर दिए और फ्री हो गई। कॉलेज में एडमिशन लेने के लिए तीन महीने का समय था। जैसा कि उन दिनों रिवाज था दसवीं के पेपर देने के बाद लड़कियों को सिलाई कढ़ाई सिखाई जाती थीं जैसे आजकल लड़कियां कंप्यूटर सीखती हैं। घर में मां ने कहा, ससुराल जाएगी, वहां सिलाई कढ़ाई आती होगी तो अच्छा रहेगा। कल से सिलाई सेंटर चले जाओ। मां के सामने तो नहीं, पिता जी ने अकेले में समझाया कि सिलाई में क्या रखा है सीख लेगी तो सबके कपड़े सीने पड़ेंगे जो कि बाद में पढ़ाई में बाधा बनेंगे। मैं तुझे अच्छी-अच्छी स्टोरी बुक्स, नोवेल्स, कविता संग्रह ला कर दूंगा, वह पढ़ा करना। अब कभी एकान्त में बैठे यह घटना याद आ जाए तो हैरानी होती है। पिता जी अधिक पढ़ें लिखे नहीं थे। चूंकि उनके अपने घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उनकी विद्या अर्जन की इच्छा अधूरी रह गई थी सो वे चाहते थे कि उनके सभी बच्चे उच्च शिक्षा ग्रहण करें। उनकी दुकान के सामने ही एक लाइब्रेरी शॉप थी जो किराए पर पुस्तकें देती थी। आज मुझे हैरानी होती है कौन पिता है जो अपने बच्चों को ऐसे स्टोरी और नोवेल्स पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। मैंने उनकी प्रेरणा से मुन्शी प्रेमचंद के सभी उपन्यास तथा कहानी संग्रह, रवींद्रनाथ टैगोर व टॉलस्टाय का बहुत सा साहित्य पढ़ डाला।

✍ कृष्णा बंसल

समझ कितना आया इसके ऊपर तो मैं कोई कमेंट नहीं कर सकती पर पढ़ने में ऐसा आनंद आने लगा कि हर छुट्टियों में यही रुटीन बना लिया। मैथ्स सब्जेक्ट होने के बावजूद साहित्य में रुचि पैदा हो गई, आज भी बनी हुई है। उम्र के साथ-साथ बदलाव आए। दर्शन, धर्म, अध्यात्मिकता में रुचि हुई तो एल्डस हक्सले, हरमन हैस, जिद्दु कृष्णमूर्ति, सुधीर कक्कड़, काव्य में कबीर, मीरा और भी कई लेखक पढ़ डाले। आधुनिक कवियों की बात करें तो सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, हरिवंश राय बच्चन इत्यादि ने आकृषित किया।

हमेशा सोचते थे कि
बारूद के बदले हाथों में आ जाए
किताब तो अच्छा हो
ए काश हमारी आंखों का
इक्कीसवां ख्वाब तो अच्छा हो।

एक तरीका तो मैंने यह बताया कि आप अपनी किताबें खरीदें और पढ़ें। अपनी किताब पर आपका हक बनता है कि कोई भी निशान लगाएं, कोई कोटेशन लिखें, आपकी अपनी किताब है। पर ध्यान रहे, ज्यादा ही किताब को नीला, पीला न किया जाए।

ऐसा भी हो सकता है आप किसी कारणवश पुस्तक नहीं खरीद पाते तो स्कूल की लाइब्रेरी पब्लिक लाइब्रेरी या फिर किसी दोस्त मित्र से भी उधार लेकर पढ़ सकते हैं। मान लीजिए एक माह में आपने दो पुस्तकें खरीदीं, वर्ष भर में चौबीस, चार-पांच साल में एक अच्छी खासी व्यक्तिगत लाइब्रेरी तैयार हो जाती है। किसी भी क्षेत्र में अच्छी आदतें बनाने के लिए समय तो लगता है, कष्ट भी थोड़ा होता है परंतु एक बार स्वभाव में आ जाए तो आयु पर्यंत आराम। जो भी काम किसी के प्रभाव में आकर किया जाता है वह स्थाई नहीं होता। स्थाई तभी होता है जब एक बार स्वभाव मेंआ जाए। एक बात बताऊं, आप जो भी पुस्तक पढ़ते हैं उसे मन मस्तिष्क में रखिए। यह नहीं कि पढ़ा और वहीं छोड़ दिया। हो सके तो अपनी डायरी में जिक्र कीजिए, कुछ नोट्स तैयार कीजिए। एक खजाना सदैव के लिए आपका अपना हो जाएगा, धन के खजाने से ज्यादा कीमती। कई किताबें ऐसी होती हैं जो बार बार पढ़ी जानी चाहिए, कुछ ऐसी होती हैं जिन्हें एक बार पढ़ना ही काफी है, और कुछ ऐसी भी होती हैं जो केवल शेल्फ का श्रृंगार बन कर रह जाती हैं।

अपनी बुक्स अलमारी में सभी प्रकार की किताबें सजाएं।

कहावत है 'पैसा गंठम विद्या कंठम'।

आप सोच रहे होंगे कि इतने व्यस्त जीवन में जनरल स्टडीज का समय कहां होता है।

मैं कहना चाहती हूं व्हाट्सएप फेसबुक इंस्टाग्राम नेटफ्लिक्स वेब सीरीज पर कितना समय व्यर्थ गंवाते हो। रीलज या फिर सीरियलज देखकर दिमाग विकसित नहीं, मंद होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि आप मॉडर्न टेक्नोलॉजी का फायदा न उठाएं, बस इतना कहना चाहती हूं सन्तुलन बनाएं और किताबें पढ़ने के लिए अवश्य समय निकालें। जरुरी नहीं कि हार्ड बाउंड या फिर पेपर बैक ही पढ़ें, ई-बुक्स भी पढ़ी जा सकती हैं।

आप महसूस करेंगे आप की शब्दावली का स्तर ऊंचा हो गया है, आपकी सोचने की शक्ति बढ़ गई है, आपकी याददाश्त तेज हो गई है।

आपकी बातचीत का लहजा बदल गया है। आपकी किसी भी विषय की अभिव्यक्ति करने के लिए आत्मविश्वास व क्षमता पैदा हो गई है।

मुझे याद पड़ता है बीस पच्चीस वर्ष पूर्व तक किताबें पढ़ने का थोड़ा-बहुत रिवाज था, अब तो पढ़ने का रिवाज जैसे खत्म सा ही हो गया है। कम्प्यूटर पर ई-बुक पढ़ने के मुकाबले किताब को हाथ में पकड़ कर पढ़ने का आनंद ही कुछ और है। अंग्रेजी के एक प्रसिद्ध लेखक ने कहा है, 'मैं सारी आयु धरती की सतह के नीचे बने कारागार में बिता सकता हूं यदि मेरे चारों ओर पुस्तकों का भंडार हो।' एक अच्छी पुस्तक हमारे जीवन की दशा और दिशा ही बदल देती है। आओ पुस्तकों से प्रगाढ़ मित्रता बढ़ाएं और जीवन का आनंद लें।

मान लीजिए एक माह में आपने दो पुस्तकें खरीदीं, वर्ष भर में चौबीस, चार-पांच साल में एक अच्छी खासी व्यक्तिगत लाइब्रेरी तैयार हो जाती है। किसी भी क्षेत्र में अच्छी आदतें बनाने के लिए समय तो लगता है, कष्ट भी थोड़ा होता है परंतु एक बार स्वभाव में आ जाए तो आयु पर्यंत आराम।

कविता

मेरा हिमाचल

मेरा हिमाचल
जो रंगों से भी प्यारा है
पग-पग पर खिलते रंग कई
इसे कलियों ने भी सजाया है।
बात तो दूर है वेशभूषा की
इसकी तो सादगी ने सबका मन लुभाया है।
देवी-देवताओं का तो घर है हिमाचल
कोयल से मीठी नदियां, बहती यहां कल-कल
बोली की विविधता, संस्कृति की अनेकता
सबको साथ लिए प्रदेश प्यारा है
ये मेरा हिमाचल प्यारा है।

भोले-भाले लोग यहां पर
हर जिले को तुम आना देखकर
हैरान इतना खुद को पाओगे
कम पड़ जाएंगी नजरें तुम्हारी,
निहार कर भी खुद को तृप्त न पाओगे
जन्नत से भी सुंदर इसका नजारा है
ये मेरा हिमाचल प्यारा है।

खेत-खलियान बाग-बगीचे
पशु पक्षी मोर नाचे
गर्मी, सर्दी, बरसात, बसंत बहार
जो कोई यहां आए
हर कोई खुद को धन्य पाए
जो यहां एक बार आए,
ध्यान, ज्ञान, धर्म सब समाया है
ये मेरा हिमाचल प्यारा है।

✍ प्रीति शर्मा 'मधु'

संस्मरण

अपनों की तलाश में भटकता

पाम सिंह जीवन के सातवें दशक में प्रवेश करने वाला था जब वह अपनों की तलाश में भटकता हुआ भारत आया। लंबा कद, बाल पूरी तरह पक चुके थे मगर चुस्ती-फुर्ती तीस-बत्तीस साल के युवा जैसी। देखने में कतई नहीं लगता था कि उसकी जड़ें भारत से जुड़ी हुई होंगी। पहनावे, चाल ढाल व बातचीत से वह बिलकुल विदेशी लग रहा था। उसकी पत्नी ऐना भी साथ थी। देखने वाले सभी यही समझ रहे थे कि कोई अंग्रेज जोड़ा भारत भ्रमण पर आया है। भारत के दूसरे हिस्सों में घूमने के पश्चात् वे पति-पत्नी एक हिल स्टेशन पर स्थित म्यूजियम को देखने आ पहुंचे। म्यूजियम एक ऐसे शानदार भवन में बनाया गया था जहां से कभी ब्रिटिश हुकूमत चला करती थी।

विदेशी शैली में बना वह बंगला दरअसल उस समय लाट साहब आवास हुआ करता था। ग्रीष्मकालीन अपने आवास में भारतीय नेताओं को बुलाया तो इसलिए जाता था कि वे यह समझें कि ब्रिटेन भारत को मुक्त राष्ट्र के रूप में देखना चाहता है परंतु परोक्ष यह दुर्भावना थी कि लाट अंग्रेजों के रहन-सहन से प्रभावित होकर वे अपना पक्ष मजबूती से न रख सकें। देश की आजादी के संघर्षों से जुड़ी ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं को तरोताजा करता हुए वह म्यूजियम था, जिसे देखने प्रतिदिन सैंकड़ों देशी-विदेशी सैलानी आते थे।

अन्य पर्यटकों की तरह पाम सिंह और ऐना भी म्यूजियम में प्रदर्शित बीते समय की वस्तुओं और चित्रों को देख रहे थे। यकायक पाम सिंह एक किशोर की भांति उछलता हुआ कहने लगा- 'येस आई फाउंड। इट्स ग्रेट ट्रेज़र फॉर मी'।

सामने वाले सभी हैरान हो गए कि आखिरकार इन पुरानी तस्वीरों में उस बूढ़े को ऐसा क्या मिल गया जो बच्चों की तरह उछलकूद कर रहा है। ऐना से रहा नहीं गया, पूछ लिया-' व्हाट हैपन्ड पाम? पाम सिंह ने बताया कि वह उस बहुत खुश हुआ है। मानो हीरे की खान उसके हाथ लग गई थी। ओहो! टेल एक्जेक्टली, व्हाई आर यू सो क्रेजी? ऐना ने थोड़े ऊंचे स्वर में पूछा? पाम सिंह ने उसे एक ग्रुप फोटोग्राफ की ओर इशारा करते हुए कहा- है,

दिस इज माई अंकल, दी ओनली वन एंसेस्टर ऑफ माइ फैमिली, हूम आई हैड सीन इन चाइल्डहुड। ओह, दैट्स अमेजिंग..... .., कहकर ऐना आगे बढ़ गई। गाइड ने पाम सिंह से पूछ ही लिया कि वह अमेरिका में रहता है और देखने में भी गोरा-चिट्टा अंग्रेज लगता है तो उस तस्वीर के साथ एकदम नाता कैसे जोड़ लिया? पाम सिंह बड़ा अधीर होकर कहने लगा- 'मेरे जीवन की कहानी बड़ी विचित्र है, दोस्त! मेरे माता-पिता पंजाबी थे मगर काम की तलाश में बर्मा (म्यांमार) चले गए। पिताजी ने वहां पर इमारती लकड़ी का व्यापार शुरु कर दिया। मुझे तो याद नहीं लेकिन सुना है कि मैं भी बर्मा में ही पैदा हुआ था। पिताजी का व्यापार अच्छा-खासा चल पड़ा मगर एक दिन अचानक उनका जीवन इस दुनिया से कट गया। माता-पिता आराम फरमा रहे थे कि इमारती लकड़ी का एक बड़ा सा टाल अचानक गिर पड़ा। माता-पिता उसी टाल के नीचे दब गए और जिंदा न बच सके। मैं अनाथ हो गया। यह समाचार मेरे चाचा जी तक पहुंचा जो ब्रिटिश इंडियन आर्मी में थे। उस समय वे इसी हिल-स्टेशन में ड्यूटी पर तैनात थे। वे बर्मा आए और माता-पिता का अंतिम संस्कार करने के बाद मुझे अपने साथ यहां ले आए। पढ़ने के लिए मुझे यहां एक स्कूल में दाखिल करवा दिया।

✍ राजेश कुमार

उस स्कूल का नाम अब भी मुझे याद है उससे जुड़ी बहुत सी स्मृतियां मेरे दिल में समाई हैं। मुझे याद है कि चौथी कलास तक मैं उसी स्कूल में पढ़ा हूं और मैं उस स्कूल को देखने भी जाऊंगा।' पाम सिंह स्मृतिकोश के पन्ने पलटने लगा। 'जीवन का खेल भी निराला है! चाचा जी का अपना भी भरपूर परिवारथा और उनकी सेवानिवृत्ति भी नजदीक थी।

फौज में उनके साथ काम करने वाला एक अंग्रेज अफसर अपनी पत्नी के साथ अक्सर चाचाजी के घर आया करता था। उस दंपत्ति अपनी कोई संतान न थी। जब भारत आजाद हुआ तो अंग्रेज भारत छोड़ने पर मजबूर हो गए। उस अंग्रेज दंपत्ति ने चाचा जी से कहा कि उनके तो कोई संतान नहीं है और वे मुझे गोद लेना चाहते हैं। कहा कि अपनी संतान से बढ़कर वे मेरा ख्याल रखेंगे। चाचाजी भी मान गए और मैं उस विदेशी दंपत्ति के साथ इंग्लैंड चला गया। इंग्लैण्ड के अच्छे स्कूल-कॉलेज में पढ़ाया-लिखाया। मेरे लिए वही माता-पिता बन गए। मैं पूरी तरह विलायती रंग में रंग गया। पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने अपना कारोबार शुरू कर दिया।

कुछ समय बाद ऐना से मेरी शादी हो गई। मेहनत और भाग्य रंग लाए, कारोबार बढ़ता गया। मैं ने अमेरिका में भी कारोबार शुरू कर दिया और वहां जाकर बस गया। अब चाइना में भी दवाओं की मेरी एक फैक्टरी है। ईश्वर कृपा से धन-दौलत की कोई कमी नहीं है परंतु जब भी मैं बचपन को याद करता हूं तो अपने असली माता-पिता और चाचा जी के बारे में सोचकर अवसाद में चला जाता हूं। अब अपनों की तलाश में भटकता हुआ यहां आ पहुंचा।

म्यूजियम में चाचाजी की तस्वीर देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं है। ऐसा लगता है कि अब जीवन में और कुछ पाने की चाह नहीं रही।' यह कहते हुए पाम सिंह की आंख भर आई और हर्ष-विषाद की पोटली लिए वापिस चला गया।

चम्बीयाली लोक कथा

किस्मते दी मारी राजकुमारी

कुसकी वाछा दे घरे कुडी दा जन्म होया। वादशाहे अपणे कुले दे परोता का तसेरे कख- तरिण चुकाई जांच सोध कराई के गरैह चक्कर कदे हिन। परोते बडी गौर कनै अपणी पत्तरी दिक्खी ते फिरी वादशाह जो वोल्लेया, 'महाराज कै वोलणा, इसेरे भाग वडे भारी खराव हिन, इसेरे भाग विच वाराह साल घोडेयां दी लिदद चुकाणा है लिखोरी? ते कने वाराह साल ही कुसी कोढ़ी-कलंकी दे कीड़े विणणा हिन लिखोरे? कने थोडे चिरा तांई नौकरीयाणी वणी सेवा करणा है लिखोरी।' वादशाह जो अपणे कुले दे परोता पर विसुआस नी आया। उनी होर वी अपणी ते कने दुई रियासते दे केई परोत सदाई पुच्छे, ता तिन्हां भी एई जबाव दित्ता।

वादशाह कुडी दी चिंन्ता बिच डुब्वी बड़ा भारी दुखी होया। कुडी दिक्खणे सुणणे जो इतणी सोहोणी कि 'हत्थे छुणी ता मैली ते पठ्ठे छुणी ता सैली'। करदे-करान्दे कुडी अज्ज होर ते कल होर खरी मुटी जुआन्दडी होई पेई। वादशाह रोज उसाजो अपणे कमरे किल्ले सदान्दा ते अपणी गोदा लेई खुव गले़ कलोलु देई दाह लान्दा ते झले़-झले़ छम नैणा रोन्दे उसा जो बाजी-धाजी खुई भेजी दिन्दा।

इक्क रोज कुडी ने अपणे बापु वादशाह जो पुच्छेया, 'बापु जी, तुसां रोज मिंज्जो अपणी गोदा लेई बाजी खुआन्दे पण तुसी रोन्दे किज्जो?' ता वादशाह ने गलाया, 'बस ईयांही बच्चा।' ता कुडी जणके राजकुमारी वोलदी, 'बापु जी, तुसां जो मेरी सुगन्द लग्गे सच्च-सच्च दस्सा तुसी किज्जो रौन्दे, निता मैं अज्ज भत्त नी खाणा? वादशाह ने बडी टाल़-मटोल़ कित्ती पण राजकुमारी जरा भी टस का मस नी होई बस अपणी गल्ला पर अडी गेई। अणसाध होई गेई ता वादशाहे अपणी कुडी जणके राजकुमारी जो वोलेया, दिक्ख बच्चा मैं रोन्दा इस वास्ते के तेरी किस्मत बिच बाराह साल घोडेयां दी लिदद चुकाणा ते बाराह साल कोढ़ी-कलांकी दे कीडे चुकाणा है लिखोरा ते कने थोडे चीरा तांई नोकरीयाणी साही सेवा करणा है लिखोरा, ए भुंजमाण भुंजी करी फिरी तेरी किस्मत जागणी। ओ कुडी जणके राजकुमारी सुणी करी अपणी किस्मता पर ढ़ाऐ -ढ़ाऐ रौणा लगी ते फिरी अपणे बापु जो वोलदी, 'बापु जी, अवे रूणे दा कै फाजदा, जे विधीमाता लिखेया से ता होई करी रैहेणा। तुसां मिज्जों कोई बुद्ध तरकीब दस्सा कम्म कमाई करी ही मुकणा रौणे कने नी?

ष्वादशाहे अपणी कुडी दी गल गौर कने सुणी ते फिरी गलाया, वच्चा तु विहाग्गा ही अपणे तवेले जाई टोकरू भर घोडे दी लिदद रोज चुकाई ईणी। उसा रोज सारेयां का छुप्पदे-छुपान्दे लिदद चुकाणा सुरू कित्ती। करदे-करान्दे उसा वाराह साल चुकाई। अवे वादशाह जो फिरी सयाप्पा पेया जे कोढ़ी कलंकी कुते तोपणा। वचारा वादशाह फिकरे फिकरे सुकणा लगेया। सोची वचारी राज्जे अपणा बजीर सदाया ते सारी कल सुझाई। वजीर अपणी रियासत छड्डी दुई रियासता जाई लगेया तलास करणा। सारी रियासत छाणी-गाही रक्खी पण कोढ़ी कलांकी महणु कोई नी लिब्भेया। बजीर त्री रियासत जाई पुज्जेया ता तित्ते पता लग्गेया जे इते दे राज्जे जो कोढ़ है होए दा ते विर-विर करदे कीडे हिन पियोरे। बजीरे जाई करी ओ राज्जा दिक्खेया उसेरी बडी बुरी हालत थी होई गियोरी। उसेरे सुआस भी घरमन्डा थिए जाई फसोरे। वचारा ईयांही किल्लमकिल्ला कमरे थिया पेई रिहोरा।

वजीरे उसेरी हालत दिक्खी ते पिच्छले पैरे हटी आपणी रियासत पुज्जेया। बजीरे सारी गल्ल वादशाह जो सुझाई। वादशाह ने चुपचांणे अपणी कुडी बजीरा कने भेजी दित्ती। बजीर राजकुमारी जो लेईकरी उस कोढ़ी राज्जे का आई पुज्जेया। उसेरी हालत दिक्खी राजकुमारी छम छम नैणे रोणा लगी। पण कै करो बैणा पेया ते बजीर हट्टी आया। राजकुमारी बचारी लगी तसेरी सेवा करणा। राज्जे दे सराहणे वेई सरा दे कीडे तल़दी रैहन्दी। कीडेया राज्जे दे मग्गजा जो कोरी दिया खाएदा। खासे रोज होई गेए। ओ वचारी राजकुमारी किल्ली मसाणा साही बेई रैहन्दी। कोई भी उसा कने गल- कत्थ करणे वाल़ा नी थिया। मैहल भी बडे विरान्ने बिच थिया। चोनी पासे इसेरे बडी उच्ची दुआल ते लोहे दा दुआर थिया कोई भी आई नी सकदा थिया। राजकुमारी दा किल्ले दिल नी लगदा थिया ते वचारी झले़-झले़ रौन्दी अपणी किस्मता पर। दुखी होई करी उसा कुसकी हत्थे अपणे बापु (वादशाह) जो पुरूआना लिखी भेजेया, जे बापु जी तुसा कोई छोरगोली (नौकरानी) मेरे कने सोगी ते कने रोटी पकाई खुआणे तांई भेजी देया।

मेरा रुहु नी लगदा किल्ले। गल्ला- गप्पा लाणे तांई सोगी होई जाणी।. वादशाह जाणके बापूए पुरूआना पढ़ेया हाखी भरी आन्दी। बच्चे दी झल़ बुरी अम्माँ-बापु दा कल़जा त्ररूम्वी खांदी। वादशाह ने इक्क नोकराणी जो सुझाई -बुझाई तियार कित्तेया ते बजीरे दी सोगी भेजी दित्ती। बजीर नौकराणी लेई राजकुमारी का आई पुज्जेया।

राजकुमारी नौकराणी दिक्खी खुस होई। बजीर हटी अपणी रियासत ज़ो आई गेया। नौकराणी राजकुमारी जो रोटी पकाई खुआई सेबा करणा लगी। उतांई राजकुमारी दिन-रात कीडे बिणदी रैहन्दी ते कने कने गल्ला-गप्पा भी नौकराणी कने लाई मन हलका करणा लगी। पण कीडे भी मुक्कणे मत नी आन्दे। केई साल विती गे पण ओ बिर-बिर करदे कीडे मुक्कणे मत नी आण। राजकुमारी जो उस कोढ़ी राज्जे दी सेबा करदे ते कीड़े बीणदे-बीणदे बारमां साल लगी पेया। सियाणे वोलदे भी जे होणी होई करी रैहन्दी। किस्मते दा लिखोरा कोई नी मिटाई सकता। ओ भुंजी करी ही मुक्कदा। राजकुमारी जो हागाण लग्गी। उसा अपणी नौकराणी जो वोलेया, आडीए घडी़ भर तू मेरी जगाह वेई मेरे वदले कीडे बीण मैं हाग्गी औन्दी। **क्रमशः**

✍ **चंचल सरोलवी**

सजा

महीना पैहले मेरी डोहरिया ते टाहलिया री दुई पराणे डाल टुके गई रे थे। चोरा री टोल करदे करदे आखर पता लगेया जे ये काम काशी रामा रा हा। चोर तुस्सा री साहमणे हा येस जो क्या सजा देणी पंच फैसला करी लो श्याम लाले ग्लाया बोल भाई काशी डाल टुकी रे तैं येक्की स्याणे पंचे पूछेया हांजी पंचों डाल मैं ही काटी रे किच्छ

ध्याडे बाद मेरी महठिया रा बियाह हा। तेस रे बियाह मंझ येक पलंग देणा हा।

लौहकी कथा

बजारा रेट पता कितेया ता इतना जादा था जे माह साही गरीब माहनु सात जनमां तक तेस जो नी खरीदी सकदा था। श्याम लाले री डोहरिया मैं स्यों मोटे डाल देक्खी रे थे। येक राती मैं तिन्हा जो काटी के पडेसा रे मिस्त्री वाले पजाई आया पलंग ऐबे करीब तियार हा। चोरी किती री ता सजा बी मिलनी चाहिए येकी पंचे बोल्या। हाऊं सजा भुगतणे जो त्यार हा। काशी ये आपणा जुट्टा खोली के श्याम लाला री बक्खा बदाहा ई दितेया मेरा सिर परा सौ जुट्टे मार होर येक गिण भाई श्याम लाल तेरे डाला रे जे पैसे ब णा हे से बि थोड़े-थोड़े करी चुकाई दिंघा। श्याम लाले जुट्टे आपणे हाथा लेंदे बोल्या सजा ता तुज्जो मिलणी काशी तिन्ने जूटा धरती परा रक्खेया खीसे ते ग्यारहा सौ रुपए काढ़ी के काशी री तरफा बधाये तू चोर ता हा काशी पर धियां ता सभनी री सांझी हुहां ई। मेरिया तरफा ते कन्यादान रख। ऐहडी हालता च तूजो होर क्या सजा दिती जाए।

✍ **अनुवाद : रत्न चन्द निर्झर**
मूल लेखक : हरभगवान चावला

कबता

पुराणा टैम

कुथु गया सेह पुराणा टैम।
मिलदा नी हुण मरजाणा टैम।

छोटे थे ता खूब कंमादे थे।
खेली कूदी स्कूले जान्दे थे।
संज भ्यागा गप्पां मारी ने।
फोलनियां भी पांदे थे।
कियां करी सेह भुलाणा टैम।
कुथु गया सेह पुराणा टैम।

साहब छुट्टी नी दिंदा ओ ओ..।
गीत भी पुराणा रीत भी पुराणी।
हुण साहब्यो छुट्टी नी मिल्दी।
एह है अज कला दी कहाणी।
घरयो नी दिंदा हुण जाणा टैम।
कुथु गया सेह पुराणा टैम।

खेल पराणे हुण कुथी नी मिल्दे।
हसदे स्याणे हुण कुथी नी मिल्दे।
खेलदे थे न्याणे सेह धयाड़े मुकी गै।
मोबाईले कन्ने सुख सारे सूकी गै।
फोने सोहगी हुण मुकाणा टैम।
कुथु गया सेह पुराणा टैम।

✍ **राकेश 'रूखसार'**

भेडू

(गतांक से आगे)

ख़ास परौणा बणने ते साफ़ नां करी ती। अऊँ फटाफट अपणे कमरे ची चली गया। प्रो.राणा भी मेरे पीछे-पीछे आई गया कने चुटकी लेनदे बोल्या, ''यार समझ आया कुछ, येथी लोकां जो भेडू तां बनां ही हैं, पर टैम औणे पर तिनां री बलि भी देई दें।'' तिस दिन परौणयां जो गुल्टी यानि मीट खवाया गया जिसो लोकें देवते रा प्रसाद समझी ने बड़े शौकाने खाद्या हलांकि मीन्जो शाकाहारी खाणे ची भी बकरे री बास आई करां थी। ब्याह ख़त्म हुई गया तां मैं बिना वक्त गवाए प्रो. तोमर रे सामणे अपणी इच्छा रखी। से पैले हास्से, फेरी तीन्हें गंभीरता ने जबाब दीत्या, ''तुहांरा शक गलत नीं आ, पर तुहें निश्चिंत रवा, अहांरे गांवा ची एड़ा कोई नी करदा। हाँ शिलाई ते अगे रोहनाट नांवां री एक घाटी है, जीथी कुछ लोक इहा विद्या जो जाणाये।''

क्या सचमुच जींदे आदमी जो भेडू बनाई ने रस्सीया ने बन्नी सकां यें, मेरे खातर ये प्रश्न किसी अबूझ पहेलीया ते घट नीं था। शायद येही कारण था कि इक दिन हऊँ अपणयां कुछ मित्रां सौगी रोहनाट री वादियां ची पूजी गया। रोहनाट जाई ने सिरा चकी ने देखो तां, चूड़ेश्वर महादेव (चूड़धार) रे दर्शन हुई जांयें कने सामणे खा शिमला जिले रा चोपाल शहरा रा नज़ारा अपणा वांकापन दसां। ओथी लोकें घरां-घरां ची भेड़-बकरियां पाली री थी। ये देखी ने इनां माला (पशुओं) जो लेई ने मेरे मन्ना ची कई शंकाएं थी, पर थोड़ी ही देरा ची मैं देख्या सब कुछ ठीक-ठाक था। पूछणे पर पता लगया कि ओथी येड़ा कुछ नीं है, जेड़ा हऊँ सोची करां था। ये सब गल्लां हूँ तां थी पर हुण केवल मात्र इतिहास बणी ने रेही गईरी हैं। इस विद्या री जानकारी लेणे जो मीन्जो किन्नौर जिले रे चारंग गांव भी जाणे पौणा, से जे किन्नर-कैलाश महादेव रीया परिक्रमा ची है। हुण मेरीया जिंदगीया रा अगला मकसद कियां न कियां चारंग गांवां पहुंचणा था। पर ओथी पूजणा इतना सान नीं था क्योंकि ये गांव सड़का ते दूर था।

पैले तां शिमला ते लगभग बारह-तेरह घंटे रा सफर करी ने रिकांगपिओ पहुंचणा था। फेरी रिकांगपिओ ते थांगी गांव तक लगभग बीस किलोमीटर दूर बसा या फेरी कारा ने जाणे पैणा था, फेरी थांगी ते लेई ने चारंग तक बतीस किलोमीटर रा सफर पैदल ही करने पौणा था, क्योंकि रस्ते ची औणे वाले नदी-नालों रे कारण सड़क जगह-जगह ते टूटी री थी कने ओथी कोई गड़ी नीं जाई सकां थी।

खैर मेरे कुछ दमदार मित्र जिना रा मकसद किनर कैलाश महादेव री परिक्रमा करना था, तीना सौगी हऊँ कीयां न कीयां गिरते-पड़ते चारंग गांव पूजी गया। किन्नर-कैलाश परिक्रमा अपणे ची इक पूरी कहाणी है इहा जो बादा ची लिखगा। फिलहाल जैली हऊँ लोकां ने मिल्या तां पता लगया कि मेरी शंका शत-प्रतिशत सही थी। हिमाचल रे कई दूर-दराज जगहां ची हल्ली भी लोक येडा करां ये।

अज ते कुछ दशक पैले किन्नौर ची भी लोग इहा विद्या जो जाणा थे, पर तीन्हें ये विद्या नई पीढ़ीया जो नीं दस्सी, तां करी ने ये विद्या तीनां लोकां ने ही मुकी गई थी। ओथी इक्की बुजुर्गये दसया कि अज भी सोलन जिले रे मंगल गांवां कने कुल्लु जिले रे मलाणा गांवां रे लोक इहा विद्या जो जाणायें।

किन्नर-कैलाश महादेव री परिक्रमा करने रे बाद बाद हऊँ अपणे शैहर नालागढ़ वापस आई गया। इसी टैम मीन्जो पता लगया कि मेरे इक मित्रा रे पिताजी सरदार प्रीतम सिंह सोलन रे मंगल गांवां ते रिटायर हुए रे कने तीन्हें ओथी इक हेडमास्टर बणी ने तीन साल तक नौकरी कीती री। हऊँ फटाफट तिनां ने मिलणे जो तिनां रे गावां कोहलूवाल पूजी गया। तीन्हें मीन्जो दसया कि ओथा रे लोक जादू-टोना, मंत्र-तंत्र बगैरा पर विश्वास तां बड़ा करांयें, पर किसी आदमी जो भेडू बनाई लो, येडा तां तीन्हें कदी नी देखया। हुण मेरा विश्वास लगभग टूटणे लगी रा था, कने उम्मीदा री आखरी किरण कुल्लू जिले रा मलाणा गांव था, जीथा तक पहुंचणा न तां सान था कने न ही मेरे किसी भी मित्रारा रा मन तिस गांवां ची जाणे रा था। कारण, कुल्लू जिले रा मलाणा उस टैम तक इक येडा गांव था से जे पूरे विश्व ते अलग-थलग था।

तीनां री अपणी सभ्यता थी, अपणा कानून था, न्याय करने रा अपणा तरीका था होर से अपणी सभ्यता कने रवाज ची बाहरी लोकां री दखलदाजी पसंद नीं करदे थे। ओथी कठ्ठे जाणा ही ठीक था पर मेरे बंदे तां हल्ली ओथी जाणेरा मन नीं बनाई पाई रे थे।

अचानक मेरा प्रोग्राम लेह-लद्दाख, कश्मीर बाया कुल्लू-मनाली बणी गया। राती जो आहें लोक कुल्लू ही रुके। कुल्लू रे जिस होटल ची आहें रुके तिसरी बुकिंग मेरे इक प्रो. दोस्ते कीती री थी, से बड़ा भारी मिलनसार, प्यारा कने व मददगार किसमा रा आदमी था। लोकल लोक भी तिनां ने बड़ा प्यार करां थे। राती जो से भी अहां ने मिलणे जो होटला ची आई गे। गल्लां-गल्लां ची मैं तिनां ने मलाणा जाणे री गल्ल कीति कने ये भी दसी दित्या कि हऊँ ओथा जो कां चली रा। प्रो. मित्रे जोरा ने ठहाका लगाया कने हास्सी ने बोल्या, ''यार इतनीया गला जो मलाणा जाणे री क्या जरूरत है। ये विद्या तां कुल्लू रे लोक भी जाणा यें। तिजो विशवास नीं है तां अपणे आप देखी लै...... इक भेडू तां तेरे सामणे खडी रा।'' इतना बोली ने से जोरा-जोरा ने हसणे लगया, पर हऊँ कने मेरे मित्र हैरानीया ने तिनारा मुंह देखणे लगी रे थे। अहांरे रे चेहरे पर हैरानी देखी ने तिन्हें दसया," अज ते लगभग तीन दशक पैले हऊँ ऊने ते कुल्लू कॉलेज ची नौकरी करने आया था। इस शैहरा री हवा-पाणी तां वांका था ही, लोका रा व्यवहार भी इतना सीधा कने व मन-भावन था कि हऊँ येथी रा ही हुई ने रेही गया। तुहें इक गीत तां जरुर सुणी रा हुंगारू-'दिल कहे रुक जा रे रुक जा, यहीं पे कहीं जो बात इस जगह वो कहीं पर नहीं' मन्नो ये गाणा मेरे खातर ही बणी रा था।'' से कुछ देर रुके कने हस्ते हस्ते बोलणे लगे, ''बस फिर क्या...येथी प्यार हुया, इकरार हुया, ब्याह हुया, बच्चे हुये, कने येथी ही मैं घर बनाई लेया। सेऊआं रे बगीचे कुछ सौरीयें देई दीते कने कुछ मैं अपणे आप खरीदे और हऊँ सदा-सदा जो इस शैहरा रा बणी गया। इक हऊँ ही नीं, हऊँ कई लोकां रे बारे ची दसी सकां से जे येथी सिर्फ घूमणे या नौकरी करने जो आई रे थे पर पहाड़ा रे मोह-जाल ची येड़े फसे कि ब्याह करवाई ने येथा रे ही हुई गे। तुहें समझी गे कि पहाड़ आदमी जो भेडू कियां बनायें। क्या तुहां जो हुण भी मलाणा जाणे री जरूरत है किसी भेडू ने मिलणे खातर।'' सारे मित्र सौगी-सौगी जोरा-जोरा ने हसणे लगे कने अहांरे ठहाक्यां ने पूरा होटल गूंजी गया। **समाप्त**

✍ **अनुवाद : जीवन धीमान**
मूल लेखक : प्रो. रणजोध सिंह

मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना...

(पृष्ठ एक का शेष) के डॉ. यशवन्त सिंह परमार राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय नाहन के ईएनटी व मनोचिकित्सा विभाग में सहायक प्रोफेसर का एक-एक पद भरने की मंजूरी दी। इसके अतिरिक्त रोगियों की सुविधा के लिए इंदिरा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय शिमला, अटल सुपर स्पेशलिटी चिकित्सा संस्थान चमियाणा और डॉ. राधाकृष्णन राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय हमीरपुर के लिए तीन टेस्ला एमआरआई मशीनें खरीदने की अनुमति प्रदान की। अटल सुपर स्पेशलिटी चिकित्सा संस्थान चमियाणा व इंदिरा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय शिमला में आपातकालीन सेवाओं के लिए दो इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने का निर्णय भी लिया गया। मंत्रिमण्डल ने विद्युत क्षेत्र के उद्यमियों को राहत प्रदान करते हुए निःशुल्क विद्युत रॉयल्टी स्लैब को 20 प्रतिशत, 30 प्रतिशत और 40 प्रतिशत से क्रमशः 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 30 प्रतिशत करने की भी समीक्षा की।

65 करोड़ की लागत से बनेगा....

(पृष्ठ एक का शेष) अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के प्रयास कर रही है और ग्रामीण क्षेत्र में सुविधाओं का विस्तार कर रही है। प्राकृतिक खेती से उत्पन्न गेंहू को 40 रुपये तथा मक्की को 30 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर खरीदा जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भैंस के दूध को 55 प्रति लीटर तथा गाय के दूध 45 प्रति लीटर की दर से खरीद रही है। इसके अलावा कांगड़ा जिला के ढगवार में 250 करोड़ की लागत से आधुनिक दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया जा रहा है। इस संयंत्र की शुरुआती क्षमता 1. 50 लाख लीटर प्रतिदिन होगी, जिसे तीन लाख प्रतिलीटर की क्षमता तक बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी में 3.46 करोड़की लागत से नवनिर्मित स्नातकोत्तर खंड का उद्घाटन किया। उन्होंने महाविद्यालय में 3.62 करोड़ की लागत से निर्मित होने वाले कन्या छात्रावास की आधारशिला रखी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बागबानी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी के विद्यार्थियों के साथ संवाद किया।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने नादौन में मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि शिमला जिला के रामपुर क्षेत्र के निकट तकलेच में बादल फटने से सड़क, पुल और पेयजल योजनाओं को भारी नुकसान हुआ है। उन्होंने कल रात ही अधिकारियों को इस संबंध में शीघ्र ही उचित कदम उठाने के निर्देश दिए, ताकि क्षेत्र के लोगों को किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े।

आकपा में 21 लाख से निर्मित वन विश्राम गृह का लोकार्पण

राजस्व, बागवानी, जनजातीय विकास एवं जन शिकायत निवारण मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने गत दिनों किन्नौर जिला के पूह विकास खण्ड की ग्राम पंचायत आकपा में 21 लाख रुपये की लागत ने निर्मित वन विश्राम गृह का उद्घाटन किया तथा वन विभाग द्वारा आयोजित वन महोत्सव समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की तथा खादरा डाक में पौधारोपण किया और पर्यावरण संरक्षण व संवर्द्धन पर प्रकाश डाला। बागबानी मंत्री ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा की वन संपदा को बचाए रखना हम सब का दायित्व है ताकि पर्यावरण को स्वच्छ रखा जा सकें। उन्होंने लोगों से आग्रह किया की वन सम्पदा को बचाए रखने में अपनी भूमिका अदा करें व अधिक से अधिक पौधे लगाएं। मंत्री ने बताया कि वन महोत्सव, वृक्षारोपण उत्सव भारत में वनों के सांस्कृतिक और पर्यावरणीय महत्त्व पर प्रकाश डालता है, जो केवल एक वस्तु नहीं है बल्कि भारत के कई हिस्सों में इसकी पूजा की जाती है। भारत के वन क्षेत्र को बढ़ाने और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पेड़ लगाने के महत्त्व के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष वन महोत्सव मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि रिब्बा पंचायत के लिए 20 करोड़ से सीवरेज व्यवस्था का निमार्ण कार्य चल रहा है।

निर्माणाधीन अस्पताल...

(पृष्ठ एक का शेष) करें। इसके उपरान्त, ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कंडाघाट के खेल मैदान का निरीक्षण भी किया। स्थानीय लोगों ने इस मैदान को और चौड़ा करने की मांग की ताकि युवाओं को खेलकूद के लिए उचित स्थान उपलब्ध हो सके। उन्होंने संबंधित विभाग को इसका प्रस्ताव भी सरकार को भेजने को कहा। उन्होंने स्थानीय लोगों से कहा कि उनकी मांग पर सरकार गंभीरता से विचार करेगी।

प्रत्येक वर्ग....

(पृष्ठ एक का शेष) लाख प्रति वर्ष से अधिक नहीं है, इस योजना के अंतर्गत लाभ ले सकेंगे। इस योजना का लाभ उठाने के लिए स्थानीय बाल विकास परियोजना अधिकारी के पास आवेदन किया जा सकता है। श्री सुक्खू ने कहा कि कमजोर परिवारों के लिए एक उचित माहौल को बढ़ावा देना बहुत महत्त्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चों को सम्मानजनक जीवन जीने के लिए आवश्यक शिक्षा और देखभाल मिले। उन्होंने कहा कि सत्ता में आते ही वंचित वर्गों को सशक्त बनाने को प्राथमिकता दी है।

हस्तशिल्प व हथकरघा निगम के प्रयासों से कारीगर हो रहे लाभान्वित

उद्योग मंत्री श्री हर्षवर्धन चौहान ने गत दिनों हिमाचल प्रदेश राज्य हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम के निदेशक मंडल की 192वीं बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने इस अवसर पर 23.38 करोड़ रुपये की लागत की केन्द्रीय प्रायोजित योजना 'व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना' (सीएचसीडीएस) के कार्यान्वयन की समीक्षा की। आगामी तीन वर्षों तक चलने वाली इस योजना का उद्देश्य राज्य में हस्तशिल्प क्षेत्र को बढ़ावा देना है। उन्होंने वित्त वर्ष 2023-24 में निगम की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि इस अवधि के दौरान प्रदेश के 420 कारीगरों को विभिन्न पहलों के माध्यम से लाभान्वित किया गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान अब तक 107 डिजाइन और तकनीकी विकास कार्यशालाएं तथा छह उद्यमी विकास कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं, जिससे प्रदेशभर के 2500 कारीगरों को लाभ मिला है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की राज्य के कारीगरों द्वारा निर्मित किए गए उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए राज्य के भीतर विषयगत प्रदर्शनियों के आयोजन की योजना है। इसके अलावा, इस परियोजना के तहत दो नये इम्पोरिया खोले जाएंगे और छः मौजूदा इम्पोरिया का जीर्णोद्धार किया जाएगा। उद्योग मंत्री ने राज्य के कारीगरों और बुनकरों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए निगम के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने राज्य के कारीगरों के लिए निगम द्वारा शुरू की गई योजनाओं और कार्यक्रमों को प्रत्येक लाभार्थी तक पहुंचाना सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि निगम को राज्य के पारंपरिक हथकरघा और हस्तशिल्प विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। प्रबन्ध निदेशक गन्धर्व राठौर ने निगम की प्रमुख गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया और कहा कि निगम द्वारा वित्त वर्ष 2021-22 में 40.92 लाख रुपये का लाभ अर्जित किया, जबकि 1 अप्रैल, 2024 से 31 जुलाई, 2024 तक निगम ने 412. 99 लाख रुपये के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की बिक्री की। इस वर्ष शिमला और धर्मशाला में दो 'ताना-बाना' (हथकरघा) एक्सपो आयोजित किए जा रहे हैं। जहां 25 बुनकरों को अपने उत्पाद सीधे ग्राहकों को बेचने के लिए निःशुल्क स्थान उपलब्ध करवाया जाएगा।

तीन माह में 4.13 करोड़ उत्पादों की बिक्री

गरीबों को योजनाओं.....

(पृष्ठ एक का शेष) सरकार द्वारा उठाए कदमों से प्रदेश की अर्थव्यवस्था में सुधार हो रहा है। एक वर्ष में अर्थव्यवस्था बीस प्रतिशत सुधरी है। हिमाचल प्रदेश में जीएसटी कलेक्शन भी बेहतर हुआ है।" मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार को पिछली सरकार से 75 हजार करोड़ रुपये का कर्ज और 10 हजार करोड़ रुपये की बकाया देनदारियां विरासत में मिलने के बावजूद 20 माह के अपने कार्यकाल में राज्य सरकार ने कर्मचारियों को सात प्रतिशत महंगाई भत्ता प्रदान किया है और इस वर्ष 75 वर्ष से अधिक आयु के 28 हजार पेंशन भोगियों को एरियर का भुगतान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकारी कर्मचारी मेरे परिजनों के समान है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए अभी छः माह का और समय लगेगा। प्रदेश की अर्थव्यवस्था के पटरी पर आने पर एरियर और महंगाई भत्ते प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हम हिमाचल प्रदेश में लोगों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना चाहते हैं और राज्य सरकार सुशासन पर ध्यान दे रही है। डॉक्टरों और पैरा मेडिकल स्टाफ को कार्य का बेहतर माहौल प्रदान करने के लिए स्वास्थ्य संस्थानों में रिक्त पदों को भरा जा रहा है, ताकि वह आठ घंटे में शिफ्ट में काम करें और इससे मरीजों को भी लाभ होगा। राज्य सरकार ने केजुअल्टी डिपार्टमेंट का नाम बदलकर डिपार्टमेंट ऑफ इमरजेंसी सर्विसिज कर दिया है, ताकि वहां आवश्यक सुविधाएं जुटाई जा सकें। इसके अतिरिक्त जिला सिरमौर के कोटला-बड़ोग में राज्य स्तरीय आदर्श नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र स्थापित किया जाएगा। यह नशा मुक्ति केंद्र मादक पदार्थों की लत से जूझ रहे लोगों की सहायता करेगा और उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल करेगा। इससे पूर्व, बैंक के अध्यक्ष मुकेश शर्मा ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू का स्वागत करते हुए बैंक की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बैंक कम ब्याज दर पर प्रदेश के लोगों को ऋण उपलब्ध करवा रहा है। वर्तमान में बैंक की 33 शाखाएं कार्य कर रही हैं और बैंक अपने कार्य के विस्तार पर विशेष ध्यान दे रहा है। मुख्यमंत्री को बैंक प्रबन्धन ने मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए 15 लाख रुपये और मुख्यमंत्री सुख आश्रय कोष के लिए 11 लाख रुपये के चेक भी भेंट किये।

NAME CORRECTION

I Ramesh Kumar (28) S/o Bhuteshwar Chauhan R/o Vill. Talehan P.O. Shakra Teh. Karsog Distt. Mandi H.P. presently residing in Sarswati Niwas, Badash (Karyali), Pagog Road, Shimla H.P. declare that I have changed my name from Ramesh Kumar to Ramesh Chauhan. All concerned please note.

NAME CORRECTION

I Prakash Chandel (48) S/o Surat Ram R/o Vill. Barog P.O. Dhamandri Teh. Theog Distt. Shimla H.P. declare that I have changed my name from Prakash to Prakash Chandel. All concerned please note.

नाम दुरुस्ती

मैं, सुरेंद्र कुमार पुत्र स्व. गोवर्धन दास, निवासी गांव पतेहड, डाकघर नेहरी नौरंगा, तहसील अम्ब, जिला ऊना हि.प्र., घोषणा करता हूं कि मेरे स्टेट बैंक (SBI) सर्विस रिकॉर्ड में मेरा नाम भूलवश सुरेंद्र कुमार शर्मा दर्ज है, जबकि मेरा दुरुस्त नाम सुरेंद्र कुमार है। सभी नोट करें।

Himachal Pradesh Works Department
NOTICE INVITING TENDERS

Sealed percentage rates tenders are hereby invited on behalf of Governor of Himachal Pradesh for the following works from the eligible contractors enlisted in the appropriate class in HPPWD so as to reach in his office on or before on **02.09.2024 up to 11:00 A.M.** and the same shall be opened on the same day at **11:30 A.M.** in the presence of intending contractors or their authorized representatives who may wish to be present.The tender form on cash payment (non refundable) shall be issued on **31.08.2024** up to **4:00 PM**. The application for issue of tenders froms will be received on 30.08.2024 up to 4:00 PM and the same can be obtained on the scheduled date and time by producing valid enlistment copy and proof of GST/EPF/PAN otherwise the tenders form shall not be issued to them. The conditional tenders and the tenders received without earnest money and other required documents will summarily be rejected. The offer of the tender shall be kept open for **75** days:-

Sr. No. 1 **Name of Work** Restoration of rain damages Tinbar to Jaisinghpur road Km 0/00 to 18/300 (SH:-C/O 900 mm dia Hume pipe culvert at RD 7/125) **Estimated cost in Rs.** 241681.00 **EMD in Rs.** 4900.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 2 **Name of Work** Construction of Additional Accommodation of Govt. Sr. Sec. School at Tamber in Tehsil Jaisinghpur Distt. Kangra (HP) (SH:-Balance work for Civil work and WS and SI)) **Estimated cost in Rs.** 479569.00 **EMD in Rs.** 9600.00 **Time limit** Three Months **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 3 **Name of Work** Restoration of rain damages Tinbar to Jaisinghpur road Km 0/00 to 18/300 (SH:-C/O R/wall from RD 16/200 to 16/227) **Estimated cost in Rs.** 348226.00 **EMD in Rs.** 7000.00 **Time limit** Three Months **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 4 **Name of Work** Restoration of rain damages on Haler Guhan Ropa road Km 0/00 to 4/00 (SH:-C/O R/wall from RD 3/920 to 3/931) **Estimated cost in Rs.** 461910.00 **EMD in Rs.** 9300.00 **Time limit** Three Months **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 5 **Name of Work** C/O Paprola Andretta road Km 6/300 to 8/00 (SH:-C/O 1.00 mtr. Span RCC slab culvert at RD 7/385 and U-Shape drainat Rd 7/300 to 7/384) **Estimated cost in Rs.** 332755.00 **EMD in Rs.** 6700.00 **Time limit** Two month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 6 **Name of Work** Restoration of rain damages on Dharamshla dadh Holta Chadhiar sandhole road Km 0/00 to 90/00 (SH:-C/O edge wall at RD 44/800 to 44/830) **Estimated cost in Rs.** 137088.00 **EMD in Rs.** 2800.00 **Time limit** Three Months **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 7 **Name of Work** Restoration of rain Damage to Panchrukhi Lambagoan road Km 0/00 to 22/100 (SH:-C/O wire crate R/wall at RD 11/560 to 11/570) **Estimated cost in Rs.** 499219.00 **EMD in Rs.** 10000.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 8 **Name of Work** Restoration of rain Damage to Panchrukhi Lambagoan road Km 0/00 to 22/100 (SH:-C/O wire crate R/wall at RD 11/572 to 11/579.50) **Estimated cost in Rs.** 365952.00 **EMD in Rs.** 7400.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 9 **Name of Work** C/O Link road from Dhupkiara to Mahasa basti via Saral Patt Km 0/00 to 1/750 (SH:-Improvement of curve by C/O R/wall at RD 0/600 to 0/624) **(MNP) Estimated cost in Rs.** 483738.00 **EMD in Rs.** 9700.00 **Time limit** Two month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 10 **Name of Work** C/O Ropri Nahlana via Masand Basti road Km 0/00 to 3/105 (SH:- P/L CC Pavement Km 2/855 to 2/960) **Estimated cost in Rs.** 281426.00 **EMD in Rs.** 5700.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 11 **Name of Work** C/O road main road to village Gharloon Km 0/00 to 0/500 (SH:-C/O road with R/.wall Km 0/00 to 0/040) (SDP/2023/1244) **Estimated cost in Rs.** 498998.00 **EMD in Rs.** 10000.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 12 **Name of Work** Restoration of rain Damage on link road to village Galle Km 0/00 to 0/625 (SH:-C/O B/wall at RD 0/525 to 0/545) **Estimated cost in Rs.** 191890.00 **EMD in Rs.** 3900.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 13 **Name of Work** C/O link road Ropri to Harot road Km 0/00 to 7/00 (SH:-C/O R/wall at RD 1/220 to 1/236) **Estimated cost in Rs.** 462267.00 **EMD in Rs.** 9300.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 14 **Name of Work** Restoration of rain damages on link road Jaisinghpur to Vijapur Km 0/00 to 2/700 (SH:-C/O wire crate R/wall at RD 1/015 to 1/025) **Estimated cost in Rs.** 403000.00 **EMD in Rs.** 9900.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 15 **Name of Work** Restoration of rain damages to Boundary wall in the permises of Cow Sanctuary at Kangain Tehsil Jaisinghpur Distt. Kangra (HP) (SH:- Repair of damage wire fencing) **(Deposit) Estimated cost in Rs.** 471496.00 **EMD in Rs.** 9500.00 **Time limit** Two month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 16 **Name of Work** C/O Bhuana Ashapuri Road Km 0/00 to 128135 (SH:- P/L 80 mm thick paver block in 1/845 to 1/885) (SCDP) **Estimated cost in Rs.** 217314.00 **EMD in Rs.** 4400.00 **Time limit** Three Month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 17 **Name of Work** C/O Jeepable road from main road Gullana to Chuni Lal House Km 0/00 to 0/210 (SH:- Formation cutting of road at Rd 0/00 to 0/115) **(Deposit BSP/392021)(2.00 Lakh) Estimated cost in Rs.** 196390.00 **EMD in Rs.** 4000.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 18 **Name of Work** C/O Bandu Bharwana road Km 0/00 to 2/150 (SH:-C/O R/wall from Km 0/135 to 0/145) **Estimated cost in Rs.** 250570.00 **EMD in Rs.** 5100.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 19 **Name of Work** C/O Jeepable road from Dol langha to Dol kanda via Mitta Road Km 0/00 to 1/700 (SH:- C/O R/wall in wire crate at RD 1/330 to 1/345) **(Deposit BSP/2021/3) (4.00 Lakh) Estimated cost in Rs.** 395321.00 **EMD in Rs.** 8000.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 20 **Name of Work** C/O Link road from main road (Tikker Sakoh Jean road) to Shiv Mandir Km 0/00 to 0/400) (SH:-C/O B/wall at RD 0/00 to 0/020 and R/wall at RD 0/075 to 0/091) **Estimated cost in Rs.** 492592.00 **EMD in Rs.** 9900.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 21 **Name of Work** Restoration of rain damages on various roads under balakrupi Sub Division (SH:-Hiring of JCB/Excavator for removal of slips and boulder of various roads Under Balakrupi & Alampur Section) **Estimated cost in Rs.** 346500.00 **EMD in Rs.** 7000.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 22 **Name of Work** C/O Jeepable road Harsi Noula Dukhi Km 0/00 to 1/500 (SH:- C/O CC Pavement at RD 0/785 to 0/855) **Estimated cost in Rs.** 235184.00 **EMD in Rs.** 4800.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 23 **Name of Work** Restoration of rain damages on Draman Amb Nee Malli road Km 0/00 to 8/500 (SH:- C/O R/wall at RD 1/084 to 1/124) **Estimated cost in Rs.** 402410.00 **EMD in Rs.** 8500.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 24 **Name of Work** Completion of Community Centre(Bhagwat Bhawan ward No-3 VKV/2024/32 (SH:-P/L Kota stone flooring, cement plaster, door windows Shutter and Painting workin G.F.) **(Deposit) Estimated cost in Rs.** 468294.00 **EMD in Rs.** 9400.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 25 **Name of Work** C/O Kala Manch at Jaisinghpur Chogaan Maidaan **SDP/2023/1331**(SH:- C/O Stage etc.) **Estimated cost in Rs.** 498300.00 **EMD in Rs.** 10000.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 26 **Name of Work** Restoration of rain damages to Haroti Pul to Jalet Bhati Via Nallian road Km 0/00 to2/985 (SH:- C/O R/wall at RD 1/010 to 1/020) **Estimated cost in Rs.** 452073.00 **EMD in Rs.** 9100.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 27 **Name of Work** Restoration of rain damages on Jangal to Oach Kallan road Km 0/00 to 11/00 (SH:- C/O R/wall at RD 4/330 to 4/353) **Estimated cost in Rs.** 369843.00 **EMD in Rs.** 7400.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 28 **Name of Work** C/O Kala Manch at Jaisinghpur Chogaan Maidaan **SDP/2023/1331**(SH:- C/O Kala Manch/Stage) **Estimated cost in Rs.** 499500.00 **EMD in Rs.** 10000.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/

Sr. No. 29 **Name of Work** C/O Pully in village Tunder (Ghugrad) **SDP/2023/1252**(SH:- C/O Pully) **Estimated cost in Rs.** 238500.00 **EMD in Rs.** 4800.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Sr. No. 30 **Name of Work** C/O link road from Kohala to Lower Ganguhi KM 0/0 to 1/200 (SH: F/C work of road between Km 0/0 to 1/200) (MNP) **Estimated cost in Rs.** 480375.00 **EMD in Rs.** 9700.00 **Time limit** Three month **Cost of Tender form in Rs.** 350/-

Terms & Conditions:-

1. The contractor/firm should have valid GST/EPF/PAN.
2. The intending contractor / firm have to produce the copy of latest enlistment and renewal enlisted in HPPWD.
3. If any of the date mentioned above happened to be Gazetted Holidays the same shall be processed on next working day.
4. The Executive Engineer reserves the right to accept/reject any tender/application or all tenders without assigning any reason.

1682/2024-25 Him Suchna Avam Jan Sampark

एक्सपोजर विजिट पर अध्यापकों के साथ विद्यार्थी भी जाएंगे विदेश : ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों जिला सोलन के एक दिवसीय दौरे के दौरान राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोठी देवरा घट्टी स्कूल के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोठी देवरा घट्टी स्कूल में कॉमर्स की कक्षाएं शुरू करने की घोषणा की और कहा कि कबड्डी खिलाड़ियों को किट प्रदान की जाएंगी। उन्होंने कहा कि जिन शिक्षण संस्थानों के भवनों का निर्माण कार्य 60 प्रतिशत पूरा हो चुका है, उन्हें पूर्ण करने के लिए राज्य सरकार आवश्यक धनराशि उपलब्ध करवाएगी ताकि दो वर्षों के भीतर ही ये बनकर तैयार हो जाए।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू जिला सोलन के रा.व.मा.वि. कोठी-देवरा-घट्टी स्कूल के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं के लिए सरकार ने डाइट मनी को 240 से बढ़ाकर 400, जिला स्तर के लिए 300 और खंड स्तर के लिए 240 किया है। राज्य से बाहर खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को दी जाने वाली डाइट मनी को 500 किया गया है। इसके साथ ही राज्य सरकार ने प्रदेश से बाहर आयोजित होने वाले खेल आयोजनों में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को मिलने वाली यात्रा सुविधाओं में भी बढ़ोतरी की है। उन्होंने कहा कि 14 वर्ष की आयु वर्ग में भी जिला और राज्य स्तर पर टूर्नामेंट का आयोजन किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी स्कूलों में गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार पिछले 20 महीने से कार्य कर रही है, ताकि युवा पीढ़ी का भविष्य बेहतर बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश गुणात्मक शिक्षा रैंकिंग में खिसककर 18वें स्थान पर पहुंच गया है, इसलिए वर्तमान सरकार शिक्षा में व्यापक व्यवस्था परिवर्तन कर रही है। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी दूर करने के लिए राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्रों में चरणबद्ध तरीके से राजीव गांधी डे-बोर्डिंग स्कूल खोलने जा रही है, जिनमें स्मार्ट क्लास रूम, ऑडियो-वीडियो विजुअल टीचिंग और खेल जैसी सुविधाएं होंगी। इसके साथ ही स्कूलों को स्मार्ट यूनिफॉर्म अपनी मर्जी से चुनने का विकल्प दिया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 99 प्राथमिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या शून्य थी, जिन्हें राज्य सरकार ने बंद कर दिया है, जबकि पांच से कम विद्यार्थियों की संख्या वाले स्कूलों को मर्ज किया जा रहा है तथा शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यकता के आधार पर भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध करवाई जा सके। उन्होंने कहा कि कड़े फैसलों से थोड़ी नाराजगी जरूर हो सकती है, लेकिन आने वाले समय में सुखद परिणाम सामने आएंगे।

- **गुणात्मक शिक्षा के लिए आरम्भ होंगे भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रम**
- **प्रदेश में पहली बार दो सौ अध्यापकों को एक्सपोजर विजिट पर भेजा गया सिंगापुर**

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा, "मैं स्वयं सरकारी स्कूल में पढ़ा हूं। स्कूल में हम मैट पर बैठते थे और कभी-कभी अध्यापकों से डांट भी पड़ती थी। मैं कहना चाहता हूं कि घर के बाद बच्चे के विकास में स्कूल का महत्त्वपूर्ण योगदान है, लेकिन हमें सोचना होगा कि सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या कम क्यों हो रही है। मेरा गुणात्मक शिक्षा और बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान है और इसी दिशा में प्रदेश सरकार द्वारा कदम उठाए जा रहे हैं।"

उन्होंने कहा कि गुणात्मक शिक्षा पर राज्य सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिया जा रहा है तथा पहली बार 200 अध्यापकों को सिंगापुर में एक्सपोजर विजिट पर भेजा गया है। उन्होंने कहा कि अगले वर्ष से राज्य सरकार अध्यापकों के साथ विद्यार्थियों को भी एक्सपोजर विजिट पर विदेश भेजेगी।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने जनसमस्याएं भी सुनी।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल ने कहा कि दस वर्षों बाद कोठी देवरा घट्टी में स्कूल का निर्माण हुआ है, जिसके लिए उन्होंने क्षेत्रवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने वंचित वर्ग के उत्थान के लिए अनेक प्रभावी कदम उठाए हैं और प्रदेश के 6000 अनाथ बच्चों को चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट के रूप में अपनाया है।

कैथलीघाट-शिमला बाइपास में होगा दस सुरंगों का निर्माण - राज्यपाल

सुरंग निर्माण में कटने से बचेंगे 22,500 पेड़

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने गत दिनों सोलन जिला के कैथलीघाट के नजदीक शिमला बाइपास सुरंग-एक (पोर्टल-2) शुंगल का दौरा किया। उन्होंने प्रगति कार्य का निरीक्षण किया और परियोजना के बारे में विस्तार से जानकारी ली। 28.5 किमी लंबे फोरलेन शिमला बाइपास (पैकेज-1 व 2) पर 10.6 किमी लंबी 10 सुरंगों का निर्माण किया जाना है और इसमें 27 बड़े पुल और वायाडक्ट भी होंगे। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि उन्होंने बाईपास की टनल एक की बाईं ट्यूब का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के पूरा होने से कैथलीघाट से ढली की दूरी लगभग 15 किलोमीटर कम हो जाएगी तथा यात्रा में लगभग एक घंटे का समय बचेगा। उन्होंने कहा कि इस सुरंग के निर्माण से भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) ने लगभग 5,000 पेड़ों को कटने से बचाया है तथा मिट्टी के कटाव को भी रोका है।

उन्होंने कहा कि यह सुरंग पहाड़ी क्षेत्र में सुरक्षित तथा सुगम यात्रा का अनुभव प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि इससे वाहनों के ईंधन की बचत होगी, जिससे वायु प्रदूषण तथा कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आएगी। वहीं, 10 सुरंगों के निर्माण से लगभग 22,500 पेड़ों को कटने से बचाया जाएगा। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के क्षेत्रीय अधिकारी अब्दुल बासित ने राज्यपाल को अवगत करवाया कि दोनों चरणों में सुरंग की कुल लंबाई 1,410 मीटर होगी और जनवरी 2025 तक इसका निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा। इस कार्य पर 90 करोड़ रुपये खर्च होंगे। उन्होंने अवगत करवाया कि शिमला बाइपास फोरलेन परियोजना की कैथलीघाट से ढली तक कुल लागत 4,800 करोड़ रुपये है और इस परियोजना को मार्च 2027 तक पूरा कर लिया जाएगा।

23.20 करोड़ की आठ विकासात्मक परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों सोलन जिला के एक दिवसीय दौरे के दौरान 23.20 करोड़ रुपये की लागत की आठ विकासात्मक परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास किये।

मुख्यमंत्री ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोठी देवड़ा (घट्टी) के नवनिर्मित भवन के लिए 3.19 करोड़, एससीईआरटी सोलन के प्रशासनिक खण्ड भवन के लिए 3.30 करोड़ तथा जोगिन्द्रा केन्द्रीय सहकारी बैंक सोलन के 7.51 करोड़ की लागत से नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया। उन्होंने सोलन में हिमाचल प्रदेश पुलिस कल्याण संघ के पेट्रोल पंप का भी लोकार्पण किया।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने सोलन जिला के साधुपुल क्षेत्र में ग्रामीण आवासीय भूस्खलन शमन एवं बाढ़ प्रबन्धन के लिए 75 लाख तथा शामती में तीन करोड़ की लागत से भूस्खलन शमन एवं बाढ़ प्रबन्धन, नगर निगम सोलन में अग्निशमन विभाग भवन के समीप 2.67 करोड़ की लागत से पार्किंग तथा नगर निगम सोलन के अंतर्गत ठोडो मैदान के समीप 2.80 करोड़ की लागत से पार्किंग की आधारशिला रखी।

उन्होंने जोगिन्द्रा केन्द्रीय सहकारी बैंक सोलन का नया प्रतीक चिन्ह (लोगो) भी लॉन्च किया।

आपराधिक मामले सुलझाने में फॉरेंसिक की भूमिका महत्त्वपूर्ण

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों हिमाचल प्रदेश फॉरेंसिक साइंस विकास बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता करते हुए अपराध अन्वेषण रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया की समयावधि को कम करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आपराधिक मामलों को सुलझाने एवं अपराधियों को पकड़ने में फॉरेंसिक विभाग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा प्रदेश सरकार विभाग के आधुनिकीकरण के लिए हर सम्भव सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने न्यायालयों में अपराधियों को सजा दिलवाने की दर में सुधार लाने के लिए आपराधिक रिपोर्टों की गुणवत्ता को बेहतर करने पर बल दिया।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि अपराधी को कानून के तहत सजा दिलवाने के लिए आपराधिक मामलों के प्रभावी प्रबन्धन की आवश्यकता है, जिसके लिए अपराध स्थल की जांच कर सही तरीके से नमूने एकत्रित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अपराध स्थल से जो नमूने एकत्रित किए जाते हैं, उनकी विश्वसनीयता एवं सटीकता बनाए रखने के लिए विभाग को बार कोडिंग प्रणाली विकसित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अपराधों की सही तरीके से जांच के लिए प्रदेश सरकार चार फॉरेंसिक वाहन प्रदान करेगी। विभाग में विभिन्न रिक्त पदों को भरा जाएगा तथा अधोसंरचना को भी मौजूदा समय के अनुसार विकसित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विभाग की बेहतर कार्य प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए फोरेंसिक बिहेवियरल एनलेसिज यूनिट, फूड फोरेंसिक यूनिट सहित अन्य नए यूनिट स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने फोरेंसिक विभाग में कर्मचारियों के युक्तिकरण पर बल दिया और कहा कि राज्य सरकार हमीरपुर, ऊना, सिरमौर, कुल्लू, किन्नौर एवं लाहौल-स्पीति जिलों में जिला फोरेंसिक यूनिट स्थापित करेगी। उन्होंने कहा कि विभाग की कार्यप्रणाली को आधुनिक किया जाएगा, जिसके लिए नवीन तकनीक का उपयोग सुनिश्चित किया जाएगा।

अनुसंधान के माध्यम से आलू उत्पादन संबंधित समस्याओं का पता लगाएं वैज्ञानिक

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दृष्टिगत किसानों को आय के अतिरिक्त साधन उपलब्ध करवाए जाने चाहिए। उन्होंने राज्य में आलू आधारित उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। राज्यपाल गत दिनों केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (सीपीआरआई) शिमला के 76वें स्थापना दिवस पर मुख्यातिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने संस्थान को स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि लोगों को पोषणयुक्त खाद्य सामग्री सुनिश्चित करने के लिए फसलों का विविधिकरण किया जाना चाहिए।

वैश्विक आलू उत्पादन में 15 प्रतिशत योगदान भारत का

उन्होंने कहा कि आलू देश की प्रमुख फसल है, जिसका कुल सब्जी उत्पादन में 28 प्रतिशत योगदान है। उन्होंने कहा कि विश्व में चीन के बाद भारत का आलू उत्पादन में दूसरा स्थान है। वैश्विक आलू उत्पादन का लगभग 15 प्रतिशत उत्पादन भारत में किया जाता है। वर्ष 2022-23 के दौरान भारत ने आलू के निर्यात मूल्य में 20 अरब रुपये से अधिक की रिकॉर्ड बढ़ोतरी दर्ज की थी। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के लगभग 14000 हेक्टेयर क्षेत्र में आलू की खेती की जाती है, जिसमें लगभग दो लाख टन आलू का उत्पादन किया जाता है।

उन्होंने संस्थान को कुफरी हिमालिनी, कुफरी गिरधारी और कुफरी करण जैसी तुषार (ब्लाइट) प्रतिरोधी आलू की किस्में विकसित करने के लिए बधाई दी।

श्री शुक्ल ने कहा कि संस्थान द्वारा किए गए शोध कार्य और आधुनिक तकनीकों को अपनाने के कारण भारत विश्व में आलू के प्रमुख उत्पादक के रूप में पहचाना जाता है। पिछले सात दशकों में आलू उत्पादन तथा आलू उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

उन्होंने संस्थान को आलू की 70 से अधिक किस्में विकसित करने और वायरसमुक्त बीज आलू के उत्पादन के लिए एरोपोनिक तकनीक विकसित करने के लिए बधाई दी।

उन्होंने आलू उत्पादन के प्रति किसानों की घटती रूचि के प्रति चिंता व्यक्त की तथा वैज्ञानिकों से अनुसंधान के माध्यम से इससे संबंधित विभिन्न समस्याओं का पता लगाने का आग्रह किया। उन्होंने संस्थान को 25 से अधिक पेटेंट करने के लिए भी बधाई दी। इस अवसर पर राज्यपाल ने आईसीएआर-सीपीआरआई शिमला के कर्मियों को इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया।

उन्होंने संस्थान के कर्मचारियों को उत्तर भारत खेलकूद प्रतियोगिता पुरस्कार और किसानों को कृषि उपकरण भी वितरित किए।

पंचायतें भी जुड़ें नशा मुक्ति अभियान से

राज्यपाल हिमाचल प्रदेश शिव प्रताप शुक्ल गत दिनों एक दिवसीय प्रवास पर जिला शिमला के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल नारकण्डा पहुंचे। राज्यपाल ने उपमंडल प्रशासन के अधिकारियों को नशा मुक्ति अभियान पर गंभीरता से कार्य करने के निर्देश दिये और इस अभियान में प्रशासन के साथ पंचायती राज संस्थाओं को जोड़ने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि नशा आज ग्रामीण क्षेत्रों के दूरदराज इलाकों तक पहुंच चुका है इसलिए इस अभियान को पंचायत स्तर तक लेकर जाना होगा। उन्होंने गत दिनों रामपुर के समीप समेज में हुई प्राकृतिक आपदा के संबंध में उपमंडल प्रशासन के अधिकारियों से प्रभावित क्षेत्र में चल रहे सर्च ऑपरेशन की जानकारी भी ली।

उपमंडल दण्डाधिकारी कुमारसैन के.के. शर्मा ने उनका स्वागत किया और उन्हें हाटू माता मंदिर का स्मृतिचिन्ह भेंट किया।

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः राजीव कुमार, एच.ए.एस., निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः प्रभा राजीव, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381—PBX.A29,, वरिष्ठ सम्पादक : डॉ. राजेश शर्मा, सम्पादकः रीना नेगी
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)